29

~~Shaarda Kumar Shukla~~

पञ्चतन्त्रप्रदीप

॥ श्रीः ॥

प्रश्नज्ञानप्रदीपः ।

(केरलीयप्रश्नशास्त्रम् ।)

श्रीमत्पँवारवंशावतंससुठालियाधीशमहाराज

शंभुसिंहविरचित-

भाषाटीकासमेतः ।

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

कल्याण--बंबई.

संवत् २०११, शके १८७६.

1954

मुद्रक और प्रकाशक-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस, कल्याण-बम्बई.

श्रीः ।

प्रश्नज्ञानप्रदीपस्थविषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्तः ।



प्रस्तावना.

अचिंत्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥

सच्चिदानंद सर्वशक्तिमान् नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव अद्वितीय अनुपम, जगदाधार, अज, निराकार, न्यायकारी, सनातन, सर्वमंगलमय, परमसहायक, सर्वानंदप्रद, सकलदुःखविनाशक. अविद्यान्धकारनिर्मूलक, अधमोद्धारक, पतितपावन, विश्वविनोदक, निरंजन, निर्विकार, मोक्षप्रद, निरामय, निरीह, दीनदयाल, अनंतकोटिब्रह्मांडाधीश, जगदीशको कोटिशः धन्यवाद है जिसने इस सृष्टिको उत्पन्न किया और प्रत्येक जीवधारीके सौख्यार्थ सम्पूर्ण वस्तु उत्पन्न कीं ऐसा कोईभी विषय नहीं है जिसके जाननेके लिये ईश्वरने कोई न कोई युक्ति पैदा न की हो, जो युक्ति विद्वानोंके ध्यानमें आगई उन्हींका प्राकट्य होगया और जो विषय उन्हाके विचारमें न आया वह गुप्त रहा, जैसे रोगसे निवृत्त होनेके लिये उस परमात्माने औषधि सृजीं और प्राचीन ऋषियोंने उन औषधियोंसे अनुभव लेकर वैद्यक ग्रंथ रचे इसीतरह भूत, भविष्य, वर्तमान जाननेके लिये उसने ज्योतिषशास्त्रका उत्पादन किया जिसको पुराने महर्षियोंने प्रकरणबद्ध रचकर प्रकाशित किया आज कल ज्योतिषविद्या लुप्तप्राय होरही है और जो कुछ भाग्यवश शेष रह गई है उसके माननेमें बहुधा लोग वितंडावाद करते हैं और जो शंकाएँ उन्हींकी ओरसे प्रायः उपस्थित होती हैं उन्होंका समाधान प्रश्नोत्तरकी रीतिसे नीचे लिखा जाता है-

प्रश्न–ज्योतिषका क्या अर्थ है और किसे कहते हैं ?

उत्तर–ज्योतिषका अर्थ प्रकाश है जिसमें प्रकाशमान पदार्थोंका वर्णन हो अथवा जैसे प्रकाशसे अन्धकारस्थपदाथ स्पष्ट हो जाते हैं इसी तरह इस ज्योतिष विद्यारूपी प्रकाशसे समस्त भूत भावी वर्तमान फल प्रगट होजाते हैं इसीसे इसका नाम ज्योतिष विद्या है ।

प्रश्न-यह विद्या ब्राह्मणोंने ठगनेके लिये बनाई है ग्रहोंसे हमसे क्या संबंध है जो सुख दुःख पहुँचावें ग्रह जडपदार्थ हैं सिवाय प्रकाशके और कुछ सुख दुःख नहीं पहुँचाते सुख दुःख अपने कर्माधीन हैं ?

उत्तर-यह विद्या ब्राह्मणोंने बनाई है यह कहना आपका बिलकुल असंगत है क्योंकि बनानाशब्दका अर्थ किसी वस्तुको निर्माण करनेका है सो यह विद्या किसीने निर्माण नहीं की बरन्‌ जबसे यह सृष्टि उत्पन्न हुई है तबहींसे संपूर्ण जीवधारियोंके साथ ग्रहोंका निरंतर संबंध होगयाहै. जैसे-पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश सब पदार्थोंमें व्याप्त हैं इसीतरह ये ग्रह संपूर्ण विश्वको आक्रमणकर रहे हैं,ब्राह्मण जैसे अब निर्धन हैं पहिले नहीं थे यह भारतवर्ष प्राचीन समयमें स्वर्णभूमि था द्रव्यकी किसीको इतनी आवश्यकता नहीं थी जो ठगनेके लिये नयी विद्या रचते और जो आपने फर्माया कि, ग्रह जडपदार्थ हैं उनसे हमसे क्या संबंध है वे प्रकाश अतिरिक्त सुख दुःख कुछ नहीं देसकते सो संबंध क्या आपका सारा कामही उन्होंसे चल रहा है संपूर्ण नवग्रहोंकी कौन कहे अकेला सूर्यकाही प्रताप देख लीजिये कि, जो जगत्प्रकाशक होरहा है, इसीके उदयसे आप सर्वकार्योंमें प्रवृत्त होते हैं मनुष्योंके शरीरमें जो उष्णता है वह सूर्यकीही है इस संसारके जितने कारखाने, रेल, तार, डांक, अस्पताल, कचहरी, पुलिस, म्यूनिसिपलेटी, मदरसा, कृषि, वाणिज्य, लेन देन, सब सूर्यकेही आधारसे हैं और जडपदार्थ जो आपने ग्रहोंको बताए इसमें क्या प्रमाण है ? खैर जडही मानो तोभी क्या दोष है जडपदार्थ तो ऐसा सुख दुःख पहुँचा सकते हैं जिसका प्रमाण नहीं । देख लीजिये अग्नि जड होती है दुःख पहुँचानेके लिये काफी चैतन्यसे न हो वह अग्नि करसकती है इसी तरह जल, वायु, रेल, तार, पाषाण, शस्त्र, बंदूक, तलवार ये जडही हैं परंतु सुख दुःख इनसे मनुष्योंको भली-भांति पहुँच सकता है दुःख क्या बल्कि मनुष्यका प्राणतक ये

इरलेते हैं और सुख दुःख आपने कर्माधीन कहा सो ठीक है परंतु ग्रह उसके सूचक हैं जैसे किसीने किसीको मारडाला और राजासे यह हुक्म हुआ कि इसको २० रोज बाद फाँसी दी जावे यह समाचार उसको किसी राजकर्मचारी द्वारा मिलजावे तो वह समाचारदाता सूचक हुआ कोई फाँसी देनेवाला नहीं हुआ क्योंकि, फाँसी तो उसको अपने कर्म्मोंसे मिली है किसीको यात्रासमय नकुलदर्शन हुआ और उसको आगे चलकर ५० की थैली मिलगई तो यह थैली कोई नकुल सौंपने नहीं आया वरन् उसने द्रव्य प्राप्तिकी सूचना करी वा अंधकारमें कोई चीज रक्खी है और दीपक लेजानेसे वह पदार्थ स्पष्ट दीख जाता है तो इससे दीपक उस पदार्थका धरनेवाला नहीं उसका सूचक है इसीतरह फल कर्म्माधीन होता है परंतु उसके बतलानेवाले ग्रह हैं पूर्वकर्मार्जित फल अदृश्य हैं उसको दृश्य करनेवाले ये ग्रह हैं ॥

प्रश्न-ग्रहोंके संबंधका प्रत्यक्ष प्रमाण बताइये ? क्योंकि ग्रह यहांसे बहुत दूर हैं इतने दूरस्थ ग्रहोंसे वह फल क्योंकर होगा इसमें कोई युक्ति हो तो बयान कीजिये ?

उत्तर-" कारणाभावे कार्य्याभावः " कारण विना कार्य्य नहीं होसकता परंतु सबही कारण सबके समझमें आते नहीं और कारणके प्रगट होनेसे प्रत्यक्ष कार्य्य मिथ्या नहीं होसकता जैसे हलदी पीली होती है और चूना सफेद होता है इन दोनोंके मिलानेसे मिश्रितरंग लाल होता है जो प्रत्यक्ष है यद्यपि इसका कारण हमको प्रगट नहीं है तोभी उस कारणके मालूम न होनेसे लालरंग मिथ्या नहीं हो सकता इसी तरह ज्योतिषका फल प्रत्यक्ष होजाय तो फिर कारण अज्ञात होनेसे मिथ्या नहीं होसकता जैसे वैद्यकके ग्रंथकारोंने बारंबार यह परीक्षा करली है कि,अमुक रोग अमुक दवाईसे दूर होता है तब उन्होंने ग्रंथमें उस रोगका नाशक वह औषध लिखा है जैसे-कोने-नसे बुखार जाता है यह डाक्टरोंने परीक्षासे अनुभव करके उसको

ज्वरघ्न औषधि लिखी है । यदि किसी रोगीको कोनेन देनेसे ज्वर नहीं गया तो इससे डाक्टरीमत मिथ्या नहीं होसकता क्योंकि, उस रोगके नाश न होनेका कारण यही है कि, उस औषधिकी कृति अच्छी नहीं बनी होगी या डाक्टरकी परीक्षामें फर्क होगा । इसी तरह फलित शास्त्रके आचारियोंने बारंबार परीक्षा करके वह फल निर्णीत किया है वह किसी समय नहीं मिले तो शास्त्र मिथ्या नहीं होसकता-वरन् ज्योतिषीकाही विचार दोष कहा जासकता है और ग्रहोंका असर सूक्ष्म प्रकारसे होता है वह मनुष्यके विचारमें नहीं आसकता प्रत्युत स्थूल प्रभाव उन्हींका समझमें आसकता है यह स्पष्ट है कि, शीत, उष्ण, वृष्टि, अनावृष्टि ये संपूर्णग्रहजन्य हैं केवल शिशिर, वसंत, ग्रीष्मही इसके साक्षीभूत नहीं है वरन् इसकी सत्यता हमारी प्रकृतिसेही सिद्ध हो सकती है क्योंकि जब ऋतु मेघाच्छन्न तथा तीक्ष्ण होती है तो हमारा शरीरभी निरुत्साह व शिथिल हो जाता है और जब ऋतु उज्ज्वल कांतिमान् होती है तो हमारा चित्तभी सानंद होता है जब सूर्य आर्द्रानक्षत्रपर आते हैं तब श्वानोंको बहुधा जलभय रोग होता है क्योंकि आर्द्राको योनि श्वान ज्योतिषशास्त्रमें लिखी है अंग्रेजीमें इसे dog star कहते हैं इसीका नाम dog-star इसीलिये है कि जब इसपर सूर्य आते हैं तो कुत्तोंपर असर होता है जब रवि वृषपर आते हैं तब मनुष्योंकी प्रकृतियोंमें उष्णता बढ जाती है और प्रायः इस ऋतुमें महामारीका कोप होता है जब रवि कन्याराशिपर आते हैं तब विषमज्वर फैलता है इसे अंग्रेज लोग malaria मेलेरिया कहते हैं । मनुष्योंका सुख दुःख बीमारी तन्दुरुस्ती ऋतुके आधारसे है और ऋतुकर्त्ता ग्रह हैं तो सिद्ध होगया कि, मनुष्यके जीवनके हर्त्ता कर्त्ता ग्रहही हैं. जो लोग सूर्यके समीप उष्ण कटिबंधमें निवास करते हैं वे प्रायः काले होते हैं युरोप देश पृथ्वीके वायव्य कोणमें है और मंगलकी राशि मेषके बहुत समीप है अतएव भौमकी राशिके

प्रभावसे वहाँवाले रक्तमुखके और महानुभावी होते हैं इतना वर्णन सूर्यके प्रभावका हुआ। अब चंद्रमाका प्रभाव सुनिये-पूर्णिमाके दिन समुद्रकी लहरें इतनी ऊंची उठती हैं कि, जिसका सुमार नहीं इसको ज्वार भाटा कहते हैं यह बात अँग्रेज महाशयोंने भी स्वीकार की है कि, लहरका कारण चंद्रमा है यह चंद्रमाका क्या स्वल्प प्रभाव है अपने शास्त्रोंमें इसी लिये चंद्रमाका नाम उदधिसुत लिखा है जैसे पुत्रको देखकर पिताका उत्साह बढता है इसी तरह चंद्रको परिपूर्ण देखके समुद्र उमँगता है। मार्जारके नेत्रकी पुतली चंद्रके ह्रासवृद्धिके अनुकूल कम बढ होती रहती है। शुक्ल पक्षमें यदि मटर बोई जावे तो वह सदा विकसित (सरसब्ज) रहती है अनारका बीज जिस तिथिको बोया जावेगा वह ऊगनेपर उतनेही वर्षतक ठहरेगा जितनी संख्या तिथिकी बोनेके समय थी जो बीज चन्द्रमाकी वृद्धिमें बोया जावेगा उसके फल फूलकी सदा वृद्धि रहेगी। नहीं मानो तो अनुभव कर देखो-कुमोदिनी रात्रिकोही फूलती है सूर्य्यमुखी जिधर सूर्य हो उधरही अपना मुख रखती है। पाटलका पुष्प सूर्यके अस्त होतेही मुरझा जाता है। अर्कवृक्ष ज्येष्ठमें प्रफुल्लित रहता है और वर्षाऋतुमें सूख जाता है, यह बातभी लोक प्रसिद्ध है कि, मधुमक्खी शुक्लपक्षमें सब पुष्पोंसे रसका संचय करती है और कृष्णपक्षमें उस संचित रसको पान करजाती है. इसका कारण यही विदित होता है कि, शुक्लपक्षमें चंद्रकी वृद्धि होनेसे पुष्पोंमें प्रकृतिसे ही रस पूर्ण रहता होगा इससे मधुमक्खी उसका आकर्षण करती है और कृष्णपक्षमें चंद्रमा क्षीण होनेसे पुष्प रहित हो जाते हैं इसीलिये मधुमक्खी इस पक्षमें रस संचय न करके उक्त रसका पान करजाती है आशय यह है कि, जैसे सूर्य चंद्रका प्रभाव पदार्थोंपर होता है इसी तरह शेष ग्रहोंकाभी होता है यह स्थालीपुलकन्यायसे सिद्ध है। मनुष्यका शरीर देखकर सम्पूर्ण जन्मग्रह, जन्मलग्न, मास, तिथि, वार कहे जासकते हैं यह कितना बडा प्रमाण ग्रहोंकी सिद्धिका है कि, उन

ग्रहोंसे वह शरीर बना है तबही शरीर देखकर जन्मग्रह जो अदृश्य कहेगये हैं यह स्पष्ट हैं और कई विद्वान् हस्तरेखा देखकर जन्म, संवत्, मास, तिथि, वार, इष्टघटी, पल मालूम करके तत्काल जन्म-कुंडली बना देते हैं. गवालियरमें बच्चाशास्त्रीको सरकार जीवाजीराव-शिंदे बहादुरने रक्खे थे यह महाशय तत्काल हस्तरेखा देखकर जन्म ग्रह कह दिया करते थे यह बात प्रसिद्ध है और शरीर देखकर जन्म ग्रह तो सिरोजनिवासी गंगाप्रसाद मिश्र बता सकते हैं और मुझेभी इसका कुछ अभ्यास है, नहीं मानो तो परीक्षा कर देखो। अब यह बात सिद्ध होगई कि, शरीर ग्रहोंसे बना है जबहीं शरीर देखकर जन्मसमयके ग्रहोंकी स्थिती मालूम हुई क्योंकि उन्हीं ग्रहोंसे शरीरकी ऐसी आकृति हुई थी और जो आपने ग्रह बहुत दूर होनेका कहा सो दूर हैं तबही सारे जगतमें इनका प्रकाश हो रहा है जो समीप होते तो एकही स्थानसे नजर आते, इसीलिये परमेश्वरने ग्रहोंको प्रकृतिसेही उसी प्रमाणकी दूरीपर रक्खे हैं जितनी आवश्यक थी और इतने दूरस्थ होकरभी ग्रहोंका सारे विश्वमें प्रकाश है। यह कितने बडे सामर्थ्यकी बात है कुल बारह राशि और नव ग्रह हैं परंतु उनकी स्थितिके असंख्यात भेद हैं जो ग्रहोंकी स्थिति एक कालमें है वह न कभी पूर्व हुई थी न अब होगी। इसीकारण जिस रूप, रंग, स्वभाव, वय, भाग्यका एक पुरुष है उसके तुल्य दूसरा न हुआ न होगा क्योंकि ग्रहजनित मनुष्योंके शरीर हैं जब ग्रहोंकी स्थिति जो आज है वह न कभी पूर्व थी न अब होगी तो फिर मनुष्यका शरीर कैसे एक दूसरेसे मिल सकता है? अत एव यहभी ग्रहोंकी सत्यताका एक प्रमाण है ॥

प्रश्न—आपने जडपदार्थोंका उदाहरण दिया सो ठीक नहीं. क्योंकि, जडपदार्थ स्वयं कुछ नहीं करसकते ये सामर्थ्य चैतन्यको है?

उत्तर—इसमें जड चैतन्यका कुछ हिसाब नहीं है जितनी सामर्थ्य जिसमें ईश्वरने रखदी है उसमें उतनीही शक्ति होती है जो आपने

कहा कि जड स्वयं कुछ करसकते सो ठीक नहीं देखिये बिजली स्वयंही आसमानसे गिरकर मनुष्यका प्राण ले लेती हैं और मकान स्वयंही गिर कर जीवधारीको मा सकते हैं और वृक्ष चैतन्य हैं सो कहीं चल फिर नहीं सकते और पृथ्वी इत्यादि जड हैं परन्तु चलते हैं चुम्बक जड है परंतु आकर्षण शक्ति उसमें इतनी है कि, जो चैतन्यमें नहीं होसकती इसी तरह सूर्य चंद्रादि ग्रहोंमें सुखदुःख पहुंचानेकी प्राकृतिक शक्ति सूक्ष्म दृष्टिसे देखा जाय तो जड चैतन्य दोनों स्वाधीन नहीं हैं जैसे जडपदार्थ कारण विना कुछ नहीं कर-सकते इसी तरह चैतन्यभी कुछ नहीं करसकते जो कुछ कहते हैं सो बुद्धिके अधीन होकर करते हैं और बुद्धि है कर्म्माधीन जैसी भावी होती है उसीके अनुकूल बुद्धि होजाती है इसलिये चैतन्यहीको स्वाधीन मानना ठीक नहीं।

प्रश्न-तुम्हारा फलित झूठा है जो तुम्हारा फलित सच्चा हो तो जेष्ठमासी धूपमें ऐसे दो पुरुषोंको खडा करके कि, एकपर सूर्य प्रसन्न हो और दूसरेपर सूर्य क्रूर हो जब जाने कि प्रसन्नवालेके पांय न जलें और जो तुमने ग्रहोंका प्रभाव बताया सो ग्रहोंका प्रभाव सबपर एकसा है न्यूनाधिक नहीं।

उत्तर-ज्योतिषशास्त्रमें ऐसा कहीं नहीं कि, सूर्य अमुकपर प्रसन्न होते हैं अमुकपर क्रुद्ध होते हैं ये आपने किसी अज्ञानीके मुखसे सुन लिया होगा। सूर्यचन्द्रादि किसीपर प्रसन्न व अप्रसन्न नहीं होसकते क्योंकि उन्होंका किसीने अपराध नहीं किया जो अप्रसन्न हैं और आपने ग्रहोंका सबपर एकसा प्रभाव बताया सो आपका कहना ठीक नहीं क्योंकि एकही पदार्थ एकको लाभदायक है और वही पदार्थ दूसरेको हानिकारक होजाता है जैसे घास पशुको लाभदायक है और मनुष्यको हानिकारक है किसीको इमली खानेसे गुण होता है और वही दूसरेको नुकसान पहुँचाती है। एकही ऋतुमें बहुतसे नीरोग रहते हैं व बहुतसे रोगी रहते हैं। जो आपने सूर्यसे पैर जल-

नेका कहा सो उसकी किरणका प्रभावही है कि वह उष्णता पहुँचाती है । ग्रहोंका काम तो मनुष्यके सुखदुःखको सूचना करनेका है; जैसे-दीपकका काम है कि, वह अंधकारको नाशता है परंतु जो कोई उसको हाथ लगावेगा तो उसका हाथ अवश्य दग्ध होगा क्योंकि उसका गुणही यह है जैसे-एक मनुष्य यात्रासे घर आता था और दूसरा यात्राके लिये घरसे चला गांवके बाहर दोनोंको एकही स्थानपर रीछ दीखा । एकको रीछ दर्शनका शुभ शकुन हुआ और दूसरेको उसके दर्शनका अशुभ शकुन हुआ । आगे चलकर शुभवालेको दौसौ रुपये मिलगये और अशुभवालेको दौसौ रुपयेका नुकसान हुआ । अब देखिये रीछ किसीपर प्रसन्न व क्रुद्ध नहीं है यदि दोनों पुरुष इसके पास जावेंगे तो वह दोनोंको खाजावेगा क्योंकि उसका स्वभावही ऐसा है परन्तु शुभ अशुभ सूचना उसकी दोनोंके लिये पृथक् पृथक् है इसी तरह सूर्यके उष्णतादि गुण सबके लिये समान हैं परन्तु सुख दुःखकी सूचना पृथक् पृथक् है ।

प्रश्न–हमारा विश्वास गणितपर है फलितपर नहीं फलित है सो अटकलपच्चू है संसारमें एकही समयमें हजारों आदमी जन्मते हैं परन्तु उन सबोंकी वृत्ति एकही नहीं होती और इसका स्पष्ट दृष्टांत यह है कि, दो युग्म बालक जन्मते हैं उन्होंके जन्मलग्नमें तो क्या बल्कि नवांशमें भी अंतर नहीं होता फिर उन दोनोंका भाग्य एकसा क्यों नहीं होता और जिस घडीमें चक्रवर्ती राजा जन्मलेता है उसी मुहूर्तमें कंगाल जन्मता है मगर वह कंगाल चक्रवर्ती राजा क्यों नहीं होता ?

उत्तर–गणित है सो वृक्ष है और फलित है सो उस वृक्षरूपी गणितका फल है जैसे फलहीन वृक्ष शोभा नहीं देता इसी तरह फलित विना गणित वृथा है जितने गणित मात्र हैं उनमें सचमें थोडा बहुत भविष्य कहनेका सामर्थ्य है जैसे किसीने कहा कि, हमने आजकी मितीमें किसीको २००) रु० कर्जा १) रु० सैकडा

मासिक व्याजकी दरसे दिये आजहीसे दो वर्षमें क्या व्याज होगा गणित किया गया तो मालूम हुआ कि, दो वर्षमें ४८) रु० होंगे अब देखिये कि, कहाँ दोवर्षकी बात आज प्रगट होगई गणितसे आसमानका ग्रहण बताया जाता है जो सबको प्रत्यक्ष होता है और जो आपने फरमाया कि, फलित अटकलपच्चू है सो आपभी तो अपनी कुशाग्रबुद्धिसे कुछ अटकलपच्चू कहियेगा यहाँ तो सं० १९५६ का फल तथा श्रीमहाराणी विक्टोरियाकी आयुर्दायको पूर्वसे विद्वानोंने निर्णय किया था सो वैसाही मिला आपभी तो किसी बादशाहके बारेमें कुछ फल अटकलपच्चू कहें तब मालूम हो जो आपने सहस्रों आदमियोंका तथा चक्रवर्त्ती राजाका एकही समयमें जन्मना कहा सो जिस समय चक्रवर्ती राजा जन्मेगा उस समय अन्य पुरुष नहीं जन्मेगा अगर जन्मनेका आपके पास कुछ प्रमाण हो तो फरमाइयेगा और ज्योतिषका फल मनुष्यके कुलानुमान होता है जैसी जिसकी वर्तमान स्थिति है उसीपर उन्नति अवनति कही जायगी जैसे किसी कंगालके घर बालक जन्मा और उसके बापकी तनखाह ९) थे और लडकेकी होगई २०) रु० तो इससे लडका भाग्यवान् कहा जावेगा । किसीका जन्म एक लक्षाधीश राजाके घरमें हुआ और उसके राज्याधिकारी होनेपर उसका राज पचास सहस्रका रह-गया तो यद्यपि बीस रुपये महीना पानेवालेसे उस राजाकी आय विशेष है परंतु भाग्य उस कंगालपुरुषका विशेष कहा जायगा और फल जो है सो देश और कालके अनुसार होता है जैसे उष्ण कटि-बंधके निवासी सूर्यके समीप होनेसे कृष्णरंगके होते हैं और यूरोप देशवासी पश्चिमस्थ होनेसे सूर्यसे दूसरे दूर हैं अतः गौररंगके होते हैं अब यदि एकही लग्नमें हब्सदेशनिवासी तथा यूरोप देशस्थका जन्म हुआ तो वह एकही रंगके नहीं हो सकते क्योंकि इसमें देशभेद हो गया है जो जो देश ग्रहोंके समीप हैं उन्होंपर उन ग्रहोंका प्रभाव बहुत शीघ्र तदनुरूप पहुँचता है और जो दूर हैं उन्होंपर इतना

शीघ्र प्रभाव नहीं पहुँच सकता इसलिये एक कालमें जन्म होनेहीसे क्या है जब देश काल इत्यादि सब मिलेंगे तबहीं उन दोनोंकी वृत्ति एकसी होगी जो आपने युग्म बालकोंका उदाहरण दिया कि १ नवांशमेंभी फर्क नहीं पडता सो यह बात मिथ्या है दोनों बालक एक साथ कभी न जन्में न जन्म सकते मनुष्य क्या पशुतकमें यह बात नहीं होसकती है याने मुर्गी एकदम दो अंडे नहीं देसकती है और श्वान मार्जार एकही दम दो बच्चोंका प्रसव नहीं कर सकते कालांतरसे उन सबका प्रसव होता है इसीलिये सबका भाग्य एकसा नहीं हो सकता।

प्रश्न—नहीं जी ग्रहणका तो हिसाब है हिसाबसे मालूम होता है ?

उत्तर- धन्य है आपकी विशाल बुद्धि हिसाब तो है परंतु उस हिसाबसे भविष्य बात मालूम होती है कि नहीं जो गणना कीजाय उसका फलित है जैसे १० आम पांच आदमियोंमें बाँटे ता एक एकके कितने हिस्से आवेंगे ? स्लेटपर गणित किया गया वह हिसाब है और उस गणितका यह जवाब आया कि दो दो आम प्रतिमनुष्यके बाटे आवेंगे यही उसका फलित हुआ। इसी तरह बिना फलितका कोई गणित नहीं और फलितरहित उस गणितको करो तो वह वृथा है जैसे किसीने पंचतारा स्पष्ट किये; उसमें दोरोज मेहनतके लगे और मालूम हुआ कि, बुधके ९ अंश गये हैं शनिके १० अंश गये हैं बस सुनालिया कि, इतने अंश गये हैं पर हासिल कुछ नहीं फिर खाली अंश सुन लेनेके लिये इतना गणित करना कराना वृथा है इससे बेहतर यह है कि, गणितभी न माना जावे और न किसीको गणित करना चाहिये।

प्रश्न—आकाशमें असंख्यात ग्रह हैं उनमें सिर्फ सातही मनुष्योंपर असर करते हैं बाकी क्यों नहीं करते ?

उत्तर—धन्य है आपकी बुद्धि भारवर्षमें ३० करोड आदमी वसते हैं वे सबही हाकिम क्यों, नहीं होजाते परंतु जो हाकिम हैं वही

हाकिम रहेंगे और शरीर तो राजा और रंकका देखनेमें एकही होता है परंतु जो प्रभाव राजाका होता है वह गरीबका नहीं हो सकता। इसी प्रकार ग्रह समझिये और सातवार तो सारे विश्वमें विदित हैं अंग्रेज, मुसलमान, ईसाई, जपानी, पारसी, फरांसीसी, रूसनिवासी, यहूदी इत्यादि सब मुल्कोंमें सातवार प्रचलित हैं ये सातवार सात ग्रहोंके हैं आठवाँ वार कहीं भी नहीं है परंतु आपको आकाशमें जितने तारे हैं उतनेही वार मानना चाहिये आप वृथा सात वारोंको मानते हैं क्योंकि, आप तो सातग्रहोंके तुल्य अन्य भी तारागणको मानते हैं फिर केवल सातही वारोंपर आरूढ होना नाहक है।

प्रश्न--ग्रहोंको सब मनुष्य क्यों नहीं मानते और इस विद्याको प्रगट हुए कितने वर्ष हुए।

उत्तर--इस संसारमें ऐसा कोई भी मत या विद्या नहीं है जिसको सब एकत्र होकर माने आप पूर्वजन्मके कर्म्मोंको मानते हैं उसको मुसलमान व ईसाई नहीं मानते जिस बाईबिलको ईसाई मानते हैं उसको आप व मुसलमान नहीं मानते और वास्तवमें मानना नहीं मानना मनुष्यकी कल्पना है पदार्थमें जो गुण है वह न माननेसे मिट नहीं सकता अग्निपर यदि कोई अग्नि न मानकर पैर रक्खे तो वह पाँवको दग्धही करेगी दूसरे इस संसारमें देवासुरसंग्राम सदासे चला आया है अर्थात् प्रत्येक बातका प्रतिकूल उत्तर मौजूद है जैसे दिन, रात्रि, पाप, पुण्य धर्म, अधर्म, सत्य, असत्य, यश, अयश, सुख, दुःख, ज्ञान, अज्ञान, प्रकाश, अन्धकार, मानना, नहीं मानना, संयोग, वियोग, जय, पराजय, खंडन, मंडन, शत्रु, मित्र, स्तुति, निंदा, अनुकूल, प्रतिकूल, उत्पन्न, विनाश, इत्यादि इसी तरह बहुतसे इस विद्याको मानते हैं और बहुतसे नहीं मानते हैं यह सृष्टिक्रम है इसमें अंतर नहीं आसकता और ज्योतिष शास्त्र कबसे प्रगट हुआ इसकी एक तिथि ज्ञात नहीं होसकती क्योंकि, रामकृष्णकी जन्मकुंडलियाँ आजतक प्रचलित

हैं जिनको लक्षावधि वर्ष होगये और पुराने इतिहासोंमें भी फलितका वर्णन लिखा है ग्रीसदेश तथा अरबमें इस विद्याका पहिले बहुत प्रचार था मुसलमानोंमें एशियालोग अबतक फलितको मानते हैं इन सब कारणोंसे यह सिद्ध है कि, फलित शास्त्रका प्रचार इस देशमें अति प्राचीन कालसे है ।

प्रश्न–अंग्रेज लोग जो आजकल कलानिधि हो रहे हैं और जिन्होंने अपनी बुद्धिबलसे कई नवीन यन्त्रादि निकाले वे ज्योतिषको क्यों नहीं मानते और फलितकी विधि आजकल पूरी २ क्यों नहीं मिलती ?

उत्तर–जब आपही सरीखे भारतवासी इसके माननेमें शंका करते हैं तो अन्य देशस्थ क्यों नहीं करेंगे ? यूरोपदेशमें पहिले गणित विद्याका प्रचार फलितहीके लिये था अनुमान २०० वर्ष पूर्व जर्मनी देशमें केप्लर नामका एक बडा ज्योतिषी हुआ था उसने एक ग्रंथमें यों लिखा है कि, " गणित विद्यारूप एक विद्वान् माताकी फलित विद्यारूप एक मूर्ख बेटी है और उस माताका जीवन केवल उसी मूर्ख बेटीके आधारसे है इति " नेपोलियन बोनापार्टी नामक विद्वान् जो यूरोपदेशमें हो गये हैं उन्होंने फलितका ग्रन्थ अंग्रेजीमें बनाया है जो आजकल प्रचलित है और कलकत्तेमें छपा हुआ है और जो पुराने अंग्रेज लोग भारतवर्षकी विद्याका गौरव जानते हैं वे निःसंदेह फलित विद्याको मानते हैं प्रोफेसर मोक्षमूलर साहब ओक्सफोर्ड निवासी फलित ज्योतिषको निःसंदेह मानते थे और संस्कृतके भी पूर्ण विद्वान् थे आपने वेदोंका भाष्य किया था तारणीप्रसाद नामक अंग्रेजी ज्योतिषी कलकत्तेमें रहते हैं वह हरसालका भविष्य अंग्रेजी अखबारोंमें छपवाते हैं और अब यूरोपदेशके अनेक विद्वान् अनुभव करकरके फलित विद्याको बढाने लगे हैं उन्होंका विश्वासभी इस विद्यापर क्रमशः बढता जाता है जो अंग्रेज लोग इसके गुणको नहीं समझते हैं वे नहीं भी मानते हैं क्योंकि यथा नीतिमें भी लिखा है—

"न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निंदां सततं करोति ।
यथा किराती करिकुंभजातां मुक्तां परित्यज्य बिभर्ति गुंजाम् ॥"

और अंग्रेज लोगोंने जो नवीन यंत्रादि रचे उसका कारण यह है कि, उस देशके विद्वानोंने अपना समय इन्हीं कला कौशल्यादिके खोजमें व्यतीत किया इसलिये वे कलानिधि होगये और इस देशके पूर्वजोंने अपना समय साहित्य विद्याके अनुसंधानमें खोया वे यंत्रविद्यासे तो वंचित रहे परंतु उन्होंने ऐसी ऐसी सिद्धांत विद्याओंका उत्पादन किया जिसको सीखकर मनुष्य दैवज्ञ होसकता है यथा सामुद्रिकशास्त्र, स्वरशास्त्र, केरलशास्त्र, योगशास्त्र, कामशास्त्र, व्याकरण, छंदशास्त्र, वेदांत, सँगीतशास्त्र, सूपशास्त्र, कोकशास्त्र, न्यायशास्त्र, इत्यादि ये विद्याएँ एकसे एक विलक्षण हैं इन विद्याओंसे यूरोपनिवासी सर्वतः अनभिज्ञ हैं और जो आपने विधि न मिलनेका कहा सो आजकल शिक्षाप्रणालीकाभी भेद है अर्थात् जो ज्योतिषीलोग बालकोंको पढाते हैं वे गणितमें तो कुछ छिपा नहीं सकते छिपावें तो अंक पूरा केसे हो जैसे यह कौन कह सकता है कि, आठको आठके गुणनेसे गुणन फल ६३ होता है किंतु वहां तो पूरे ६४ ही कहने पडेंगे और पूरे ६४ ही की क्रिया करनेमें आवेगी परंतु फलितमें यह भाव नहीं है पढानेवालेकी इच्छा है चाहे विद्यार्थीको उसका भेद बतावे या न बतावे ज्योतिषके मर्मको पिता पुत्रको नहीं बतलाते यहां तक प्रतिज्ञा किया करते हैं कि, हम मरणसान्निद्धि कालमें किसी प्रियको बतावेंगे परंतु कालवश पंचत्वको प्राप्त होजाते हैं इसप्रकार किसीको बतलानेका अवसरही नहीं मिलता इसीतरह भारतवर्षकी विद्या नष्ट होगई और ज्योतिषका सार लोगोंने खोदिया और ग्रंथभी फलितके जो प्राचीन हैं वे अब नहीं मिलते इसके अतिरिक्त यहांके लोगोंने इस विद्याकी उन्नति करना छोडदी जो कुछ पुराने जमानेमें विद्वानोंने अनुभव कारकरके योग बनाये हैं उन्हींको लोग घसी-

रटते जाते हैं यह नहीं कि अपने स्वयं अनुभवसे नया फलित रचें कि, जिससे यह विद्या वृद्धिको प्राप्त हो । देखिये-अंग्रेज लोग डाक्टरी विद्याको प्रतिदिन बढाते जाते हैं और हरएक रोगकी औषधिकी परीक्षा करकरके नवीन रचना करते जाते हैं और जो इलाज पुराने होगये और देशकालके भेदसे जिनमें रोगनाशक गुण न रहा उन्होंको वैद्यक ग्रंथसे निकाल देते हैं इसी तरह फलितके योग जो बहुत पुराने होगये उनमें कालांतरसे फर्क आने लगता है और जैसे वैद्यको बहुत रोगोंका इलाज करते करते नवीन अनुभव प्राप्त होता है और जिसको औषधि देता है वह बहुधा गुणदायक होती है इसी तरह जिस ज्योतिषीकी दृष्टिसे सैकडों जन्मकुंडलियां निकल गई हैं उसका फलित औरोंकी अपेक्षा अच्छा होता है मतलब यह है कि, ज्योतिष और वैद्यक ये दोनों विद्या अनुभवकी हैं जिसको जितना अनुभव होगा उतनाही वह क्रम बढ फलित कह सकेगा इसी कारणसे आजतक फलितकी विधि न्यूनाधिक मिलती है ॥

प्रश्न–मुहूर्तभी सच्चा है वा नहीं ?

उत्तर–हां मुहूर्त बहुत सच्चा है क्योंकि मुहूर्त भी फलितका एक अंग है और जैसा फलितका आधार समयपर है ऐसेही मुहूर्त भी कालानुकूल है और यह प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि, समयके अनुकूल इस भूमंडलके समस्त पदार्थोंमें ह्रास वृद्धि होती रहती है जैसे–ग्रीष्मऋतुमें अनेक पदार्थ उत्पन्न होते हैं अनेक नष्ट होते हैं इस भूमंडलसे जिस जिस समय जिस जिस ग्रहका जितना संबंध होता है उसके अनुसार पदार्थोंमें ह्रास वृद्धि होना संभव है जो जो ग्रहमंडल अपनी गतिसे भूमंडलसे जितनी दूरपर होता है उसके स्वभावानुकूल भूमंडलके पदार्थोंकी व्यवस्था अदल बदल हुआ करती है इसी कारण फलितवक्ता आचार्योंने सूर्यादिग्रहोंके स्वभावानुकूल फल दिखाये हैं किसी आचार्यने सूर्यका फल शीतकारक तथा चन्द्रमाका फल उष्ण-

कारक नहीं लिखा और जो पदार्थ व जीव जैसे समयमें उत्पन्न होते हैं उनके गुण कर्म्म स्वभाव समयके अनुकूल अवश्य होते हैं और प्रारब्ध कर्मोंके अनुसार जो भावी फल है उसीके अनुकूल देशोंमें जीवोंका जन्म होता हैं । इस भूमण्डलपर नाना देश हैं कहीं शीत अधिक है कहीं उष्णता अधिक है कहीं जल वायु औरही प्रकारकी है इसी देशकालके भेदाभेदके तारतम्यसे जीवोंको सुख दुःख हुआ करते हैं । कहीं एकही देश और एकही कालमें जो जीवोंको सुख दुःख होते हैं वह वस्तु भेदसेभी हैं और समस्त जीवोंके प्रारब्ध कर्मसे जो भावी फल है उसके सूचक सूर्यादि ग्रह हैं इसी लिये ग्रहोंके संबंध असंबंधके तारतम्यपर सांसारिक व्यवहार व जीवोंके सुख दुःखका अनुमान किया गया तथा प्रारब्ध कर्म्मसूचक फलके विचारनेवाले विद्वान् दैवज्ञ कहाते हैं आशय यह है कि समयका प्रभाव कार्य्यपर अवश्य पडता है अच्छे समयका अच्छा फल है और बुरेका बुरा है अतएव शुभ मुहूर्तसे कार्य्य करना चाहिये इति ॥ यहांतक ज्योतिष विद्याविषयक शंका समाधान लिखा गया इसके अतिरिक्त और भी बहुतसी शंका इस विषयमें हो सकती हैं क्योंकि-"शंकाभिः सर्वमाक्रान्तमन्नं पानं च भूतले ॥ प्रवृत्तिः कुत्र कर्तव्या जीवितव्यं कथं नु वा ॥" अर्थात् सम्पूर्ण पदार्थ शंकासे आक्रांत हैं ऐसे तो अन्न पानतकमें शंका हो सकती है यदि ऐसी शंकाकी प्रवृत्ति की जाय तो जीनाही कठिन है ऐसी प्रतिज्ञा कोई नहीं कर सकता कि, इन प्रश्नोंके सिवाय और कोई फलितसम्बन्धी प्रश्नही नहीं कर सकेगा क्योंकि, एकही बात व विषयपर देशकाल वस्तुके भेदसे नवीन नवीन प्रश्न होते आये हैं और होते रहेंगे इसकी सीमा नहीं मैंने भी अपनी समयानुसारिणी क्षुद्र बुद्धिके अनुसार इस विषयमें संक्षेपतः लिखा है और विचारशीलोंके समीप इतना लेख बहुत है वैसे तो अनेक विवाद और समाधान हैं जिनका पारावार नहीं ॥

आजकल भारतवर्षमें जितना ताजिक ग्रन्थोंका प्रचार है उतना प्रश्नके ग्रन्थोंका नहीं है षट्पंचाशिका भुवनदीपक तथा प्रश्नतन्त्र

नीलकंठीके अतिरिक्त और कोई नवीन ग्रन्थ प्रश्नका नहीं छपा, प्रश्नका विशेष काम पडता है जिन लोगोंको जन्मग्रह ज्ञात नहीं हैं वे प्रश्नसेही अपना कार्य्य सम्पादन करते हैं और प्रायः मुष्टिप्रश्न मूलप्रश्न कार्य्यसिद्धयसिद्धि प्रश्न बहुत पूछा करते हैं अतएव मैंने वर्त्तमानाऽभावके निवारणार्थ प्रश्नके ग्रन्थोंका खोज करना आरम्भ किया अंतमें मुझे " ज्ञान--प्रदीप " नामक मूल ग्रंथ प्राप्त हुआ जो मेरे अभिमत निकला यह अद्वितीय ग्रंथ देवनागरी लिपिमें आजतक नहीं छपा है और न किसीने इसपर टीकाकी मैंने इसको हृदयग्राही तथा सर्वोपयोगी जान सुबोधिनीभाषाटीकासे अलंकृत किया वेदशास्त्र सम्पन्न परोपकारी धर्मव्रतधारी पं०-गंगाधर शास्त्री बजरंगगढ निवासीका मैं बडा कृतज्ञ हूं जिन्होंने संस्कृतके पठन पाठनमें मेरे उत्साहको बढाया उपसंहारमें मैं वैश्यकुलावतंस स्वधर्म्मपरायण सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको अंतःकरणसे धन्यवाद देता हूं जिन्होंने स्वकीय " श्रीवेङ्कटेश्वर "-ष्टीम्-यंत्रालयमें इस ग्रंथको छापकर प्रकाशित किया इस " ज्ञानप्रदीप " का सर्वाधिकार " श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्--प्रेसके अधीश उक्त सेठजीके अधीन है अन्य कोई छापनेका वृथा परिश्रम न करे, पाठकगणोंसे निवेदन है कि, यदि इसमें कहीं भूल रहगई हो तो क्षमा करें यद्यपि सज्जनगणोंकी कृपादृष्टि योग्य इस भाषानुवादमें कोई गुण नहीं दिखाई देता तथापि गुणग्राही महाशय अपनी स्वाभाविक उपकार वृत्तिसे इसका प्रचार बढावेंगे । इयमेव जिज्ञासा किंबहुना बुद्धिमत्सु शम् ॥

सुठालियाधीश-महाराज शंभूसिंह.

श्रीगणेशाय नमः ।

प्रश्नज्ञानप्रदीपः ।

भाषाटीकासमेतः ।

उपोद्घातकाण्डम् १ ।

मङ्गलाचरणम् ।

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

ग्रंथके आरंभमें मंगल करनेसे सब विघ्न दूर होकर ग्रंथकी समाप्ति होती है इस कारण प्रथम श्रीभगवान्‌का ध्यान करते हैं। श्वेतवस्त्रके धारण करनेवाले चंद्रसरीखे गौरवर्णवाले चार भुजाधारी प्रसन्नमुखवाले ऐसे विष्णु भगवान्‌का ध्यान करता हूं जिनके स्मरणमात्रसे सर्व विघ्नोंकी शांति होती है ॥ १ ॥

श्रीमद्गंगाधरसुतं चन्द्रलेखावतंसिनम् ।
सिद्धिदं सर्वविद्यानां वन्दे दन्तावलाननम् ॥ २ ॥

श्रीमद्गंगाधर महादेवके पुत्र चंद्रलेखावतंसी सर्व विद्याके सिद्धिदाता हाथीके मुखवाले ऐसे गणपतिकी वंदना करता हूं २

---

१ यहांपर कोई यह शंका करे कि, भगवान्‌का स्वरूप तो मेघवर्ण कहा है इस श्लोकमें शुक्लवर्ण क्यों लिखा ? इसका उत्तर यह है कि, भगवान्‌के चारों युगोंके पृथक् पृथक् स्वरूप कहे गये हैं यह ध्यान भगवान्‌के सतयुगावतारका है इसमें प्रमाण श्रीमद्भागवते—एकादशस्कंधे पञ्चमाध्याये २१ श्लोके--" कृते शुक्लश्चतुर्बाहुर्जटिलो वल्कलांबरः । कृष्णाजिनोपवीताक्षान्बिभ्रद्दंडकमण्डलू " । अर्थात् सतयुगमें भगवान् शुक्लवर्णका अवतार धारण करते हैं।

उपोद्घातः ।

ज्ञानप्रदीपकं नाम शास्त्रं लोकोपकारकम् ।
प्रश्नादर्शं प्रवक्ष्यामि सर्वशास्त्रानुसारतः ॥ ३ ॥

"ज्ञानप्रदीपक" नामका ग्रंथ लोकोंके उपकारके वास्ते वर्णन करूंगा । कैसा है ज्ञानप्रदीप ? प्रश्नका आदर्श काँचके समान और सब शास्त्रोंके मतोंसे भरा हुआ ॥ ३ ॥

ग्रन्थस्थविषयसूचनम् ।

भूतं भावि वर्तमानं शुभाशुभनिरीक्षणम् ।
पंचप्रकारमार्गं च चतुःकेन्द्रबलाबलम् ॥ ४ ॥

भूत (गुजरी हुई बात) वर्तमान (हाल हो रही है) भावि होनेवाली तथा शुभ वा अशुभका देखना पांच प्रकारका और चारों केंद्रोंका बलाबल ॥ ४ ॥

आरूढश्छत्रवर्गं च उदयादिबलाबलम् ।
क्षेत्रदृष्टिं नरं नारीं युग्मं वंशं च वर्णकम् ॥ ५ ॥

अरूढ, छत्र, लग्नका बल, ग्रहोंके स्वगृहदृष्टि, पुरुषग्रह, स्त्रीग्रह, नपुंसकग्रह तथा वंश,

मृगादिनररूपाणि किरणा योजनानि च ।
आयुरासनमाद्यन्तं परीक्ष्य कथयेद्बुधः ॥ ६ ॥

मृगादि, नररूप किरण, योजन, आयुष्य, आसन इन्होंका विचार करके बुद्धिमान् फल कहै ॥ ६ ॥

चरस्थिरोभयं राशिं तत्प्रवेशस्थलानि च ।
निशादिबलसंध्याश्च कालदेशस्वभावकान् ॥ ७ ॥

चर, स्थिर, द्विस्वभाव इन्होंकी रहनेकी जगह, रात, दिन, संध्याकाल, देश, काल, स्वभाव ॥ ७ ॥

धातुर्मूलं च जीवं च नष्टं मुष्टिं च चिन्तनम् ।
लाभालाभौ गदं मृत्युं भुक्तिं स्वप्नं च शाकुनम् ॥८॥

धातु, मूल, जीव, नष्टहुई, मूठीमें जो चीज इन्होंकी चिंता, लाभ, अलाभ, रोग, मृत्यु,भोजन, स्वप्न, शकुन ॥ ८ ॥

जातकर्मायुधं शल्यं कूपं सेनागमं तथा ।
सरिदागमनं वृष्टिमर्घं नौसिद्धिमादितः ।
क्रमेण कथयिष्यामि शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ९ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे उपोद्धातकाण्डं प्रथमम् ॥ १ ॥

जन्म, शस्त्र, शल्य, कूंवाँ, फौजका आगमन याने आना, यायी चढकर आनेवाला, स्थायी जो घरमें स्थिर रहे और जिसपर युद्धकी चढाई हो, इन्होंकी जय पराजय नदीका चढना, पानीका बरसना, भाव, तेज सोंगा होना, नावका किनारेपर लगना, कार्यकी सिद्धि असिद्धि इनको आदि लेकर ज्ञानप्रदीपमें वर्णन करताहूं ॥ ९ ॥ इति प्रथमकांडम् ॥ १ ॥

ग्रहविचारकाण्डम् २ ।

ग्रहाणां मित्रत्यादिवर्णनम् ।

अथ वक्ष्ये विशेषेण ग्रहाणां मित्रनिर्णयम् ।
भौमस्य मित्रे शुक्रज्ञौ भृगोर्ज्ञार्किमंत्रिणः ॥ १ ॥
अङ्गारकं विना सर्वे ग्रहा मित्राणि मंत्रिणः ।
आदित्यस्य गुरुर्मित्रं शनेर्विद्गुरुभार्गवाः ॥ २ ॥

भास्करेण बिना सर्वे बुधस्य सुहृदस्तथा ।
चन्द्रस्य मित्रे जीवज्ञौ मित्रवर्ग उदाहृतः ॥ ३ ॥

अब ग्रहोंकी मित्रताका निर्णय करता हूं । मंगलके मित्र शुक्र बुध हैं, शुक्रके मित्र मंगल बुध गुरु शनि हैं । गुरुके मित्र सूर्य चंद्र बुध शुक्र शनि हैं । सूर्यका मित्र गुरु है । शनिके बुध, गुरु, शुक्र, जानों । बुधके मित्र चंद्र मंगल गुरु शुक्र शनि, चंद्रके मित्र गुरु और बुध इसप्रकारसे मित्रोंका निर्णय कथन किया ॥ १ – ३ ॥

ग्रहाणां स्वगृहमैत्रीवर्णनम् ।

मेषवृश्चिकयोर्भौमस्तुलावृषभयोः सितः ।
कन्यामिथुनयोः सौम्यः शनिर्मकरकुंभयोः ॥ ४ ॥
धिषणो मीनधनुषोः सिंहस्य दिनकृद्भवेत् ।
कुलीरस्य निशानाथः क्षेत्राधिपतयः क्रमात् ॥ ५ ॥

मेष तथा वृश्चिकका स्वामी मंगल है । तुला वृषभका स्वामी शुक्र है । बुध मिथुन तथा कन्याका स्वामी है । शनि मकर कुम्भका स्वामी है । गुरु धन मीनका स्वामी है । सूर्य सिंहका स्वामी है । चंद्र कर्कका स्वामी है । इस प्रकार ग्रहोंके स्वगृह कहे ॥ ४ ॥ ५ ॥

धनुर्मिथुनपाठीनकन्योक्षाणां शनिः सुहृत् ॥ ६ ॥

अब ग्रहोंकी मित्रता राशिनसे वर्णन करते हैं—धन, मीन, मिथुन, कन्या, वृषभ, तुला इनका शनि मित्र है ॥ ६ ॥

रविश्चापांत्ययोरारस्तुलायुग्मोक्षयोषिताम् ।
कोदंडमीनमिथुनकन्यकानां शशी सुहृत् ॥ ७ ॥

सूर्य धन मीनका मित्र है। मंगल तुला वृषभ मिथुन कन्याका मित्रहै। चंद्र मिथुन कन्या धन मीनका मित्र है ॥ ७ ॥

बुधस्य चापनक्रालिकर्यजोक्षस्तुलाघटाः ।
क्रियो मिथुनकोदंडकुंभालिमकरा भृगोः ॥ ८ ॥

धन, मकर, वृश्चिक, कर्क, मेष, मीन, वृषभ, तुला, कुंभ इन्होंका मित्र बुध है। मेष, मिथुन, धन, कुंभ, वृश्चिक, मकर, कन्या, मीन इनका मित्र शुक्र है ॥ ८ ॥

गुरोः कर्कतुलाकुंभमिथुनोक्षमृगेश्वराः ।
राशिमैत्रं गृहाणां च मैत्रमेवमुदाहृतम् ॥ ९ ॥

गुरुके कर्क, तुला, कुंभ, मकर, वृषभ, कन्या, मिथुन, सिंह ये मित्र हैं। या प्रकार राशिमैत्री भी कही ॥ ९ ॥

प्रकाशाप्रकाशकग्रहाणामुच्चादिवर्णनम् ।

सूर्येन्द्वोः परिघे जीवे धूमज्ञशनिभोगिनाम् ।
शक्रचापकुजोऽणूनां शुक्रस्योच्चास्त्वजादयः ॥ १० ॥

अब उच्च कहते हैं—सूर्य मेषका । चंद्र वृषभका । मिथुनका परिघ । कर्कका गुरु । सिंहका धूम । कन्याका बुध । तुलाका शनि । भोगी यानी उपग्रह जो केतु वह वृश्चिकका । शक्रचाप याने धनुः धनका । मंगल मकरका । कुंभका व्यतीपात, व्यतीपातका दूसरा नाम अणु भी है । मीनका शुक्र इस प्रकार उच्चग्रहोंका वर्णन किया है ॥ १० ॥

अत्युच्चं दशमं वह्निमनुयुग्मतिथीन्द्रियैः ।
सप्तविंशतिविंशत्या भागाः सप्तग्रहाः क्रमात् ॥ ११ ॥

उच्च राशिसे सप्तम नीच राशि होती है । प्रकाश करनेवाले तथा प्रकाश करके रहित ग्रहोंका वर्णन करा है अर्थात् नवग्रह जो आकाशमें दृष्टि आते हैं वे प्रकाशकरनेवाले ग्रह कहे जाते हैं इनके अतिरिक्त जो शेष अणु इत्यादि पाँच ग्रह हैं वे अप्रकाशक ग्रह कहे जाते हैं । अब इन अप्रकाशक ग्रहोंका बनाना लिखते हैं—स्पष्ट रविमें ४ राशि १३ अंश २० कला जोडना जो योग फल हो उसे धूम कहते हैं; उस धूमकी राशि अंश कला विकलाको १२ राशिमेंसे घटा देना जो शेष रहे उसका नाम व्यतीपात है उस व्यतीपातको राशिमें ६ राशि जोडना जो आवे उसका नाम परिवेष है । परिवेषको १२ राशिमेंसे घटाना शेष रहे उसका नाम इन्द्रधनु है, इसमें १६ अंश ४० कला जोड देनेसे ध्वज बनजाता है ॥ उदाहरण—जैसे रविस्पष्ट २ । ४ । २८ । १ में ४ । १३ । २० जोडे तो ६ । १७ । ४८ । १ हुए यह धूम है । उसको १२ मेंसे घटाया तो ५ । १२ । ११ । ५९ रहे इसका नाम व्यतीपात वा अणु है, इसमें ६ जोडे तो ११ । १२ । ११ । ५९ हुए यह परिवेष हुआ, इसको १२ मेंसे घटाया तो ० । १७ । ४८ । १ रहे यह इंद्रधनु है, इसमें ० । १६ । ४० जोडे तो १ । ४ । २८ । १ हुए यह ध्वज हुआ, इस ध्वजमें एक जोडदे तो फिर वही स्पष्ट सूर्य २ । ४ ।

२८।१ होजावेगा, व्यतीपात तथा इंद्रधनुका स्वक्षेत्र सिंहराशि है और धूम तथा परिवेषका स्वक्षेत्र कर्कराशि है इन ग्रहोंके उच्च नीच इसी ग्रंथके संज्ञाप्रकरणमें लिख आये हैं अतएव यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं। अब अत्युच्च ग्रहोंका वर्णन करैहैं–सूर्य दश अंशतक अत्युच्च होता है, इसीप्रकार चंद्र तीन अंश, मंगल अठाईस अंशतक, बुध पंद्रह अंशतक, गुरु पाँच अंश, शुक्र सत्ताईस, शनि बीस ऐसे अत्युच्च कहे हैं॥ ११॥

ग्रहाणां शत्रुत्वादिकथनम्।

बुधस्य वैरी दिनकृच्चन्द्रादित्यौ भृगो रिपू।
बृहस्पते रिपुर्भौमः सितचन्द्रात्मजौ विना॥ १२॥
भौमस्य रिपवो भानोर्विना जीवं परेऽग्यः।
गुरुसौम्यौ विना चन्द्रं रवीन्दुवनिजान्विताः।
शनेश्च रिपवः सर्वे तेषां तत्तद्गृहाणि च॥ १३॥

रविके चंद्र मंगल बुध शुक्र शनि शत्रु हैं। चंद्रके मंगल शुक्र शनि रवि शत्रु हैं। मंगलके रवि, चंद्र, गुरु, शनि शत्रु हैं। बुधका वैरी सूर्य है। गुरुका मंगल, शुक्रका रवि चंद्रमा। शनिके रवि, चन्द्र, मंगल। इसी प्रकार जिस ग्रहका जो ग्रह वैरी है उसका घरभी वैरी जानना॥ १२॥ १३॥

प्राकाश०ग्रहाणां नीचस्थानकेन्द्रस्थानकथनम्।

रवेर्वणिगलीस्त्विन्दोः कुलीरोङ्गारकस्य च।
ज्ञस्य मीनमजः सौरेः कन्या शुक्रस्य कथ्यते।
सुराचार्यस्य मकरस्त्वेतेषां नीचराशयः॥ १४॥

अब ग्रहोंकी नीच राशि कहते हैं—सूर्यकी तुला, चंद्रकी वृश्चिक, मंगलकी कर्क, बुधकी मीन । गुरुकी मकर । शुक्रकी कन्या । शनिकी मेष ये नीचराशि हैं ॥ १४ ॥

राहोर्वृषो युगं चेन्द्रधनुषोणोर्मृगेश्वरः ।
परिवेषस्य कोदण्डः कुंभो धूमस्य नीचभूः ॥ १५ ॥

राहुका वृषभ । धनुषका मिथुन । अणुका मकर । परिवेषका धन । धूमकी कुंभराशि ह ॥ १५ ॥

मित्रं तुलानक्रकन्यायुग्मचापवृषास्त्वहेः ।
कुंभक्षेत्रमहेः शत्रुः कुलीरो नीचभूर्वृषः ॥ १६ ॥

अहिके मित्र तुला, मकर, कन्या, मिथुन, धन, वृष ये हैं । अहिका स्वगृह कुंभ है । शत्रु कुलीर यानी कर्क है । नीच गृह वृषभ राशि है ॥ १६ ॥

ग्रहाणामुदयाः ।

उदयादिचतुर्थं तु जलकेन्द्रमुदाहृतम् ।
तच्चतुर्थं चास्तमयं तत्तुर्यं वियदुच्यते ॥ १७ ॥

उदयसे याने लग्नसे चौथे स्थानका जलकेंद्र ऐसा नाम है । चौथेसे चौथेको अस्त कहते हैं । अस्तसे चौथेकी वियत् ऐसी संज्ञा है ॥ १७ ॥

तत्तुर्यमुदयं चैव चतुष्केन्द्रं प्रकीर्तितम् ।
चिंतनीयं तु हिबुके दशमे स्वप्नचिंतनम् ॥ १८ ॥

वियत्से चतुर्थका उदय नाम है । दशमसे और चतुर्थसे स्वप्नका विचार करना ॥ १८ ॥

छत्रे मुष्टिं च यन्नष्टमस्ते चारूढतोऽपि वा।
चापोक्षकर्किनक्राजास्ते पृष्ठोदयसंज्ञकाः ॥ १९ ॥

छत्रसे मुष्टिका चिंतन, अस्त और आरूढसे खोई चीजका विचारना, धन वृष कर्क मकर मेष ये पृष्ठोदय हैं ॥ १९ ॥

तिर्यङ्मीनस्तथा शेषा राशयो मस्तकोदयाः।
द्वंद्वोदयौ मीनमृगावन्ये सर्वे स्वभावजाः ॥ २० ॥

मीन तिर्यगुदय है। बाकीकी राशि शीर्षोदय हैं। मीन, मकर द्वंद्वोदय ह ॥ २० ॥

अर्काङ्गारकमन्दास्तु सन्ति पृष्ठोदया अमी।
राहुर्जीवभृगुज्ञाश्च ग्रहाः स्युर्मस्तकोदयाः ॥ २१ ॥

सूर्य, मंगल, शनि पृष्ठोदय हैं। राहु, गुरु, शुक्र, बुध मस्तकोदय हैं ॥ २१ ॥

उद्यतस्तिर्यगेवेन्दुकेतू तत्र प्रकीर्तितौ।
उदये बलिनौ जीवबुधौ तु पुरुषाः पुनः ॥ २२ ॥

चंद्र और केतु तिर्यगुदय हैं। लग्नमें पुरुषराशि बलवान् हैं और गुरु बुध बलवान् हैं ॥ २२ ॥

ग्रहराशीनां बलचतुष्पदत्वादिवर्णनम्।

मध्ये चतुष्पदौ सूर्यभूमिजौ बलिनौ तथा।
चतुर्थे शुक्रशशिनौ जलराशी बलोत्तरौ ॥ २३ ॥

दशमस्थानमें सूर्य मंगल बलवान् हैं और उसी स्थानमें चतुष्पद राशि बलवान हैं। चतुर्थमें शुक्र चंद्र बलवान् हैं। और उसीस्थानमें जलराशि मकर मीन बली हैं ॥ २३ ॥

कर्कोलिर्बलवानस्ते खेटकश्च शनैश्चरः ।
युग्मकन्याधनुः कुम्भतुला मानुषराशयः ॥ २४ ॥

सप्तमस्थानमें कर्क वृश्चिक तथा शनि बली हैं। मिथुन, कन्या, धन, कुम्भ, तुला ये मानुषराशि हैं ॥ २४ ॥

चतुष्पदा मेषवृषसिंहचापा भवंति हि ।
कुलीरालो बहुपदौ पक्षिणो मृगमीनभो ॥ २५ ॥

मेष, वृषभ, सिंह, धन ये चतुष्पदराशि हैं। कर्क, वृश्चिक बहुत पाँवके हैं। मकर, मीन पक्षी हैं ॥ २५ ॥

द्विपदाः कुंभमिथुनतुलाकन्या भवंति हि ।
द्विपदा जीवविच्छुक्राः शन्यर्काराश्चतुष्पदः ॥ २६ ॥

कुंभ मिथुन तुला कन्या ये राशि द्विपद यानें दोपाँवकी हैं। गुरु बुध शुक्र ये द्विपद यानी दोपाँवके हैं। सूर्य, मंगल, शनि ये तीन ग्रह चार पाँवके हैं ॥ २६ ॥

शशिसौम्यौ बहुपदौ द्रुतं याति निशाकरः ।
शनिसूर्यौ जानुगती पद्भ्यां यांतीतरे ग्रहाः ॥ २७ ॥

चंद्रमा और बुध बहुत पाँवके हैं। चंद्रमा बहुत जल्दी चलते हैं। सूर्य और शनि ये घूटेसे चलते हैं। बाकीके ग्रह पाँवसे चलते हैं ॥ २७ ॥

उदीयन्तेऽजवीथ्यां तु चत्वारो वृषभादयः ।
युग्मवीथ्यामुदीयते चत्वारो वृश्चिकादयः ॥ २८ ॥
उक्षवीथ्यामुदीयंते मेषमीनतुलास्त्रियः ।
राशिचक्रं समालिख्य प्रागादिवृषभादिकम् ॥ २९ ॥

वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह ये चार मेषवीथीमें उदय होते हैं। वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ ये मिथुनवीथीमें उदय होते हैं। मेष, मीन, तुला कन्या ये वृषभवीथीमें उदय पाते है २८॥२९

आरूढ चक्रादिवर्णनम् ।

प्रदक्षिणक्रमेणैव द्वादशारूढसंज्ञकम् ।
वृषस्य वृश्चिकश्चैव मिथुनस्य शरासनम् ॥ ३० ॥

आरुढज्ञानचक्रम् ।

पूर्व.

	ईशान १२	१ मेष	पृच्छक स्थितिः २	आग्नेय ३
उत्तर.	११ / १०	आरूढचक्रम् दैवज्ञः		४ / ५	दक्षिण.
	वायव्य ९	८	७	६ नैऋत्य

पश्चिम.

वीथिचक्रम् ।

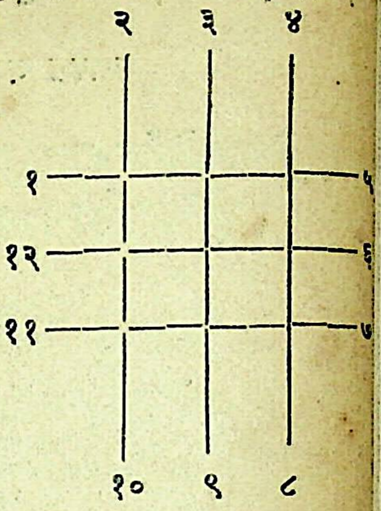
मेष	मिथुन.	वृश्चिक.
२	८	१
३	९	१२
४	१०	७
५	११	६

राहु.	रवि.	मंगल.
चंद्र.		गुरु.
शनि.	शुक्र	बुध.

अब आरूढ लग्न जाननेका प्रकार कहते हैं कि, ज्योतिषीसे प्रश्नकर्त्ता जिस दिशाको बैठ उस दिशाकी जो राशि है वही आरूढ लग्न है। दिशाकी राशि जाननेके लिये यह कोष्ठक लिखा है इसके अनुकूल अपने मनमें लग्नका अनुमान कर लेना अथवा इस कोष्ठकके ढंगकी एक जाजिम बना लेना बीचमें

ज्योतिषी बैठजावे और आसपासके बारह घरोंमें जहाँ कहीं प्र
कर्त्ता आकर बैठे उसी कोठेके राश्यनुकूल आरूढलग्न समझे।

दूसरा प्रकार यह भी है कि, बारह राशियोंका चक्र इस प्रकार तीनरेखाएँ पूर्वसे पश्चिम तथा तीनरेखाएँ दक्षिणसे उत्तर पट्टीपर खींचकर लिखे और पृच्छक इस चक्रमें जिस राशिका स्पर्श करे उसी राशिको आरूढलग्न कहना परंतु इसमें पूर्वका मत उत्तम है



जैमिनिसूत्रमें आरूढलग्नका ज्ञान इसतरह लिखा है कि
वर्तमानलग्नसे लग्नेश्वर जौनसे घरमें हो उस घरसे उतनेही घ
आगे गिनलेना वही आरूढलग्नहै; जैसे लग्न मेष है इसका स्वा
मंगल मकरस्थ है. यह लग्नसे दशवें घर है तो मकरसे दशवीं ल
तुला हुई यह आरूढ लग्नहै, परंतु ज्ञानप्रदीपमें यह मत मान
नहीं है इसमें तो पूर्वकाही मत मान्य है. जिसमें मीनलग्नको ईशा
नकोणमें मानकर मर्दराशिगणना की गई है ॥

अब राशियोंकी परस्पर दृष्टी कहते हैं प्रत्येक राशि अप
स्थानसे सातवीं राशिको देखती है जैसे वृष वृश्चिकको देखती
और मिथुन धनको ॥ ३० ॥

मकरस्तु कुलीरस्य सिंहस्य घट उच्यते ।
मीनस्तु कन्यकायाश्च तुलाया मेष उच्यते ॥ ३१ ॥
प्रतिसूत्रक्रमादेते परस्परनिरीक्षकाः ।
गगनं भास्करः प्रोक्तश्चंद्रो भूमिरुदाहृतः ॥ ३२ ॥

कर्कको मकर, सिंहको कुंभ, मीनको कन्या, तुलाको मेष इस प्रकारसे आपसमें दृष्टि होती है । पृथ्वीचक्रका देहधारी चंद्रमा है, सूय आकाश है चंद्रभूमि है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

पुमान्भानुर्वधूश्चन्द्रो भूचक्रप्राणवान्रविः ।
भूचक्रदेहश्चन्द्रः स्यादिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥ ३३ ॥

सूर्य पुरुष है, चंद्र वधू याने स्त्री है भूचक्र याने पृथ्वीका प्राण सूर्य, चंद्र देह है. ऐसा शास्त्रमें कहा है ॥ ३३ ॥

रविः शुक्रः कुजश्चार्किर्गुरुरिन्दुरहिर्विदः ।
ध्वजादिव्युत्क्रमेणैव तत्तत्कालं विचिंतयेत् ॥ ३४ ॥

ध्वज, धूम्र, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, ध्वांक्ष इन आठ आयके स्वामी रवि,शुक्र,मंगल,शनि, गुरु,चंद्र,राहु,बुध ये क्रमानुसार हैं और इसीतरह पूवादि अष्ठ दिशाके ध्वजादि स्वामी हैं ॥

इनका काम इसग्रंथमें नहीं पडेगा । ग्रंथान्तरोंमें इनका वर्णन सविस्तर है. केरलमें इन्हीं आठ ध्वजादिसे सम्पूर्ण फलित लिखा है, लग्न जाननेकी उसमें कुछ आवश्यकता नहीं, पृच्छकके नामाक्षरोंपरसे सारा फलित वर्णन किया है यहाँ तो केवल नाममात्र सूचनार्थ लिखे गये हैं क्योंकि इस ग्रंथमें इनका काम नहीं पडेगा ॥ ३४ ॥

छत्रज्ञानम् ।

प्रष्टुरारूढभं ज्ञात्वा तद्वीथीमवलोक्य च ।
आरूढाद्यावती वीथी तावती तूदयादिका ॥ ३५ ॥
तद्राशिश्छत्रमित्युक्तं शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ।
आरूढाद्भानुगां वीथीं परिगण्योदयात्तथा ॥ ३६ ॥
तावता राशिना छत्रमिति केचित्प्रचक्षते ।
मेषस्य वृषभं छत्रं मेषश्छत्रं वृषस्य च ॥ ३७ ॥

अब छत्रज्ञान कहते हैं कि, पृच्छककी आरूढलग्नसे जितनी संख्यामें वीथी हो उतनीही संख्या वर्तमानलग्नसे गिनलेना वही छत्र है । जैसे आरूढ मकर है, लग्न मेष है, मकरकी वीथी मिथुन है, इसकारण मकरसे मिथुनतक गिनतीसे छः होते हैं इसवास्ते लग्न मेषसे गिने तो कन्या छत्र सिद्ध हुआ ॥

दूसरामत–आरूढ लग्नसे उस समय सूर्य जिस राशिका होवे उस राशिकी वीथीको आरूढसे गिननेपर जितनी संख्या आवे उतनी संख्या तत्काल लग्नसे गिने वही छत्र है । आरूढ लग्न मकर है उस समयमें वृषभका सूर्य है, वृषभकी वीथी मेष है, मकरसे गिनती मेषतक करी तो चार है लग्न कर्क है, कर्कसे चौथी तुला वही छत्र है ॥ ३५ ॥–३७ ॥

युग्मकर्कटसिंहानां मेषश्छत्रमुदाहृतम् ।
कन्याया मकरश्छत्रं तुलाया वृष उच्यते ॥ ३८ ॥

तीसरामत–मेषका छत्र वृषभ है, वृषभका मेष छत्र है, मिथुन, कर्क, सिंह इनका छत्र मेष है, कन्याका छत्र मकर, तुलाका वृष है ॥ ३८ ॥

वृश्चिकस्य युगं छत्रं धनुषो मिथुनं तथा ।
नक्रस्य मिथुनं छत्रं मेषः कुंभस्य कीर्तितः ।
मीनस्य वृषभश्छत्रं छत्रत्रयमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥

वृश्चिकका मिथुन, धनका मिथुन, मकरका मिथन, कुंभका मेष छत्र है मीनका वृषभ छत्र है, इस प्रकार छत्रका वर्णन करा है ॥ ३९ ॥

ग्रहाणां दृष्टिवर्णनम् ।

उदये सप्तमे पूर्णमर्धं पश्येत्रिकोणके ॥ ४० ॥

जो ग्रह जिसके साथ एकराशिमें बैठे उसको पूर्णदृष्टिसे देखताहै तथा सप्तम उसकी पूर्ण दृष्टिहै, पंचम नवम आधी दृष्टिह ॥४०॥

चतुरस्रे त्रिपादं च दशमे पादमेव च ।
एकादशे तृतीये च पादार्धं वीक्षणं भवेत ॥ ४१ ॥

चौथी अष्टम ये त्रिपाद दृष्टि हैं, दशम पाददृष्टि है, तीन ग्यारह ये रुपयेमें दो आना दृष्टि है ॥ ४१ ॥

रवींदुसितसौम्यास्तु बलिनः पूर्णवीक्षणे ।
अर्धेक्षणे सुराचार्यस्त्रिपात्पादार्धयोः कुजः ॥ ४२ ॥
पादेक्षणे बली सौरिर्वीक्षणाद्बलमीरितम् ।
तिर्यक् पश्यन्ति तिर्यञ्चो मानुषाः समदृष्टयः ॥४३॥

सूर्य, चंद्र, शुक्र, बुध ये पूर्णदृष्टिसे बलवान् हैं, आधी दृष्टि याने नवम पंचममें गुरु बलवान् है, मंगल चार आठ तीन ग्यारह याने त्रिपात् पादार्धदृष्टिसे बलवान् है. शनि पाद दृष्टिसे दशम दृष्टिसे बलवान् है । तात्पर्य यह कि, सूर्य, शुक्र, चंद्र,

बुध ये प्रथम तथा सप्तम घरको पूर्णदृष्टिसे देखते हैं, नवम पंचम घरको गुरु पूर्णदृष्टिसे देखताहै, चौथे आठवें, तीसरे ग्यारहवें मंगल तथा दशम घरको शनि पूर्ण देखता है । तिर्यञ्च मेष, वृषभ, सिंह, वृश्चिक य तिरछी नजरसे देखते हैं, मनुष्य समदृष्टि हैं। (मनुष्य मिथुन कन्या तुला धन कुंभ ये हैं) ॥४२॥४३॥

ऊर्ध्वेक्षणौ पत्ररथावधोनेत्राः सरीसृपाः ।
अन्योन्यालोकिनौ जीवचंद्रावूर्ध्वेक्षणो रविः ॥ ४४ ॥

पक्षी मकर मीन ये ऊर्ध्वदृष्टि हैं । सरीसृप, कर्क, वृश्चिक ये नीचे देखते हैं, गुरु चंद्र ये दोनों परस्पर देखते हैं, सूर्य ऊपर देखे हैं ॥ ४४ ॥

पश्यत्यारः कटाक्षेण पश्यतोऽधः कवीन्दुजौ ।
एकदृष्टयाहिमंदौ च ग्रहाणामवलोकनम् ॥ ४५ ॥

मंगल कटाक्षसे यानी तिरछा देखता है; शुक्र बुध ये दोनों नीचे देखते हैं । शनि राहु एकनजरसे देखते हैं इस कारणसे काणे हैं । इस प्रकार ग्रहोंकी दृष्टि वर्णन करी है ॥ ४५ ॥

ग्रहाणां राशिस्थानवर्णनम् ।

मेषः प्राच्यां धनुः सिंहावग्नावुक्षा च दक्षिणे ।
मृगकन्ये च नैर्ऋत्यां मिथुनं पश्चिमे ततः ॥ ४६ ॥

मेष पूर्वमें, धन सिंह आग्नेयीमें, दक्षिणमें वृषभ राशि है, मकर कन्या नैर्ऋत्यमें, पश्चिममें मिथुन है ॥ ४६ ॥

वायुभागे तुलाकुंभावुदीच्यां कर्क उच्यते ।
ईशभागेऽलिमीनौ च ज्ञेया नष्टादिसूचकाः ॥ ४७ ॥

वायव्यकोणमें तुला और कुंभ, उत्तरमें कर्क, ईशानमें वृश्चिक मीन हैं, खोई रकम जानी जाती है ॥ ४७ ॥

अर्कशुक्रारराह्वार्किचन्द्रज्ञगुरवः क्रमात्।
पूर्वादीनां क्रमादीशाः क्रमान्नष्टादिसूचकाः ॥ ४८ ॥

सूर्य पूर्वमें,शुक्र आग्नेयीमें, मंगल दक्षिणमें, राहु निर्ऋतिमें, शनि पश्चिममें, वायव्यमें चंद्र, उत्तरमें बुध, ईशानमें गुरु इस प्रकार आठ दिशाओंके मालिक हैं गई रकमके देखनेमें हैं. तात्पर्य्य यह है कि, जब किसी पदार्थकी दिशा जानना हो जैसे अमुकपदार्थ किस दिशामें है वा वह वस्तु किस दिशासे यहाँ आवेगी ? इत्यादि ऐसे अवसरोंपर ग्रह तथा राश्यनुकूल उक्त दिशा बतलाना ॥ ४८ ॥

ग्रहाणां राशीनां च पुंस्त्वादिभेदवर्णनम्।

मेषयुग्मधनुःकुंभतुलासिंहाश्च पूरुषाः।
राशयोऽन्ये स्त्रियः प्रोक्ता ग्रहाणां भेद उच्यते ॥४९॥
पुमांसोऽर्कारगुरवः शुक्रेन्दुभुजगाः स्त्रियः।
मंदज्ञकेतवः क्लीबा ग्रहभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ ५० ॥

मेष, मिथुन, धन, कुंभ, तुला, सिंह ये पुरुष हैं और शेष राशि स्त्री हैं। अब ग्रहोंके भेद कहते हैं—सूर्य, मंगल, गुरु ये पुरुष हैं। शुक्र, चंद्र, राहु ये स्त्रीग्रह हैं। शनि, बुध, केतु, नपुंसक ग्रह हैं। इसप्रकार ग्रहोंका भेद कहा है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

तुलाकोदण्डमिथुनघटकन्या नराः स्मृताः।
एकाकिनौ मेषसिंहौ वृषकर्कालिकन्यकाः ॥ ५१ ॥

एकाकिन्यः स्त्रियः प्रोक्ताः स्त्रीयुग्मं मकरान्तिमौ ।
एकाकिनोर्केन्दुकुजाः शुक्रज्ञार्क्यहिमंत्रिणः ॥ ५२ ॥
एते युग्मग्रहाः प्रोक्ताः शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ५३ ॥

तुला, धन, मिथुन, कुंभ, कन्या ये पुरुष हैं. मेष, सिंह ये अकेले पुरुष हैं। वृष, कर्क, वृश्चिक ये अकेली चलनेवाली स्त्री हैं। मकर, मीन स्त्रियोंकी जोडी हैं। सूर्य, चंद्र, मंगल ये अकेले जानेवाले हैं। शुक्र, बुध, शनि, गुरु, राहु ये जोडीसे जानेवाले हैं। ऐसा ज्ञानप्रदीपका मत है ॥ ५१–५३ ॥

राशीनां विप्रत्वादिवर्णवर्णनम् ।

विप्राः कर्क्यलिमीनाश्च धनुःसिंहक्रिया नृपाः ।
तुलायुग्मघटा वैश्याः शूद्रा नक्रोक्षकन्यकाः ॥५४॥

कर्क, वृश्चिक, मीन ये ब्राह्मण हैं। मेष, सिंह, धन क्षत्रिय हैं। तुला, मिथुन, कुंभ ये वैश्य हैं। मकर, वृषभ, कन्या ये शूद्र हैं॥ ५४ ॥

नृपावर्ककुजौ विप्रौ बृहस्पतिनिशाकरौ ।
बुधो वैश्यो भृगुः शूद्रो नीचावार्किभुजङ्गमौ ॥५५॥

गुरु, चंद्र, ब्राह्मण हैं। सूर्य, मंगल क्षत्रिय हैं। बुध वैश्य है। शुक्र शूद्र है। शनि राहु नीचजाति हैं ॥ ५५ ॥

राशि–ग्रहाणां रक्तादिवर्णवर्णनम् ।

रक्ता मेषधनुःसिंहाः कुलीरोक्षतुलाः सिताः ।
कुंभालिमीनाःश्यामाःस्युः कृष्णा युग्माङ्गनामृगाः ५६

मेष, धन, सिंह लाल हैं। कर्क, वृषभ, तुला ये सफेद हैं। कुम्भ, वृश्चिक, मीन श्याम हैं।मिथुन, कन्या, मकर य काले हैं५६

शुक्रः श्वेतः कुजो रक्तः पिंगलाङ्गो बृहस्पतिः ।
बुधःश्यामःशशी श्वेतो रक्तःसूर्योऽसितःशनिः ॥
राहुश्च कृष्णवर्णः स्याद्वर्णभेदा उदाहृताः ॥ ५७ ॥

चंद्र, शुक्र, सफेद हैं । मंगल लाल है । गुरु पीत तथा (पिंगलांग) भूरेरंगका है। बुध श्याम, सूर्य लाल हैं, शनि रा कालेरंगके हैं इसप्रकारसे रंगोंका भेद वर्णन करा है ॥ ५७ ॥

ग्रहाणामाकृतिवर्णनम् ।

दीर्घवृत्तं तथाष्टास्रं चतुरस्रायतं तथा ।
दीर्घश्चेतिक्रमादेते सूर्याद्याकृतयो मताः ॥ ५८ ॥

सूर्य चौकोन, चंद्र गोल, मंगल कृश, बुध मध्य, गुरु त्रिकोण, शुक्र लंबा गोल, शनि आठकोन, राहु चौकोन, केतु लंबा है ॥ ५८ ॥

ग्रहाणां किरणवर्णनम् ।

पंचैकविंशद्गिरयो नवाशाः षोडशाब्धयः ।
भास्करादिग्रहाणां तु किरणाः परिकीर्तिताः ॥५९ ॥

सूर्यके ५, चंद्रके २१, मंगलके ७, बुधके ९, गुरुके १०, शुक्रके १, शनिके ४ ॥ ५९ ॥

राशीनां किरणाः ।

वसुरुद्रर्तुरुद्राश्च वह्निषट्कचतुर्दश ।
विश्वाशाः शतवेदाश्च चतुस्त्रिंशदजादिनाम् ॥ ६० ॥
कुलीराजतुलाकुंभकिरणा वसुसंख्यया ।
मिथुनोक्षमृगाणां च किरणा ऋतुसंख्यया ॥ ६१ ॥
सिंहस्य किरणाः सप्त कन्याकार्मुकयोस्तथा ।
चत्वारो वृश्चिकस्योक्ताः सप्तविंशज्झषस्य च ॥६२॥

सप्ताष्टशरवह्न्यद्रिरुद्रयुग्माब्धिषड्वसु ।
सप्तविंशतिसंख्याश्च मेषादीनां परे विदुः ॥ ६३ ॥

इन श्लोंकोका अर्थ—राशियोंकी किरण तीनों मतोंसे राशिचक्रमें है सो देखलेना ॥ ६१–६३ ॥

ग्रहाणां ह्रस्वत्वादिवर्णनम् ।

कुजेन्दुशनयो ह्रस्वा दीर्घा जीवबुधोरगाः ।
रविशुक्रौ समौ प्रोक्तौ शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ६४ ॥

मंगल चंद्र शनि छोटे कदके हैं, गुरु, बुध, राहु लंबे कदके हैं, सूर्य शुक्र मध्यम कदके हैं ॥ ६४ ॥

ग्रहणां योजनानि ।

आदित्यशनिसौम्यानां योजनान्यष्टसंख्यया ।
शुक्रस्य षोडशोक्तानि गुरोश्च दशयोजनम् ॥
कुजस्य सप्त विख्याताः शशाङ्कस्यैकविंशतिः ॥६५॥

सूर्य, शनि, बुध इनके आठ योजन हैं, शुक्रके सोलह योजन हैं, गुरुके दश योजन हैं, मंगलके सात, चन्द्रमाके इक्कीस योजन हैं ॥ ६५ ॥

ग्रहाणां वयः ।

भूमिजः षोडशवयाः शुक्रः सप्तवयास्तथा ।
विंशद्वयाश्चंद्रसुतो गुरुस्त्रिंशद्वयाः स्मृतः ॥ ६६ ॥
शशांकः सप्ततिवयाः पंचाशद्भास्वतो वयः ।
शनैश्चरस्य राहोश्च शतसंख्यावयो भवेत् ॥ ६७ ॥

मंगल सोलह वरसके उमरका है, शुक्र सातबरसका है, बुध बीस बरसका, गुरु तीसबरसका, चंद्र सत्तरबरसका, सूर्यकी उमर पचास वर्षकी, शनि राहु दोनोंकी सौ वर्षकी उमर है ॥ ६६–६७ ॥

ग्रहाणां रसाः ।

तिक्तं शनेश्च राहोश्च मधुरं तु बृहस्पतेः ।
अम्लं भृगोर्विधोः क्षारः कुजस्य कुलजो रसः ।
तुवरः सोमपुत्रस्य भास्करस्य कटुर्भवेत् ॥ ६८ ॥

शनि राहु दोनोंको कटु रस, गुरुको मीठा, शुक्रको खट्टा, चंद्रको खारा, मंगलको मजमवाँ, बुधको तोरा, सूर्यको कडवा रस प्रिय है ॥ ६८ ॥

ग्रहाणां लांछनानि शृङ्गाणि च ।

सौम्यार्ककुजजीवानां दक्षिणे लांछनं भवेत् ।
फणींदुशुक्रमंदानां वामे भवति लांछनम् ॥ ६९ ॥

बुध, सूर्य, मंगल, गुरु इनके दक्षिण अंगमें चिह्न हैं। राहु, चंद्र, शुक्र, शनि इनके बाँयें अंगमें चिह्न होता है ॥ ६९ ॥

शुक्रस्य वदने पृष्ठे कुजस्यांसे बृहस्पतेः ।
कक्षे बुधस्य चन्द्रस्य मूर्ध्नि भानोः कटीतटे ॥ ७० ॥

अब अलग अलग अंग सब ग्रहोंके वर्णन करते हैं—शुक्रका अंग मुख यानी चेहरा, मंगलकी पीठ, गुरुका कंधा, बुधकी कांख, चंद्रका माथा, सूर्यकी कमर ॥ ७० ॥

ऊरौ शनेः पदे राहोर्लाञ्छनानि भवन्ति हि ।
बुधादित्यौ भग्नशृङ्गौ चन्द्रः शृङ्ग विवर्जितः ॥७१॥

शनिकी जंघा, राहुका पाँव, ऐसा सब ग्रहोंके चिह्न कहे हैं. सूर्य बुध दोनोंके टूटे सींग हैं, चंद्र विना सींगका है ॥ ७१ ॥

तीक्ष्णशृङ्गः कुजो दीर्घशृङ्गौ जीवकवी तथा ।
शनिराहू वक्रशृङ्गौ शृङ्गभेद उदाहृतः ॥ ७२ ॥

मंगल तीखे सींगका, गुरु शुक्र लंबे सींगवाले, शनि राहु टेढे सींगके हैं। इस प्रकार सींगोंका वर्णन किया है ॥ ७२ ॥

राशीनां स्थिरत्वादिस्थितिस्थानानि ।

वृषसिंहालिकुंभाश्च तिष्ठंति स्थिरराशयः ।
कर्किनक्रतुलामेषाश्चरन्ति चरराशयः ।
युग्मकन्याधनुर्मीनाः स्वपन्त्युभयराशयः ॥ ७३ ॥

वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ ये स्थिरराशि हैं। कर्क मकर तुला मेष ये चर राशि हैं, बाकी द्विस्वभाव हैं ॥ ७३ ॥

राशिस्थितिज्ञानेन नष्टवस्तु स्थितिज्ञानम् ।

धनुर्मेषौ वनप्रान्ते कन्यका मिथुनं पुरे ।
हरिचापतुलामीनमकराः सलिलेषु च ।
नद्यां कुलीरः कुल्यायां वृषः कुम्भः पयोघटे ॥ ७४ ॥

धन मेष वनमें, मिथुन कन्या गांवमें, सिंह धन तुला मीन मकर जलमें, कर्क नदीमें, वृष नहरमें, कुंभ जलके घडामें॥ ७४ ॥

वृश्चिकः कूपसलिले राशीनां स्थितिरीरिता ।
वनकेदारकोद्यानकुल्याद्रिवनभूमयः ॥ ७५ ॥

वृश्चिक कूवाँके जलमें सोतेहैं । अब राशियोंके रहनेके स्थान कहते हैं—मेष वन, वृषभ खेत, मिथुन बाग, कर्क नहर, सिंह पहाड, कन्या वनभूमिमें ॥ ७५ ॥

आपगातीरसद्वापीतडागसरितस्तथा ।
जलकुंभश्च कूपश्च नष्टद्रव्यादिसूचकाः ॥ ७६ ॥

तुला नदीका तीर, वृश्चिक बावडी, धन तालाव, मकर नदी, कुंभ भरी गागर, मीन कूँवाँ ये जगह खोई हुई चीजको देखनेकी हैं ॥ ७६ ॥

घटकन्यायुग्मतुलाग्रामेऽजाली धनुर्हरी ।
वने चाथ कुलीराक्षनक्रमीना जले स्थिताः ॥ ७७ ॥

मिथुन कन्या तुला कुंभ ये गाँवमें, मेष वृश्चिक धन, सिंह वनमें या गाँवके बाहर, कर्क वृषभ मकर मीन जलमें हैं ॥ ७७॥

ग्रहाणां स्थितिज्ञानम् ।

विपिने शनिभौमाऽर्का भृगुचन्द्रौ जले स्थितौ ।
बुधजीवौ च नगरे नष्टद्रव्यादिसूचकाः ॥ ७८ ॥

सूर्य मंगल शनि वनमें ठहरते हैं, चंद्र और शुक्र जलमें रहते हैं, बुध गुरु गाँवमें हैं, ये खोईहुई चीजका स्थान बतलानेवाले हैं ॥ ७८ ॥

भौमो भूमिर्जलं काव्यशशिनौ बुधभोगिनौ ।
निष्कण्ठं चैव रन्ध्रं च गुरुभास्करयोर्नभः ॥ ७९ ॥

मंगल जमीनमें हैं, चंद्र शुक्र जलमें हैं, बुध, राहु विनाकांटेका तथा छेदवाला स्थानमें हैं, गुरु सूर्य दोनों आकाशमें हैं ॥७९॥

मंदस्य युद्धभूमिश्च बलवर्तिग्रहे स्थिते ।
सूर्यार्क्यारबले भूमौ गुरुशुक्रबले च खे ।
चंद्रसौम्यबले मध्ये कैश्चिदेवमुदाहृतम् ॥ ८० ॥

शनिकी लडाईकी जमीन, जो बलवान् ग्रह होवे उससे फल जानो; सूर्य मंगल शनि ये बलवान् होवें तो जमीन जानो । गुरु शुक्र बलवान् होवें तो आकाशमें जानो । चंद्र बुध बलवान् होवें तो बीचमें ऐसा कोई ज्योतिषीने कहा है ॥ ८० ॥

ग्रहाणां कालादिज्ञानम् ।

निशादिवससंध्याश्च भानुयुग्राशिमादितः ॥ ८१ ॥

जिसराशिमें सूर्य होवें उसीराशिको आरंभ करके निशा दिवस संध्या कहै। जैसे प्रश्नके समयमें सूर्य मिथुनका है तो और आरूढ लग्न वृष है। अब मिथुनसे वृषतक निशादिवस संध्या इस क्रमसे गिनते आये तो वृषपर संध्या आई अतः पृच्छकको संध्याका समय बतला देना ॥ ८१ ॥

चरराशिवशादेवमिति केचित्प्रचक्षते ।
ग्रहेषु बलवान्यस्तु तद्वशात्फलमीरयेत् ॥ ८२ ॥

किसी ज्योतिषीके मतसे चर रात्रि, स्थिर दिन, द्विस्वभाव सायंकाल ऐसा कहते हैं, बलवान् ग्रहोंसे फल कहना ॥ ८२ ॥

शनेर्वर्षं तदर्धं स्याद्भानोर्मासद्वयं विदुः ।
शुक्रस्य पक्षो जीवस्य मासो भौमस्य वासराः ॥८३॥

शनिका १ वर्ष छः महीना, सूर्यके दो मास, बुध शुक्रके पद्रहदिन, गुरुका एक महीना, भौमका एक दिन ॥ ८३ ॥

इंदोर्मुहूर्तमित्युक्तं ग्रहाणां बलतो भवेत् ।
एतेषां घटिका प्रोक्ता उच्चस्थानजुषां क्रमात् ॥८४ ॥

चंद्रकी घडी दो यह अवधि समका ग्रह हो तो कहना. यदि उच्चका ग्रह हो तो पूर्वोक्त अवधिके स्थानमें उतनीही घटी कहना ॥ ८४ ॥

स्वगृहेषु दिनं प्रोक्तं मित्रभे मासमादिशेत् ।
शत्रुस्थानेषु नीचेषु वत्सरानाहुरुत्तमान् ॥ ८५ ॥

अपने घरका ग्रह हो तो पूर्वोक्त अवधिके स्थानमें दिन कहना और मित्रराशिका हो तो उतनेही मास कहना । शत्रु और नीच स्थानका हो तो पूर्वोक्त अवधिकी जगह उतनेही वर्ष कहना यह स्वाभाविक अवधि हुई। इसमें राशिका संस्कार देनेसे और रद्द बदली होगी अर्थात् चर लग्न हो तो यथास्थित अवधि जो ग्रह बलानुसार है कहना । परंतु स्थिरसे उस कालका द्विगुण और द्विस्वभावसे निर्द्धारित अवधिका त्रिगुण काल कहना इन सबका स्पष्ट भाव धातुचिन्ताज्ञार्थचक्रसे विदित होगा ॥

उदाहरण—जैसे प्रश्नलग्नमें कार्येश शनैश्चर मकर राशिस्थ है यह शनिका घर है इसलिये पूर्वोक्त १ वर्ष एकदिन हो गया; राशिसंस्कार देनेके लिये लग्न देखी तो स्थिर है अतः एकका दो दिन हो गया ॥ ८५ ॥

ग्रहाणां दिग्ज्ञादिविचारः ।

सूर्यारजीवविच्छुक्रशनिचन्द्रभुजङ्गमाः ।
प्रागादिदिक्षु क्रमशश्चरेयुर्यामसंख्यया ॥ ८६ ॥

सूर्य, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, शनि, चंद्र राहु ये ग्रह पूर्वसे लेकर आठों दिशाओंमें पहर पहर चलते हैं ॥ ८६ ॥

प्रागादीशानपर्यन्तान्वारेशाद्यन्तकान्ग्रहान् ।
प्रभाते प्रहरे चन्द्रे द्वितीयेग्न्यादिकोणतः ॥ ८७ ॥

एवं याम्ये तृतीये च क्रमेण परिकल्पयेत् ।
भूतं भावि वर्तमानं वारेशाद्या भवन्ति हि ॥ ८८ ॥
तद्दिने युक्तचन्द्रर्क्षाद्यावद्भिरुदयादिकम् ।
तावद्भिर्वासरैः सिद्धिः केचिदंशाधिपाद्विदुः ॥ ८९ ॥

प्रातःकाल पहले पहरमें पूर्वमें, दूसरे पहरमें आग्नेयीमें, तीसरे पहरमें दक्षिणदिशामें इत्यादि । रवि भूत, मंगल भविष्य, गुरु वर्तमान, बुध भूत, शुक्र भविष्य, शनि वर्तमान, चंद्र भविष्य, राहु भूत । जिसदिन प्रश्न करे उस रोज जिस राशिका चंद्र होवे उस राशिसे जितना लग्न आदि होवे उतने दिनोंसे सिद्ध होवे अथवा चंद्रनवांशसे जानो । चंद्रनवांशसे जितनी दूर प्रश्नलग्न होवे उतने दिनोंसे सिद्धि है ये भी कोईका मत है॥८८॥८९॥

अर्कलग्नज्ञानम् ।

प्रश्ने निश्चित्य घटिकाः सार्द्धद्विघटिकाः क्रमात् ।
सार्द्धद्विघटिपर्यन्तमर्कलग्नं प्रचक्षते ॥ ९० ॥
तद्यथा काललग्नं तु ज्ञात्वा पूर्वादिकं न्यसेत् ।
तद्वशात्प्रष्टुरारूढं ज्ञात्वा चारूढकेश्वरम् ।
आरूढाधिपतिर्यत्र प्रयातस्तत्र निर्गमः ॥ ९१ ॥
अर्कोनलग्नस्य लवाः खबाण-चन्द्रावशेषे-
रहितास्त्रिभक्ताः । वारान्विताः सप्तहृताः
कृतास्ते कालाख्यहोरापतयोऽर्कतः स्युः ॥ ९२ ॥

प्रश्नकी घटियोंका निश्चय करके ढाईघडीके हिसाबसे अर्कलग्न कहते हैं पूर्वसे प्रारंभकरे, चक्रसे अर्थ जानो । प्रश्न करने वालेका

आरूढलग्न जानकर आरूढ लग्नका स्वामी जहाँ होगा उस तरफसे चोरीका माल निकला है "अर्कोन लग्न इति" स्पष्टलग्न-मेंसे स्पष्ट सूर्य घटावे, जो शेष रहे उनके अंश कर इनको दो जगह रखना, एक जगहमें १५० डेढसौका भाग देना जो कुछ शेष रहे उसको दूसरी जगहके स्थित अंशमेंसे घटा देना और जो बाकी रहे उसमें तीनका भाग देना और शेषमें वार जोड देना और सातका भाग देना जो कुछ शेष रहे उनको रविवारसे गिनना, वही कालहोरा है । यह ज्ञानप्रदीपका मतहै ॥ ग्रंथान्तरोंमें दूसरे प्रकारसे काल-होरा जानना लिखा है ॥ ९०-९२ ॥

दिशा	लग्न	घटी
पूर्व	१	२॥
	२	५
	३	७॥
आग्नेय	४	१०
	५	१२॥
	६	१५
दक्षिण	७	१७॥
	८	२०
	९	२२॥
नैर्ऋत्य	१०	२५
	११	२७॥
	१२	३०
पश्चिम	१	३२॥
	२	३५
	३	३७॥
वायव्य	४	४०
	५	४२॥
	६	४५
उत्तर	७	४७॥
	८	५०
	९	५२॥
ईशान	१०	५५
	११	५७॥
	१२	६०

धातुमूलादिज्ञानम् ।

मेषकर्कितुलानक्रधनूराशय ईरिताः । कुंभसिंहालि-वृषभा ब्रुवते मूलराशयः । धनुर्मीननृयुक्कन्या राशयो जीवसंज्ञकाः ॥ ९३ ॥ कुजेन्दुसौरिभुजगा धातवः परि-कीर्तिताः ॥ मूलं भृगुदिनाधीशौ जीवौ धिषणसोमजौ ॥

मेष, कर्क, तुला, मकर ये धातुराशि हैं । कुंभ, सिंह, वृश्चिक ये मूलराशि हैं । मिथुन, कन्या, धन, मीन जीवराशि हैं । चर

धातु। स्थिर मूल। द्विस्वभाव जीवहैं। मंगल, चंद्र, शनि, राहु धातु है। सूर्य, शुक्र मूल हैं। बुध, गुरु जीव हैं॥ ९३-९४॥

गृहवशेन धातुमूलफलादिज्ञानम्।

स्वक्षेत्रे भानुवच्चन्दो धातुरन्यत्र पूर्ववत्।
स्वक्षेत्रे भानुजो वल्लीस्वक्षेत्रे धातुरिन्दुजः॥ ९५॥

चन्द्र अपने घरका याने कर्कमें होवे तो सूर्यके समान फल देता है। इसका अर्थ यह है कि, कर्कके चंद्रसे मूल जानना और राशिका चंद्र होवे तो धातु जानो, ऐसेही मकर कुंभका शनि बेलरी बताता है, मिथुन कन्याका बुध धातु बताताहै॥९५॥

ताम्रं भौमस्त्रपुर्ज्ञश्च काञ्चनं धिषणो भवेत्।
रौप्यं शुक्रः शशी कांस्यमायसं मन्दभोगिनौ॥ ९६॥

मंगल तांबा, बुध रांग, गुरु सुवर्ण, शुक्र चांदी, चंद्र कांसा, शनि राहु लोहा॥ ९६॥

भौमार्कमंदशुक्रास्तु स्वस्वलोहाः स्वभस्थिताः।
चन्द्रज्ञगुरवः स्वस्वलोहाः स्वक्षेत्रमित्रगाः॥ ९७॥

मंगल, सूर्य, शनि शुक्र ये ग्रह अपने अपने घरके होवें तो अपनी अपनी धातुओंको बताते हैं. चंद्र, बुध, गुरु ये अपने घरके या मित्रके घरके होवें तो अपनी धातु बताते हैं॥९७॥

मिश्रे मिश्रफलं ब्रूयाद्ग्रहाणां च बलं क्रमात्।
शिलां भानोर्बुधस्याद्दुमृत्पात्रं त्वपरं विधोः॥ ९८॥

भौमार्क मंद शुक्र मित्रके घरमें होवें तो मिलीधातु बताते हैं. चन्द्र, बुध, गुरु शत्रुके घर होवें तो मिलीधातु बताते हैं। सूर्यकी शिला, चंद्र बुध मट्टीका बरतन बताते हैं॥ ९८॥

सितस्य मुक्तास्फटिके प्रवालं भूसुतस्य च ।
आयसं भानुपुत्रस्य मंत्रिणश्च मनःशिलाम् ॥ ९९ ॥
स्वोच्चादिके धाम्यधातौ तथा धाम्यं तु नीचगे ।
घटिताघटितं ब्रूयाच्छास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ १०० ॥

शुक्रके मोती स्फटिक, मंगलका मूंगा, शनिका लोह, गुरुकी मैनसिल । उच्चका ग्रह हो तो धाम्य तथा घटित धातु कहै और नीचका ग्रह हो तो अधाम्य तथा अघटित धातु कहै यह ज्ञानप्रदीपका मत है ॥ ९९ ॥ १०० ॥

नीलं शनेश्च वैडूर्यं भृगोर्मरकतं विदः ।
सूर्यकान्तं दिनेशस्य चंद्रकान्तं निशापतेः ॥ १०१ ॥

शनिका नीलम्, शुक्रका लसुनियाँ, बुधका पन्ना, सूर्यका सूर्यकांत याने आतिशीशीशा, चंद्रका चंद्रकांत ॥ १०१ ॥

ग्रहवशेन वर्णभूषणादिज्ञानम् ।

तत्तद्ग्रहवशाद्वर्णं तत्तद्राशिवशादपि ।
बलाबलविभागेन मिश्रे मिश्रफलं वदेत् ॥ १०२ ॥

अब ग्रहसे और राशिसे रंग कहो, बलके अनुसार कहो अथवा मिलाहुआ रंग कहो ॥ १०२ ॥

नृराशौ नृखगैर्दृष्टे युक्ते वा मर्त्यभूषणम् ।
तत्तद्राशिवशादन्यत्तत्तद्रूपं विचिंतयेत् ॥ १०३ ॥

धातु तो समझनेमें आया परन्तु कौनका भूषण है इस ज्ञानके वास्ते वर्णन करते हैं। आदमीके राशिमें आदमी ग्रह देखे वा उस घरमें बैठनेवाला ग्रह मनुष्य होवे तो मनुष्यका गहना कहै, राशिके रूपस कहै और सब विचार इसी तरह करना ॥ ३ ॥

आगे उपर्युक्तविषयोंका चक्र है सो विषयानुसार देख लेना ।

अथ स्वप्रकाश.ऽप्रकाशग्रहाणां संज्ञास्वरूप मित्र मित्रचक्रम् ।

सूर्य	चंद्र	परिधि	गुरु	धूम्र	बुध	शनि	भोगी	इंद्रचाप	मंगल	अशु	शुक्र	राहु	केतु	ग्रहाः
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	७	१	उच्चराशि
१०	३	०	५	०	१५	२०	०	०	२८	०	२७	०	०	उच्च.शाः
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१	७	नीचराशि
गुरु	गुरु बुध	०	र.चं.बु. शु.श.	०	चं. मं. गु.शु.श.	बु.गु. शु.	०	०	बु.शु.	०	बु.गु. मं.श.	शु.बु.	०	मित्राणि
चं.मं.बु. शु.श.	र.मं. शु.श.	०	मं.	०	र.	र.चं. मं.	०	०	र.चं. गु.श.	०	र.चं.	०	०	शत्रवः
९ १२	३-९ ६-१२	०	५-२ ४-७ ० ३-१० ६-११	०	४-१ ८-२ ९-१२ ११-७ १०	३-६ ९-१२ ७-२	०	०	३-६ २-७	०	३-६ ९-१२ १-८ १०-११	७-२ ३-६ १०-९	०	मित्रराशयः
५	४	४	९ १२	४	३ ६	१० ११	०	५	१ ८	५	७ २	०	०	स्वगृह
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गणना

अथ ग्रहसंज्ञाचक्रम् ।

ग्रहाः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पृष्ठोदयादि	पृष्ठोदय	तिर्यक्उ०	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	तिर्यक्उदय
पादसंज्ञा	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	बहुपद	द्विपद	द्विपद	चतुष्पद	०	०
गति	जानु	शीघ्र	पद्भ्यां	पद्भ्यां	पद्भ्यां	पद्भ्यां	जानु	०	०

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	राशयः
पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय उभयोदय	शीर्षोदय उभयोदय	शीर्षोदय उभयोदय	पृष्ठोदयादि
चतुष्पद	चतुष्पद	मानव	बहुपद	चतुष्पद	मानव	मानव	बहुपद	०	चतुष्पद	मानव	पक्षी	संज्ञा
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य	ईशान	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य	ईशान	दिक्सूचना
पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष स्त्री
एकोनरः	एकास्त्री	बहुनर	एकास्त्री	एकोनरः	बहुनरः	बहुनरः	एकास्त्री	बहुनराः	द्वेस्त्रिय	बहुनराः	द्वे स्त्रियो	एकादिसं०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अंक

अथ राशिचक्रम् ।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर:	कुंभ	मीन
विप्रादि	क्षत्रिय	शूद्र	वैश्य	विप्र	क्षत्रिय	शूद्र	वैश्य	विप्र	क्षत्रिय	शूद्र	वैश्य	विप्र
वर्ण	रक्त	श्वेत	कृष्ण	श्वेत	रक्त	कृष्ण	श्वेत	श्याम	रक्त	कृष्ण	श्याम	श्याम
किरण	८	११	६	११	३	६	१४	१३	१०	१००	४	३४
मतांतर	७	८	५	३	७	११	२	४	६	८	७	२०
	८	६	६	८	७	७	८	४	७	६	८	२७
चरादि	चर	स्थिर	द्विस्व-	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व
स्थिति	वने	कुल्यायां	पुरे	नद्यां	सलिले	पुरे	जले	कूपे	वनजले	जले	जलघटे	जले
धात्वादि	धा.	मू.	जी.	धा.	मू.	जी.	धा.	मू.	जी.	धा.	मू.	जी.
वृक्षादि	क्षुद्रसस्य	लता	वृक्ष	लता	कंटकवृक्ष	वृक्ष	लता	क्षुद्रसस्य	शुभवृक्ष	कंटकद्रुम	कंटकद्रुम	इक्षु

ग्रहा:	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शृंगाणि	भग्नशृंगी	शृंगहीन	तीक्ष्णशृंग	भग्नशृंगी	दीर्घशृंगी	दीर्घशृंगी	भग्नशृंगी	भग्नशृंगी	भग्नशृंगी
धातुमूलादि	मूल	धातु	धातु	जीव	जीव	मूल	धातु	धातु	धातु
धातु	ताम्र	कांस्य	ताम्र	त्रपु	कांचन	रौप्य	लोह	लोह	लोह
रत्नादि	शिलासू-र्यकांत	मृतपात्र चंद्रकांत	प्रवाल	मृत्पात्र	मन:शीला	मुक्तास्फ-टिकमरकत	लोहपात्र नीलमणि	वैडूर्य	०
मूलचिंतायां	वृक्ष	लता	क्षुद्रधान्य	धान्यतृण विरुद्ध	धान्य इक्षु	चिंचा	कंटक वृक्ष	कंटक वृक्ष	कंटक वृक्ष

अथ ग्रहाणां दिगादिनियमाः ।

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दिशा	पू	वा	द	उ	ई	आ	प	नै	०
पुरुषादि	पु	स्त्री	पु	न	पु	स्त्री	न	स्त्री	न
युग्मकादि	एकाकी	एका.	एका.	युग्म	युग्म	युग्म	युग्म	युग्म	०
राजादि	नृप	विप्र	नृप	वैश्य	विप्र	शूद्र	नीच	नीच	नीच
वर्ण	रक्त	श्वेत	रक्त	श्याम	पीत	श्वेत	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
आकृति	चतुरस्र	वृत्त	कृश	मध्य	त्रिकोण	दीर्घवृ.	अष्टास्र	चतुरस्र	दीर्घ
ह्रस्वदीर्घादि	सम	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	सम	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ
योजनानि	१०	२१	७	१७	१०	१६	१७	०	०
वय	५०	७०	१६	२०	३०	७	१००	१००	१००
स्वादुपदार्थ	कटु	क्षार	कटु	तुअर	मधुर	अम्ल	तिक्त	तिक्त	०
[illegible]	दक्षिणे	वामे	दक्षिणे	दक्षिणे	दक्षिणे	वामे	वामे	वामे	०
[illegible]	मूर्द्धनि	मूर्द्धनि	पृष्ठे	वक्षे	अंसे	वदने	ऊरौ	पदे	पदे
किरण	५	२१	७	९	१०	१६	४	०	०

८८–८९ श्लोकोक्तचक्रम् ।

राहु भविष्य	रवि भूत	मंगल भविष्य
चंद्र भूत		गुरु वर्तमान
शनि वर्तमान	शुक्र भविष्य	बुध भूत

इति ग्रहविचारकाण्डम् ॥ २ ॥

अथ मूलकाण्डम् ३.

ग्रहवशेन क्षुद्रधान्यादिज्ञानम् ।

मूलचिन्ताविधौ मूलान्युच्यन्ते पूर्वशास्त्रतः ।
क्षुद्रसस्यानि भौमस्य सस्यानि बुधजीवयोः ॥ १ ॥

मंगलके छोटे नाज, बुध, गुरु दोनोंका नाज है ॥ १ ॥

तृणानि ज्ञस्य भानोश्च वृक्षाश्चंद्रस्य वल्लरी ।
गुरोरिक्षुर्भृगोश्चिंचा भूरुहाः परिकीर्तिताः ॥ २ ॥

बुधका घास, सूर्यके झाड, चन्द्रकी वल्लरी, गुरुका साँटा, शुक्रकी इमली । इसका विवरण राशिचक्रमें लिखा है ॥ २ ॥

शनिभौमोरगाणां च तिक्तकंटकभूरुहाः ।
अजाली क्षुद्रसस्यानि वृषकर्कतुला लताः ॥ ३ ॥

शनि, मंगल, राहु तीनोंके काँटेके वृक्ष और कडे स्वादके हैं, मेष वृश्चिक छोटे नाज, वृष, कर्क, तुला इनकी वल्लरी ॥ ३ ॥

कन्यकामिथुने वृक्षाः कण्टकद्रुर्घटो मृगः ।
इक्षुर्मीनः क्रमाच्चैव केचिदाहुर्मनीषिणः ॥ ४ ॥

मिथुन कन्या वृक्ष, कुम्भ मकर कांटेके झाड, मीन गन्ना ऐसा कोई आचार्य कहते हैं ॥ ४ ॥

अकंटकद्रुमाः सौम्याः क्रूराः कंटकभूरुहाः ।
युग्मकंटक आदित्यो भूमिजो ह्रस्वकंटकः ॥ ५ ॥
वक्रौ सकंटकौ प्रोक्तौ शनैश्चरभुजङ्गमौ ।
पापग्रहाणां क्षेत्राणि तथा कण्टकिनो द्रुमाः ॥ ६ ॥

---

१ कक्षाणि इति पाठान्तरम् ।

सौम्यग्रहोंके याने चन्द्र बुध गुरु शुक्र इनके झाड विना काँटेके हैं । क्रूर ग्रह—मंगल सूर्य शनि इन्होंके काँटेके झाड हैं, सूर्यके वृक्ष दो कंटकके, मंगल छोटे कंटकका वृक्ष, शनि राहु दोनोंके टेढे काँटेके वृक्ष, पापग्रहोंकी राशिनके भी काँटेके वृक्ष हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

श्लिष्टकक्षाणि सौम्यस्य भृगोर्निष्कंटकद्रुमाः ।
कदली चौषधीशस्य गिरिवृक्षा विवस्वतः ॥ ७ ॥

बुधके सघन घास, शुक्रके विना काँटेके वृक्ष जानो । चंद्रमाका वृक्ष केला, सूर्यके वृक्ष पहाड़के हैं ॥ ७ ॥

बृहत्पत्रयुता वृक्षा नारिकेलादयो गुरोः ।
तालाः शनिभुजङ्गानां सारासारौ तरू वदेत् ॥ ८ ॥

बडे पत्तोंके नारियल आदि गुरुके वृक्ष हैं, शनि राहुके तालवृक्ष हैं ॥ ८ ॥

सारहीनाः शनीन्द्वर्का अन्तःसारौ कवीज्यकौ ।
बहिःसाराः स्वराशिस्थाः शनीज्यकुजपन्नगाः॥ ९ ॥

शनि चंद्र सूर्य इन्होंके सारहीन जैसे अंड आदि, गुरु शुक्र दोनोंके अंतःसार सागं आदि, शनि गुरु मंगल राहु अपने राशिके होवें तो बहिःसार वृक्ष जैसे बाँस ॥ ९ ॥

अन्तःसाराः स्वराशिस्था बहिःसारास्तदन्यके ।
त्वक्कन्दपुष्पच्छदनफलपक्वफलानि च ॥ १० ॥

अपने घरका होवे तो अंतःसार जानो, अपने घरके न होवें तो बहिःसार जानो। अब सूर्यादिग्रहोंके त्वक् आदि कहते हैं त्वक् याने बकला छाल, कंद चंद्रका, फूल मंगलका और बुधका पत्ता, गुरुका फल, शनिका पक्काफल ॥ १० ॥

मूलं लता च सूर्याद्याः स्वस्वक्षेत्रेषु ते तथा।
मुद्गो ज्ञस्याढकी श्वेता भृगोश्च चणकं कुजः ॥ ११ ॥
तिलः शशाङ्को निष्पावा रविर्जीवोरुणाढकी।
माष्यं शनिभुजङ्गौ च तथान्यद्धान्यमुच्यते ॥ १२ ॥

सूर्यकी जड, राहुकी लता यह स्वक्षेत्री ग्रहसे बताना और बुधकी मूग, शुक्रकी सफेद तोर, मंगलका चना, चंद्रके तिल, रविका निष्पाव है। (निष्पाव वालोरकी किसमका एकधान्य है जिसे हिन्दीम भटवासु महाराष्ट्रीमें पावटे और गुजरातीमें वाल कहते हैं) गुरुकी लाल तुवर, शनि राहु दोनोंका उडदका अन्न। ऐसाही औरभी नाज कहते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

प्रियंगुर्भूमिपुत्रस्य बुधस्य व्रीहयः स्मृताः।
स्वस्वरूपानुरूपेण तेषां धान्यानि निर्दिशेत् ॥ १३ ॥

मंगलका प्रियंगु इसे गुजराती, काँगनी कहते हैं दक्षिणी राले कहते हैं। बुधके चावल, औरभी ग्रहोंके रूपसे नाज कहना ॥ १३ ॥

उन्नते भानुकुजयोर्वल्मीके बुधभोगिनोः।
सलिले चन्द्रसितयोर्गुरोः शैलतले तथा ॥ १४ ॥

अब ग्रहोंकी जगह कहते हैं—सूर्य मंगल दोनोंका ऊंचा

स्थान है । बुध, राहु, इन दोनोंका स्थान बँमई । चंद्र, शुक्र जलमें, गुरु पहाडके तलमें ॥ १४ ॥

शनेः कृष्णशिलास्थाने मूलान्येतानि भूमिषु ।
वर्ण रसं कुलं रत्नमायुधं चोक्तमूलिकाः ॥ १५ ॥

शनिकी काली शिला स्थानमें ये मूल हैं । इसप्रकारसे मूल जानकर कहै ॥ १५ ॥

पत्रं फलं पक्वफलं त्वङ् मूलं पूर्वभाषितम् ।
ग्रहोक्तमूलिकां ज्ञात्वा कथयेदुदयादिभिः ॥ १६ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे मूलकाण्डः ॥ ३ ॥

यहाँतक मूलपदार्थोंका वर्णन रस इत्यादि तथा पत्र फल पक्वफल छालमूल कहेगये सो लग्न देखकर फल कहो ॥ १६ ॥

इति प्रश्नज्ञानप्रदीपग्रंथे श्रीपवाँरवंशावतंस-महाराजशंभूसिंह-
सुठालियाधीशकृतायां सुबोधिनीभाषाटीकायां
मूलकांडं समाप्तम् ॥

अथ भूतकाण्डम् ४.

पञ्चभूतस्वरूपादिवर्णनम् ।

अथ जीवचिन्तितज्ञानार्थं ग्रहसंज्ञाचक्रम् ।

ग्रहाः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तत्त्वादि	पिता	माता	अग्नि	जल	आकाश	वायु	भूमि	०	०
पंचेंद्रियाणि	०	०	नेत्र	जिह्वा	कर्ण	त्वक्	घ्राण	०	०
विषयः	०	०	रूप	रस	शब्द	स्पर्श	गन्ध	०	०
ज्ञानसंज्ञा	०	०	३	२	५	४	१	०	०
प्राणिवर्गाः	०	०	षट्पद	शंखादयः	सर्पादयः	देवादयः	वृक्षादयः	०	०
ग्रहावयवाः	०	०	मुख	पाद	द[illegible]	जि[illegible]	श्रोत्र	०	०

चन्द्रो माता पितादित्यः सर्वेषां जगतामपि । गुरुशुक्रारविन्मन्दाः पंचभूतस्वरूपिणः ॥ १ ॥ श्रोत्रत्वङ्नेत्ररसनाघ्राणाः पञ्चेन्द्रियाणि च । शब्दस्पर्शौ रूपरसौ गन्धश्च विषया अमी । ज्ञानं गुर्वादिपञ्चानां ग्रहाणां कथयेत्क्रमात् ॥ २ ॥ गुरोः पंच भृगोश्चाब्धिर्ज्ञस्य द्विस्त्रिः कुजस्य च । एकज्ञानं शनेरुक्तं शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ३ ॥ बुधवर्गा इमे प्रोक्ताः शंखः शुक्तिर्वराटकाः । मत्कुणाः शिथिलीयूकामक्षिकाश्च पिपीलिकाः । भौमवर्गा इमे प्रोक्ताः षट्पदा ये भृगोस्तथा ॥ ४ ॥

चंद्र माता, सूर्य पिता, गुरु आकाश है, शुक्र वायु, मंगल तेज, बुध जल, शनि भूमि। गुरु कान है। शुक्र चमडा, मंगल

आँखें, बुध जीभ, शनि नाक है। गुरु शब्द, शुक्र स्पर्श, मंगल रूप, बुध रस, शनि गंध है इसप्रकारसे ग्रह पंचभूतरूपी हैं। अब ज्ञान कहते हैं–गुरुका ५, शुक्र ४, बुध २, मंगल ३, शनिका एक इस शास्त्रमें ज्ञान कहा है। अब बुधवर्गमें शंख सीपी कौडी ये बुधके हैं। खटकिरवा, लीखें, जुवें, मक्खी, चींटी ये मंगलके हैं। शुक्रके छः पाँववाले हैं ॥ १–४ ॥

देवा मनुष्याः पशवो भुजगा विहगा गुरोः।
तथैकज्ञानिनो वृक्षाःशनिवर्गाः प्रकीर्तिताः ॥ ५ ॥

गुरुके देवता आदमी पखेरू साँप आदि पेटसे चलनेवाले, शनिके वृक्ष कहा है ॥ ५ ॥

एकद्वित्रिचतुः पंचगगनादिगुणाः स्मृताः ॥ ६ ॥

आकाशका शब्दगुण एक है। वायुके शब्द स्पर्श दो गुण हैं। तेजके शब्द, स्पर्श, रूप तीन गुण हैं। पानीके शब्द, स्पर्श, रूप, रस चार गुण हैं। भूमिके शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पाँच गुण हैं ॥ ६ ॥

ग्रहवशेन पञ्चभूतजन्यशरीरावयवादिज्ञानम्।

देहो जीवः सितो जिह्वा बुधो नासेक्षणे कुजः।
श्रोत्रं शनैश्चरश्चैव ग्रहावयवमीरितम्।
द्विपाच्चतुष्पाद्बहुपाद्विहगा जानुगाः क्रमात् ॥ ७ ॥

गुरु देह है, शुक्र जीभ है,बुध नाक है, मंगल नेत्र है,शनि कान है गुरुके दोपाँवके आदमी हैं शुक्रके चार पादके जानवर हैं बुधके बहुत पादके, मंगलके पक्षि, शनिके घूटेसे चलनेवाले ॥७॥

शंखशंबूकसंघांश्च पादहीनान्विनिर्दिशेत् ।
यूकामत्कुणमुख्याश्च बहुपादा उदाहृताः ।
गोधाकमठमुख्यास्तु तथा चंक्रमणोचिताः ॥ ८ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे भूतकांडम् ॥ ४ ॥

शंखके सीपीके आदिजानवर आदि बिना पाँवके हैं । जूवाँ खटकिरवा आदि बहुत पादके हैं । गोह, कछुआ आदि चलनेवाले हैं ॥ ८ ॥ इति भूतकाण्डम् ॥ ४ ॥

अथ मनुष्यकाण्डम् ५.

ग्रहराश्यादिवशेन पक्ष्यादिप्राणिहृतवस्तुज्ञानम् ।

मृगमीनौ तु खचरौ तत्रस्थौ मंदभूमिजौ ।
वनकुक्कुटकाकौ च चिंतिताविति कीर्तयेत् ।
तद्राशिस्थे सिते हंसः शुकः सौम्ये विधौ शिखी॥१॥

मकर मीन पखेरू हैं, उनोंमें शनि भूमिज होवे तो वनके मुरगा और कौवा इन्होंका मनमें चिंतन करा हुवा जानो । मकर मीनमें शुक्र होवे तो हंस, बुध होवे तो सूवा, चन्द्र होवे तो मोर जानो ॥ १ ॥

वीक्षिते च तथा ब्रूयाद्ग्रहे राशौ विचक्षणः ।
तद्राशिस्थे रवौ तेन दृष्टे ब्रूयात्खगेश्वरम् ॥ २ ॥

पूर्वोक्त राशियोंमें ग्रह होनेसे फल कहा । वह उन्होंके देखनेसेभी होता है मकर मीनमें रवि होवे अथवा सूर्यकी दृष्टि होवे तो गरुड जानो ॥ २ ॥

बृहस्पतौ सितबको भरद्वाजस्तु भोगिनि ।
कुक्कुटो ज्ञस्य शुक्रस्य दिवान्धः परिकीर्तितः ॥ ३ ॥

गुरु होवे तो सफेद बगला, राहु होवे तो भरद्वाज जिसे रूपारेल कहते हैं । बुधका मुरगा, शुक्रका घूघू जानो ॥ ३ ॥

अन्यराशिस्थिते खेटे तत्तद्राशिफलं वदेत् ।
सौम्ये खेटे द्विजाःसौम्याःक्रूराः क्रूरगृहेस्थिताः ॥४॥

और राशियोंमें ग्रह होवे तो उन राशियोंका फल कहै सौम्यग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) होवे तो सौम्यपक्षि कहे क्रूरग्रह होवे तो क्रर पखरू कहे ॥ ४ ॥

उच्चराश्युदये सूर्ये दृष्टे भूपस्तदाश्रितः ।
उच्चस्थानेक्षिते राजा नेता स्वक्षेत्रगे स्थिते ।
राजाश्रितास्तु मित्रस्थवीक्षिते समगे भटाः ॥ ५ ॥

नृराशिका उदय होवे और सूर्य उच्चका उस राशिको देखे तो राजाका चिंतन कहना । सिंहको सूर्य देखे तो प्रधान कहना । मित्रस्थानमें स्थित सूर्य देखे तो राजाश्रित, समस्थानमें स्थित सूर्य देखे तो भट सिपाही कहना ॥ ५ ॥

अन्यराशिषु युक्तेषु दृष्टे वा संकरान्वदेत् ।
कांस्यकारः कुलालश्च कांस्यविक्रयिणस्तथा ।
शंखच्छेदी धातुचूर्णान्वेषिणः स्वर्णकारिणः ॥ ६ ॥

और राशियुक्त अथवा दृष्ट होवे तो संकर कहना याने मिश्रफल कहे । काँसा करनेवाला, कुम्हार, काँसा बेचनेवाला, चूडीवाला, धूर धोवा, सुनार ये सब संकर हैं ॥ ६ ॥

नृराशौ जीवदृष्टे वा भानुवद्ब्राह्मणादयः ।
बुधयुक्तेऽथवा दृष्टे तद्वद्ब्रूयात्तपस्विनः ॥ ७ ॥

मनुष्य राशिको गुरु उच्चको देखे तो अच्छा ब्राह्मण कहना जैसे सूर्यका फल कहा है वैसाहीजानो बुधका तपस्वी जानो॥७॥

तद्वच्छुक्रे तु वृषलाः संकराः शशिभोगिनौ ।
किंचिदत्र विशेषोस्ति मीने भास्करकिंकराः ॥ ८ ॥

शुक्र होवे तो शूद्र, चन्द्र राहु होवे तो संकर जाति है। यहा थोडा विशेष है वह ऐसा कि, मीनके सूर्य होवें तो नौकर कहो॥

चन्द्रस्य भिषजो ज्ञस्य वैश्याश्चोरगणाःस्मृताः ।
राहोर्गरदचाण्डालास्तस्कराः परिकीर्तिताः ॥ ९ ॥
शनेस्तरुच्छिदः प्रोक्ता राहोर्धीवरमालिनः ।
शंखच्छेदी नटः कारुर्नर्तकाःशिल्पिनस्तथा ॥१०॥

चन्द्रके वैद्य बुधके बनियाँ और चोर राहुके चण्डाल विष देनेवाले और चोर जानो । शनीके पेड काटनेवाले, राहुके धीमर, माली, चूडावाला, नट, नाचनेवाले कारीगर (कारु) इसका अर्थ बढई कपडा बिननेवाला नाई धोबी चमार ये सब राहुके हैं ये सब कारु हैं ॥ ९ ॥ १० ॥

चूर्णकृन्मोक्तिकग्राही शुक्रस्य परिकीर्तितः ।
तत्तद्राशिवशाज्जातिस्तत्तद्राशिस्थितैर्ग्रहैः ।
तत्तद्राशिस्थखेटानां बलतो नष्टनिर्गमः ॥ ११ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे मनुष्यकाण्डम् ॥ ९ ॥

चूना पाडनेवाले, मोती समुद्रमेंसे निकालनेवाले ये शुक्रके हैं उस राशिमें स्थित ग्रहोंसे जाति कहना और उन्होंके बलसे खोई वस्तुका निकलना विचारना ॥११॥ इति मनुष्यकाण्डम् ॥५॥

अथ चिन्ताकाण्डम् ६.

मेषादिराशिग्रहवशेन पृच्छकमनश्चिन्तितज्ञानम्।

मेषराशिस्थिते भौमे मेषमाहुर्मनीषिणः।
तस्मिन्नर्के स्थिते व्याघ्रं गोलांगूलं बुधे स्थिते।
शुक्रे गौर्वृषभश्चन्द्रे गुरावश्वस्ततः परम् ॥ १ ॥

अब राशि और ग्रहोंसे जीव चिन्ता कहते हैं—मेष राशिका मंगल हो तो मेढा जानो, मेषका सूर्य होवे तो व्याघ्र याने सिंह, बुध होवे तो लंगूर, शुक्र होवे तो गाय, चन्द्र होवे तो बैल, गुरुसे घोडा ॥ १ ॥

महिषः सूर्यतनये राहौ गवय उच्यते।
वृषभस्थे भृगौ धेनुः कुजे मृग उदाहृतः ॥ २ ॥

शनिसे भैंसा, राहुसे गवय याने रोज, वृषभका शुक्र होवे तो गाय कहना। मंगल मृग (हिरण) कहना ॥ २ ॥

बुधे कपिर्गुरावश्वः शशाङ्के धेनुरुच्यते।
आदित्ये शरभः प्रोक्तो महिषा शनिसर्पयोः ॥ ३ ॥

बुध होवे तो बन्दर, गुरु होवे तो घोडा, चन्द्रकी गाय, सूर्यका शरभ[1] जानवर, शनि राहु होवें तो भैंसे जानो ॥ ३ ॥

---

१ शरभ एक जानवर है जो आठ पाँववाला व सिंहका घाती होता है यह जानवर अब कहीं नजर नहीं आता ॥

कर्कस्थे च खरो भौमे महिषी नक्रगे कुजे ।
वृषभस्थे हरिर्युग्मकन्ययोः श्वा च फेरवः ॥ ४ ॥

कर्कका मंगल होवे तो गधा कहना, मकरका मंगल भैं[illegible] बतावे, वृषभका होवे तो सिंह, मिथुन कन्याका होवे तो कुत्ता श्याल ॥ ४ ॥

हरिस्थे भूमिजे व्याघ्रो रवीन्द्वोस्तत्र केसरी ।
शुक्रे श्वा वानरः सौम्ये त्वन्यैः श्वाकृतयो मृगाः ॥ ५ ॥

सिंहका मंगल होवे तो नाहर, सूर्य चन्द्र होवे तो सिंह, शुक्र होवे तो कुत्ता, सिंहका बुध होवे तो वानर और बुद्धिसे जानो ॥५॥

तुलागते भृगौ वत्सश्चन्द्रे गावः प्रकीर्तिताः ।
धनुःस्थितेषु जीवेन्दुकुजेषु तुरगो भवेत् ॥ ६ ॥

तुला लग्नमें शुक्र होवे तो बच्छा याने (बछडा), चंद्र होवे तो गाय, धनलग्नमें मंगल, चंद्र, गुरु तीनों होवें तो घोडा ॥ ६ ॥

सपुत्रेर्के स्थिते कुंभे मत्तो गज उदाहृतः ।
सर्पे च तत्र महिषो वानरो बुधजीवयोः ॥ ७ ॥

कुंभमें सूर्य शनि होवे तो मस्त हाथी, राहु होवे तो पाडा, बुध गुरु होवे तो वानर ॥ ७ ॥

शुक्रामृतांशुसूर्येषु स्थितेषु पशुरुच्यते ।
जीवसूर्येक्षिते गर्भो वन्ध्या रविजवीक्षिते ॥ ८ ॥

मकरमें सूर्य चंद्र शुक्र ये होवें तो जानवर चारपादका जानो, उसको याने मकरको गुरु सूर्य देखे तो गर्भ कहना । शनि देखे तो बाँझ कहना ॥ ८ ॥

अङ्गारकेक्षिते शुष्कमिति ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ।
वक्ष्येऽहं चिन्तनां सूक्ष्मां जनैस्तु परिचिन्तिताम्॥९॥

मंगल देखे तो शुष्कगर्भ कहना। अब औरभी लोगोंने वस्तु मनमें ली होवे उसको बतानेका हाल बताते हैं ॥ ९ ॥

घिषणे कुंभराशिस्थे त्रिकोणे वा स पश्यति ।
स्मृतो गजस्ततो मीनधनुषी वीक्षिते शुभैः ॥ १० ॥
स्मृतः कपिर्मेषगते शनौ ब्रूयान्मतङ्गजम् ।
कुजे मेषगते छागो बुधे नर्तकगायकौ ॥ ११ ॥

कुंभराशिमें गुरु होवे या कुंभराशिको गुरु नवम पंचम दृष्टिसे देखे तो हाथी दिलमें लिया है। धन मीनको शुभ ग्रह देखे तो बंदरका चिंतन किया है॥ शनि मेषराशिका होवे तो मस्त हाथी। मेषमें मंगल होवे तो बकरा. मेषमें बुध होवे तो गानेवाले नाचनेवाले ॥ १० ॥ ११ ॥

गुरुशुक्रदिनेशेषु वणिजं वस्त्रजीविनम् ।
चन्द्रे तथा वदेन्मन्दे सिंहस्थे रिपुचिन्तनम् ॥१२॥
वृषस्थे महिषौ तौलौ चक्रिणं वृश्चिके गदम् ।
मेषगे सूर्यतनये मृत्युक्लेशादयस्तथा ।
मित्रादिपश्चवर्गं च ज्ञात्वा ब्रूयात्पुरोक्तितः ॥ १३ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे चिंताकाण्डम् ॥ ६ ॥

गुरु शुक्र सूर्य होवे तो कपडा बेचनेवाला बनियाँ कहना चंद्र होवे तबभी बनियाँ कहे। सिंहका शनि होवे तो शत्रुका चिंतन है॥ वृषका शनि होवे तो भैंस। तुलाका होवे तो चक्र-

र्वर्ती राजा, वृश्चिकका होवे तो रोग जानो। मेषका शनि होवे तो मृत्यु तकलीफ आदिकी चिन्तना कहना। मित्रग्रह शत्रुग्रह आदिको देखके कहै ॥ १२ ॥ १३॥ इति चिन्ताकाण्डम् ॥६॥

अथ धात्वादिकाण्डम् ७.

ग्रहराशिवशेन धातुचिंताज्ञानम्।

धातुराशौ धातुखगैर्दृष्टे तच्छत्रसंयुते।
धातुचिन्ता भवेत्तद्वन्मूलजीवौ तथा वदेत्।
धातुभस्थे मूलखेटे जीवमाहुर्विपश्चितः ॥ १ ॥

धातुकी १–४–७–१० राशि धातु ग्रहों चं–मं–श–रा–से दृष्ट होवे और धातुछत्रसे युक्त होवे तो धातुकी चिंता कहना, ऐसेही मूलजीव जानो. जैसे मूलराशि मूलग्रहोंस युक्त अथवा दृष्ट होवे तथा उसीके छत्रसे युक्ति होवे तो मूल चिंता इसी प्रकार जीव चिंताभी जाननी चाहिये, अब राशि और ग्रह अलग होवे उसका वर्णन करते हैं—धातु राशि होवे उसमें मूलग्रह होवे अथवा दृष्ट होवे तो जीव कहना उचित है ॥ १ ॥

जीवराशौ मूलखगैर्दृष्टे वा युजि मूलकाः।
मूलराशौ जीवखगैर्धातुचिन्ता प्रकीर्तिता ॥ २ ॥

जीव तो राशि होवे और धातु ग्रहोंकी दृष्टि होवे या योग होवे तो मूल कहै। मूल तो राशि होवे और जीव ग्रहोंसे दृष्ट होवे तो धातु चिंता है ॥ २॥

ग्रहाणां दृष्टिबलवशादाकृतिज्ञानम्।

त्रिवर्गखेटकैर्दृष्टे युक्ते बलवशाद्वदेत्।
पश्यन्ति चन्द्रं चेदन्ये वदेत्तत्तद्ग्रहाकृतिम् ॥ ३ ॥

धातु मूल जीव सब ग्रहोंसे दृष्ट होवैं तो बलवान् ग्रहसे फल कहिये । जो चंद्रको ग्रह देखे तो जैसा ग्रह होवे वैसाही आकार कहै ॥ ३ ॥

ग्रहाणां परस्परयोगदृष्टिवशेन वंशवर्णादिज्ञानम् ।

धातुं मूलं च जीवं च वंशं वर्णं स्मृतं वदेत् ।
उदयारूढयोश्छत्रे ग्रहयोगेक्षणात्तथा ॥ ४ ॥

धातु मूल जीव वंश वर्ण इन्होंका चिंतन कहना । लग्न आरूढ छत्र ग्रहका योग ग्रहकी दृष्टिसे सब फलित कहना ॥ ४ ॥

मुष्टिचिन्तादिज्ञानम् ।

ज्ञात्वा नष्टं च मुष्टिं च चिन्तनां क्रमशो वदेत् ।
कंटकादिचतुष्के तु स्वोच्चमित्रग्रहैर्युते ॥ ५ ॥
दृष्टे वा सर्वकार्याणां सिद्धिं ब्रूयाच्च चिन्तिताम् ।
उदये धातुचिन्तास्यादारूढे मूलचिन्तनम् ॥ ६ ॥

नष्टप्रश्न मुष्टिप्रश्न चिंतनप्रश्न विचारके कहना । केंद्र उच्चस्थ ग्रहोंसे मित्रग्रहोंसे युक्त या दृष्ट होय तो सब कामकी सिद्धि कहना । उदयसे धातु चिन्ता है । आरूढमें मूलचिन्ता है ॥ ५॥६॥

छत्रेषु जीवचिंता स्यादिति कैश्चिदुदाहृतम् ।
केन्द्रं पणफरप्रोक्तमापोक्लिमं क्रमात्त्रयम् ।
चिन्तनामुष्टिनष्टानि कथयेत्कार्यसिद्धये ॥ ७ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे धातुमूलजीवकाण्डम् ॥ ७ ॥

' छत्रलग्नात् जीवचिन्तनम् ' छत्रलग्नसे जीवचिन्ता करना ऐसा कोई ऋषिका मत है ॥ केंद्र पणफर आपोक्लिम इस क्रमसे

लग्नसे बारहस्थान गिने। केन्द्रसे चिन्तना, पणफरसे मुष्टि आपोक्लिमसे नष्टके सिद्धिकेवास्ते विचारे ॥७॥ इति धात्वादिकाण्डम् ७

आरूढकाण्डम् ८.

रुद्धवस्तुज्ञानम्।

तत आरूढगे चन्द्रे न नष्टं रुद्धशाश्वती।
आरूढाद्दशमे वृद्धिश्चतुर्थे पूर्ववद्वदेत्।
नष्टद्रव्यस्य लाभश्च सर्वहानिश्च सप्तमे ॥ १ ॥

आरूढमें चन्द्र होवे तो वस्तु नष्ट नहीं हुई परंतु सदाकेलिये रुकगई है। किसी ग्रन्थान्तरमें रुद्धकी जगह रुक् लिखा है। जिसका यह अर्थ है कि, सदा रोगी रहै। आरूढसे दशम चन्द्र होवे तो वृद्धि होवे तथा चतुर्थसभी पूर्ववत् फल कहै। यदि सप्तम चन्द्र होवे तो सब कामका नाश होवे है ॥ १ ॥

चिन्तितासिद्धिधननाशज्ञानम्।

उदयाद्द्वादशे षष्ठेऽष्टमआरूढके सति।
चिन्तितार्थो न भवति धनहानिर्द्विषद्बलम् ॥ २ ॥

लग्नसे छठे आठवें बारहवें आरूढ लग्न होवे तो चिन्तन किया काम सिद्ध नहीं होता और धनका नाश होता है तथा वैरी बढते हैं ॥ २ ॥

द्वादशभावसंज्ञा।

तनुः कुटुम्बं सहजं जननी तनयं रिपुम्।
कलत्रं निधनं चैव गुरुं कर्मफलं व्ययम् ॥
उदयादिक्रमाद्भावं तस्य तस्य फलं वदेत् ॥ ३ ॥

तनु १, कुटुंब याने घरका आदमी २, भाई बहिन ३, माता ४, पुत्र ५, शत्रु ६, स्त्री ७, निधन ८, गुरु ९, कर्म- १०, फल ११, व्यय १२ उदयसे याने लग्नसे बारहभावसे फल कहै ॥ ३ ॥

मर्त्यादिचिन्ताप्रश्नज्ञानम् ।

रवीन्दुशुक्रजीवज्ञा नृराशिषु यदा स्थिताः ॥ ४ ॥
मर्त्यचिन्ता ततः सौरिदृष्टे नष्टं कुजे तथा ।
कुजस्य कलहः सौरेस्तस्करं गरलं वदेत् ॥ ५ ॥

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, बुध मनुष्यराशिमें होवें तो आदमीकी चिन्ता है, मंगल शनि देखे तो उसका नाश होता है, मंगलसे तो लडाईकी चिन्ता, शनिसे विष अथवा चोरकी चिन्ता कहना ॥ ४ ॥ ५ ॥

रविदृष्टे तथा युक्ते चिन्तनादेव भूपयोः ।
शुभचिन्ता गुरौ ज्ञेया विवाहो बुधशुक्रयोः ॥ ६ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे आरूडकाण्डम् ॥ ८ ॥

रविसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो देवता या राजाका चिन्तन कहै । गुरुसे युक्त अथवा दृष्ट होय तो शुभ कामकी चिन्ता कहै बुध शुक्र देखे वा युक्त होवे तो विवाहकी चिन्ता ॥ ६ ॥

इति आरूढकाण्डम् ॥ ८ ॥

छत्रकाण्डम् ९.

छत्रादियोगवशेन शुभाशुभकार्यज्ञानम् ।

द्वितीये द्वादशे छत्रे सर्वं कार्यं विनश्यति ।
गुरौ पश्यति युक्ते वा तत्र कार्यं शुभं वदेत् ॥ १ ॥

प्रश्न आरूढलग्नसे द्वितीय अथवा द्वादशस्थानमें छत्र होवे तो सब कामका नाश होता है गुरु देखे अथवा गुरुसे युक्त छत्र होवे तो सब काम शुभ कहना ॥ १ ॥

तृतीयैकादशे छत्रे सर्वं कार्यं शुभं वदेत् ।
तस्मिन्पापयुते दृष्टे विषमं भवति ध्रुवम् ॥ २ ॥

छत्र तीसरा या ग्यारहवाँ होवे तो सब काम शुभ कहना। छत्रमें पापग्रहकी नजर होवे वा युत हो तो उलटा फल बताना ॥ २ ॥

तस्मिन्सौम्ययुते दृष्टे सर्वं कार्यं शुभं वदेत् ।
मिश्रे मिश्रं फलं ब्रूयाच्छास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ३ ॥

छत्रको शुभग्रह देखे वा बैठे तो शुभफल जानो । शुभकी भी नजर हो वा अशुभकी भी नजर हो तो मिला हुआ फल जानो ॥ ३ ॥

पञ्चमे नवमे छत्रे सर्वसिद्धिर्भविष्यति ।
तद्वच्छुभाशुभैर्दृष्टे मिश्रे मिश्रफलं लभेत् ॥ ४ ॥

पंचम नवम छत्र होवें तो सब कामकी सिद्धि है शुभ देखे तो काम होवे, अशुभ देखे तो सिद्धि नहीं होय मिश्र होवे तो मिला हुआ फल है ॥ ४ ॥

द्वितीये चाष्टमे षष्ठे द्वादशे छत्रसंयुते ।
नष्टद्रव्यागमो नास्ति न व्याधिशमनं भवेत् ।
न कार्यसिद्धिर्न द्वेषशांतिर्ग्रहवशाद्भवेत् ॥ ५ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे छत्रकाण्डम् ॥ ९ ॥

दूसरे आठवें छठें बारहवें छत्र होवे तो खोयाहुआ धन मिले नहीं। रोगप्रश्नमें रोग दूर नहीं होवे काम सिद्ध नहीं होवे और वैरकी शांति भी नहीं ॥५॥ इति ज्ञानप्रदीपे छत्रकाण्डम् ॥९॥

उदयकाण्डम् १०.

उदयवशेन धनाद्याप्तिज्ञानम्।

बृहस्पत्युदये श्रेयो धनं विजय आगमः।
द्वेषशांतिः सर्वकार्यसिद्धिरेव न संशयः॥
सौम्योदये रणोद्योगी जित्वा तद्धनमाहरेत्॥ १॥

लग्नसे फल कहते हैं—धन मीनका उदय होवे तो श्रेय धन और जय मिले द्वेषकी शान्ति और सब कार्योंकी सिद्धि हो इसमें संशय नहीं वैर मिटे सब काम सिद्ध होवें मिथुन कन्याका उदय होवे तो लडाईको जावे वे शत्रुको जीतके उसका धन लावे॥१॥

पुनरेष्यति सिद्धिः स्याच्चन्द्रसंदर्शने तथा।
व्यवहारश्च विजयश्छत्रेप्येवमुदाहृतम्॥ २॥

कर्ककाभी अच्छा फल है। प्रश्नमें छत्र आरूढराशिको अपना स्वामी देखे तो अच्छा फल है॥ २॥

चन्द्रोदयेऽर्थलाभश्चोपायेनागमनं तथा।
चिन्तितार्थस्य लाभश्च छत्रारूढस्थितेपि च॥ ३॥

लग्नमें आरूढ छत्र तीनोंमें चंद्र होवे तो चिंतन किये हुए कामकी सिद्धि होती है। उपायसे धनका लाभ होवे॥ ३॥

शुक्रोदयेर्थसिद्धिःस्यात्स्त्रीलाभो व्याधिमोचनम्।
जयो यांत्यरयः स्नेहं छत्रेप्येवमुदाहृतम्॥ ४॥

लग्नमें शुक्र होवे तो अर्थकी सिद्धि स्त्रीका लाभ व्याधिका मोचन जय शत्रुसे मित्रता होवे । ये फल छत्रका भी कहे॥ ४॥

उदयारूढच्छत्रेषु शन्यर्काङ्गारका यदि ।
अर्थनाशं मनस्तापं मरणं व्याधिमादिशेत् ॥ ५ ॥

लग्न आरूढ छत्र तीनोंमें शनि मंगल होवे तो अर्थ याने धनका नाश मनको दुःख मरण रोग होना कहै ॥ ५ ॥

एतेषु फणियुक्तेषु बन्धश्चोरभयं गरम् ।
मरणं चैव दैवज्ञो न संदिग्धो वदेत्सुधीः ॥ ६ ॥

इनोंमें राहु होवे तो कैद होवे है, चोरसे भय, विषसे भय और मरणभी ज्योतिषी कहै इसमें बिलकुल संदेह नहीं करे ॥ ६ ॥

निधनारिधनस्थेषु पापेष्वशुभमादिशेत् ।
एषु स्थानेषु केन्द्रेषु शुभाः स्युश्चेच्छुभंवदेत् ॥ ७ ॥

दूसरे छठे आठवें स्थानोंमें पापग्रह होवें तो अशुभ कहना। दूसरे छठे आठवें और केंद्रोंमें शुभग्रह होवें तो शुभफल कहे॥ ७॥

तन्वादिभावाः पापैस्तु युक्ता दृष्टा विनश्यति ।
शुभैर्युक्ताथ दृष्टाश्चेत्तत्तद्भावाभिपोषणम् ॥ ८ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे उदयकांडम् ॥ १० ॥

तनुआदि भाव पापग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवें उन भावोंका नाश हो । शुभग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट होवें तो उन्होंकी वृद्धि होवे है ॥ इति उदयकांडम् ॥ १० ॥

नष्टकाण्डम् ११.

लग्नारूढवशान्नष्टवस्तुज्ञानम्।

तुलोदये क्रियारूढे नष्टसिद्धिर्न संशयः।
विपरीतेन नष्टाप्तिर्वृषारूढेऽलिभोदये॥ १॥

तुला लग्न होवे और मेष आरूढ होवे तो नष्ट वस्तुका लाभ होवे, मेष लग्न होवे तुला आरूढ होवे तो काम नहीं होवे, वृष आरूढ वृश्चिकलग्न होवे तो नष्टवस्तुका लाभ होवे॥ १॥

नष्टवस्त्वलाभज्ञानम्।

नष्टसिद्धिर्महालाभो विपरीते विपर्ययः।
चापारूढे नष्टसिद्धिर्भविता मिथुनोदये॥ २॥

वृषलग्न वृश्चिक आरूढ होवे तो लाभ नहीं होवे, मिथुन लग्न धन आरूढ होवे तो लाभ होवे॥ २॥

विपरीते न सिद्धिः स्यात्कर्कारूढे मृगोदये।
सिद्धिश्च विपरीते तु न सिद्ध्यति न संशयः॥ ३॥

विपरीत होवे तो सिद्धि नहीं, कर्कआरूढ मकर लग्न होवे तो लाभ, विपरीत होवे तो लाभ नहीं॥ ३॥

सिंहोदये घटारूढे नष्टसिद्धिर्न संशयः।
विपरीते न सिद्धिः स्याज्झषारूढे मनोदये।
नष्टसिद्धिर्विपर्यासे दृष्टादृष्टे निरूपयेत्॥ ४॥

सिंह लग्न कुंभ आरूढ होवे तो लाभ, विपरीत होवे यानी उलटा होवे तो लाभ नहीं होवे, मीन तो आरूढ होवे और कन्यालग्न होवे तो नष्टवस्तु मिले, विपरीत यानी मीन तो लग्न

और कन्या आरूढ होवे तो नष्टवस्तु नहीं मिलेगी, "स्वामिदृष्टं श्रुतं वा" इत्यादि पूर्वोक्त विचार तो करना चाहिये ॥ ४ ॥

स्थिरोदये स्थिरारूढे स्थिरच्छत्रं भवेद्यदि ।
न मृतिर्न च नष्टं च न रोगशमनं तथा ॥ ५ ॥

स्थिरलग्न स्थिर आरूढ स्थिरछत्र होवे तो मरेभी नहीं. कोई वस्तु जायभी नहीं, रोगभी दूर नहीं होवे ॥ ५ ॥

द्विदेहभोदयारूढे छत्रे नष्टं न सिध्यति ।
न व्याधिशमनं शत्रोःसंधिं विद्यान्न च स्थिराम् ॥६॥

द्विस्वभाव आरूढ, लग्न छत्र होवे तो गईहुई रकम मिले नहीं । रोग दूर नहीं होवे । तथा शत्रुसे करीहुई सुलहभी बदल जाती है ॥ ६ ॥

चरराशिवशेन स्त्रियादिज्ञानम् ।

चरराश्युदयारूढच्छत्रेषु स्त्र्यादिसिद्धयः ।
नष्टसिद्धिश्च भवति व्याधिशांतिश्च जायते ।
सर्वागमनकार्याणि भवन्त्येव न संशयः ॥ ७ ॥

चरराशि लग्नआरूढ छत्र होवे तो स्त्रीआदिकी प्राप्ति होवे है नष्टधनकी प्राप्ति और रोगभी दूर होता है, सब काम सिद्ध होते हैं ॥ ७ ॥

ग्रहस्थितिबलेनैव सर्वं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ।
चरोदये स्थिताः सौम्याः सर्वकार्यार्थसाधकः ॥ ८ ॥

ग्रहके बलसे याने शुभग्रहयुक्त अथवा ईक्षित होवे तो शुभ अन्यथा अशुभ कहना । लग्न चर होवे और उसमें शुभग्रह होवे तो सब कामको सिद्ध करते हैं ॥ ८ ॥

परापहृतवस्तुज्ञानम् ।

आरूढच्छत्रलग्नेषु क्रूरेष्वस्तंगतेषु च ।
परेणापहृतं ब्रूयात्तत्सिध्यति शुभेषु च ॥ ९ ॥

आरूढ छत्र और लग्न इनोंमें क्रूरग्रह होवे अथवा अस्तंगत ग्रह होवे तो प्रश्नकरनेवालेकी वस्तु दूसरा हर लेगया ये कहना जो शुभग्रह होवे तो वे काम सिद्ध होता है ॥ ९ ॥

अपहृतवस्तुलाभालाभज्ञानम् ।

नवमे पंचमेऽस्ते च नष्टलाभः शुभोदये ।
एषु पापेन नष्टाप्तिरुदयादित्रिकेषु च ॥ १० ॥

नवममें पंचममें सप्तममें शुभग्रह होवे तो गई वस्तु मिलेगी, वैसेही लग्न आरूढ छत्रमें भी जानो। यदि पूर्वोक्तस्थानोंमें पाप ग्रह होवे तो चीज नहीं मिलेगी ॥ १० ॥

भ्रातृस्थानयुते पापे पंचमे वा शुभे स्थिते ।
नष्टद्रव्याणि केनापि दीयन्ते स्वयमेव च ॥ ११ ॥

भ्रातृस्थान याने तीसरे स्थानमें पापी होवे और पंचममें शुभग्रह होवे तो नष्टधन स्वयं कोई लादेवे ॥ ११ ॥

प्रश्नकाले शुभे पापे धूमेन परिवेष्टिते ।
नष्टे नष्टं न भवति तत्तदाशासु तिष्टति ॥ १२ ॥
पृष्ठोदये शशाङ्कस्थे नष्टद्रव्यं न गच्छति ।
तद्राशिः शनिदृष्टश्चेन्नष्टं व्योम्नि कुजे न तत ॥ १३॥

प्रश्नसमयमें शुभग्रह और पापग्रह धूमग्रहसे युक्त हों तो उस समय गया धन जावे नहीं. जिस दिशाको गया उसी दिशामें

रहेगा । पृष्ठोदय राशिमें चन्द्र होवे तो वो धन जाय नहीं । उस राशिको शनि देखे तो वह धन आकाशमें है ऐसा कहना । मंगल देखे तो पूर्वोक्त योग नहीं कहना. क्योंकि मंगल भूमि-पुत्र है अतएव वह आकाशका योगकारक नहीं होता॥ १२॥ १३॥

स्वर्णादिनष्टवस्तुलाभालाभज्ञानम् ।

बृहस्पत्युदये स्वर्णं नष्टं नास्तीति निर्दिशेत् ।
शुक्रे चतुर्थगे रौप्यं नष्टं न भवति ध्रुवम् ॥ १४ ॥

गुरु लग्नमें होवे तो सुवर्ण नहीं गया ऐसा कहे । चौथा शुक्र होवे तो चाँदी नहीं गई ऐसा कहना ॥ १४ ॥

अस्ते कुजे शनौ कृष्णं लोहं नष्टं न जायते ।
बुधोदये त्रपु प्रायो नष्टं नास्ति चतुर्थगे ॥ १५ ॥

सप्तमघरमें मंगल हो उसके साथ शनि होवे तो लोहा नहीं गया ऐसा कहना । लग्नमें और चौथे बुध होवे तो शीशा नष्ट नहीं ऐसा जानो ॥ १५ ॥

कांस्यं नष्टं न भवति पद्मनाभौ च सप्तमे ।
आरकूटं पंचमस्थे भानौ नष्टं न जायते ॥ १६ ॥

सप्तम चन्द्र होवे तो काँसा नष्ट नहीं हो या पंचम सूर्यसे पीतल नष्ट नहीं ॥ १६ ॥

चतुष्पदादिनष्टपशुज्ञानम् ।

दशमे पापसंयुक्ते न नष्टाश्च चतुष्पदाः ।
चतुष्पदोदये राहौ स्थिते नष्टाश्चतुष्पदाः ॥ १७ ॥

दशमस्थानमें पापग्रह होवे तो चारपाँवके जानवर नष्ट नहीं

ऐसा कहना । चतुष्पादराशि लग्नमें होवे और उसमें राहु होवे तो जानना चाहिये कि, जानवर चारपाँवके अवश्य नष्ट भये॥ १७॥

बन्धनस्था भवेयुस्ते तद्वद्विपदराशयः ।
बहुपादुदये राहौ बहुपान्नष्टमादिशेत् ॥ १८ ॥

यदि लग्नमें द्विपदराशि होवे राहुयुक्त होवे तो बन्धनमें जानो बहुपादलग्नमें राहु होवे तो बहुपाद नष्ट कहै ॥ १८ ॥

कपोतादिषु नष्टवस्तुज्ञानम् ।

पक्षिराशौ यदा नष्टमेतेषां बन्धनं भवेत् ।
कर्कवृश्चिकयोर्लग्ने नष्टं सद्मनि कीर्तयेत् ॥ १९ ॥

पक्षिराशिमें नष्ट होवे तो उन्होंका बन्धन होता है । कर्क वृश्चिक लग्न होवे तो घरमें रकम खोई है घरमें ही है ॥ १९ ॥

मृगमीनोदये नष्टं कपोतान्तरयोर्वदेत् ।
कलशे भूमिजः सौम्यो घटे रक्तघटे गुरुः ॥ २० ॥

मीन मकर लग्नमें नष्ट होवे तो कबूतरोंके बीचमें खोई हुई चीज है । मंगललग्नमें होवे तो घडामें जानो । बुध होवे तो भी घडामें गुरु होवे तो लालघडामें जानो ॥ २० ॥

शुक्रश्च करके लग्ने घटे भास्करनन्दनः ।
आरनालघटे भाण्डे चन्द्रो लवणभाण्डके ॥
नष्टद्रव्याश्रितं स्थानं सद्मनीति विनिर्दिशेत् ॥ २१ ॥

शुक्र होवे तो जलके घडामें शनि होवै तो काँजीका-

---

१ आरनाल उसकाँजीका नाम है जो गेहूँ सडाकर बनाईजावे इसे मालवेमें जलेव कहते हैं ।

आरनालमें चन्द्र होवे तो नोनके बर्तनमें नष्ट धनका स्थान घरमें कहना ॥ २१ ॥

पुरुषादिचोरज्ञानम् ।

पुंराशिपुंग्रहैर्दृष्टः पुरुषस्तस्करो भवेत् ।

पुरुषकी राशि और पुरुषग्रह देखे तो चोर पुरुष कहना ।

स्त्रीराशिस्त्रीग्रहैर्दृष्टस्तस्करी च वधूर्भवेत् ।

उदयादोजराशिस्थे पुंग्रहे पुरुषो भवेत् ॥ २२ ॥

स्त्रीराशि स्त्रीग्रहोंसे युक्त होवे तो स्त्रीने चोरी करी । लग्नसे विषम राशिमें पुरुषग्रह होवे तो चोर पुरुष कहना ॥ २२ ॥

समराश्युदये चोरी समस्थे स्त्रीग्रहे वधूः ।

उदयारूढयोश्चैव बलाबलवशाद्वदेत् ॥ २३ ॥

लग्न समराशि होवे और उसमें स्त्रीग्रह होवे तो स्त्री चोर होवै है । उदय और आरूढका बलाबल देख कहना ॥ २३ ॥

कर्किनक्रपुरन्ध्रीषु नष्टं द्रव्यं न सिद्ध्यति ।

तुलावृषभकुंभेषु नष्टद्रव्यं च सिद्ध्यति ॥ २४ ॥

कर्क कन्या मकरमें धन खोवे तो मिले नहीं, तुला वृषभ कुम्भमें नष्टद्रव्य मिलेगा ॥ २४ ॥

जीवं विना सर्वखगे सपत्नस्थे न सिध्यति ।

पश्यन्ति ये ग्रहाश्चन्द्रं चोरास्तद्वत्स्वरूपिणः ॥ २५ ॥

गुरुके सिवाय सब ग्रह शत्रुके घरमें होवें तो चोरी मिले नहीं । चंद्रको देखनेवाले ग्रहोंका जैसा रूप होता है वैसा रूप चोरोंका होता है ॥ २५ ॥

द्रव्याणि च तथैव स्वमिति ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ।
यस्यामारूढसंयाति तस्यां दिशि गतं वदेत् ॥२६॥

धन या जो चीज नष्ट होय वो सब ग्रहोंके जोरसे जानो जिस दिशाको आरूढ आवे उस दिशामें धन गया ऐसा जानो ॥२६॥

ग्रहकिरणवशाद्दिनसंख्याज्ञानम् ।

तत्तद्ग्रहांशुसंख्यानि तत्तत्संख्यादिनादिकम् ।
स्वभावकवशादेवमन्यद्दृष्टिवशाद्वदेत ॥ २७ ॥

ग्रहोंके किरणोंके संख्याके दिन अथवा वर्ष जो आवे वैसे कहै । दृष्टिसे स्वभावसे सब कथन करना ॥ २७ ॥

चन्द्रस्थर्क्षादुदयभं यावत्तावत्फलं वदेत् ।
चरस्थिरोभयवशादेकद्वित्रिगुणो भवेत ॥ २८ ॥

इतिज्ञानप्रदीपे नष्टकाण्डम् ॥ ११ ॥

जिस राशिमें चंद्र होवे और चंद्रसे जितनी दूर लग्न होवे उतने दिनोंकी कल्पना करे । चरराशि एकगुनी स्थिरराशि द्विस्वभाव राशिसे त्रिगुणित दिन कहै ॥ इति नष्टकाण्डम्॥ ११॥

लाभालाभकाण्डम् १२.

राज्यराष्ट्रादिस्त्रीलाभज्ञानम् ।

सुवस्तुलाभो राज्यं च राष्ट्रलाभं स्त्रियः पतिम् ।
उपायनं स्वकार्याणि लाभालाभौ वदेत्सुधीः ॥ १ ॥

लग्न आरूढ छत्र इन तीनोंको जो उच्च ग्रह देखते होयँ तो चिंतितवस्तुका लाभ स्त्रीका लाभ राज्यका लाभ ये सब होते हैं याने स्त्रीको पतिका लाभ आदि सब कहै ॥ १ ॥

उदयादित्रिकान्खेटाः पश्यन्त्युच्चेश्वरा यदि ।
चिन्तितार्थागमश्चैव स्त्रीलाभो राज्यसिद्धयः ॥ २ ॥

उदय आरूढ छत्र इन्होंको उच्च ग्रह देखे तो मनमें विचारा काम सिद्ध होवे । स्त्री राज्यका लाभ होवे ॥ २ ॥

तान्नीचद्वेषिणः खेटाः पश्यन्ति यदि नाशयेत् ।
एवं विवाहकार्यं च शुभाशुभनिरूपणम् ॥ ३ ॥

नीच शत्रु देखे तो काम नाश व इसीप्रकार विवाहका काम शुभ अशुभ देखना ॥ ३ ॥

शत्रुमित्रादिज्ञानम् ।

उदयारूढच्छत्राणि पश्यन्ति सुहृदो यदि ।
शत्रुर्मित्रत्वमायाति रिपुः पश्यति चेद्रिपुम् ॥ ४ ॥

उदय आरूढ छत्र इनोंको मित्रग्रह देखे तो शत्रु, मित्र होता है । यदि शत्रु देखे तो मित्र शत्रु होता है ॥ ४ ॥

उदयं चन्द्रलग्नं च रिपुः पश्यति वा युतः ।
आयुर्हानी रिपुस्थाने गतश्चेद्वन्धनं भवेत् ॥ ५ ॥

लग्न और चंद्र जिस राशिमें हैं उस राशिको शत्रु देखे अथवा युक्त होवे तो आयुष्यका नाश होता है । यदि चंद्र शत्रु राशिस्थ होवे तो बंधन होवे है ॥ ५ ॥

गतो न यदि नष्टं चेद्बहिरेवं गतं वदेत् ।
बलवच्चन्द्रजीवाभ्यां केन्द्रेषु सहितेषु च ॥ ६ ॥
नष्टप्रश्ने न नष्टं स्यान्मृत्युप्रश्ने न नश्यति ।
पापदृष्टे युते केन्द्रे ब्रूयात्तस्य विपर्ययम् ॥ ७ ॥

शत्रुके घर नहीं गया होवे उसको बाहर गया जानो. बल-वान् चंद्र गुरु केंद्रमें होवें ऐसे समय प्रश्न नष्टवस्तुका करे तो वो चीज नष्ट नहीं भई ये बात कहना। यदि रोगीके जीनेके बदले प्रश्न करे तो रोगी मरेगा नहीं। केन्द्रमें चन्द्र गुरु हैं परंतु पापग्रहोंसे युक्त या दृष्ट होवें तो नष्टवस्तु मिले नहीं, रोगी मरेगा ऐसा कहना ॥ ६ ॥ ७ ॥

शत्रोरागमनं नास्ति चतुर्थे पापसंयुते।
दशमैकादशे सौम्या ग्रहाश्चेत्सर्वसिद्धयः ॥ ८ ॥

चतुर्थमें पापग्रह होवे तो शत्रु नहीं आवेगा । दशम और एकादशस्थानमें सौम्यग्रह होवे तो सब कामकी सिद्धि कहै ॥८॥

देशान्तरगतस्यागमबन्धज्ञानम्।

उदयारूढच्छत्रेषु केन्द्रेषु भुजगो यदि।
दूरस्थितो न चायाति तत्र बन्धो भविष्यति ॥ ९ ॥

लग्न आरूढ छत्रमें केन्द्रमें राहु होवे तो दूर गया हुआ आदमी नहीं आवेगा वहीं कैद होवे ॥ ९ ॥

रोगिमरणादिज्ञानम्।

विषादिपीडाप्रश्ने तु रोगिणो मरणं भवेत्।
गमनं विद्यते प्रष्टुर्नास्तीति कथयेद्बुधः ॥ १० ॥

रोगी आदमीके रोगके विषयमें प्रश्न होवे तो रोगी मरेगा पूछनेवालेका जानाभी न होगा ॥ १० ॥

प्रारब्धकार्यहानिः स्याद्धनस्यापत्तिरीरिता।
चंद्राद्व्योमस्थिते शुक्रे जीवाद्व्योमस्थिते रवौ ॥ ११ ॥

जिस कामको प्रारंभ करा है उस कामका और धनका नाश होवेगा । चंद्रसे दशमस्थानमें शुक्र होवे और गुरुसे दशम सूर्य होवे ॥ ११ ॥

तल्लग्ने कार्यसिद्धिः स्यात्पृच्छकानां न संशयः ।
उदयात्सप्तमे व्योम्नि शुक्रश्चेत्स्त्रीसमागमः ॥ १२ ॥

ऐसे प्रश्नमें पृच्छकोंकी कार्यसिद्धि होवेगी । लग्नसे सप्तम अथवा दशम शुक्र होवे तो स्त्रीसे मुलाकात होवेगी ॥ १२ ॥

धनागमश्च सौख्यं च चन्द्रेप्येवं प्रकीर्तितम् ।
मित्रस्वात्युच्चमायान्ति तदा खेटा यदीष्टदाः ॥
नीचारिवलयोगाभ्यां सर्वकार्यविनाशनम् ॥ १३ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे लाभालाभकाण्डम् ॥ १२ ॥

धन लाभ और सुख होवे चन्द्र सप्तम दशम होवै तो शत्रुके समान जानो । जो ग्रह मित्रके स्वराशिके उच्चके होते हैं वे इच्छा पूर्ण करते हैं। नीच और शत्रुग्रहोंसे सब काम नष्ट होता है । इति ज्ञानप्रदीपभाषाटीकायां लाभालाभकांडम् ॥ १२ ॥

रोगकाण्डम् १३.

प्रबलव्याधिवशान्मरणज्ञानम् ।

पूर्वशास्त्रानुसारेण व्याधिमृत्युविनिर्णयः ।
उदयात्षष्ठमो व्याधिरष्टमो मृत्युसंज्ञकः ॥ १ ॥

पूर्व कथन किया हुआ जो प्रकरण है, उससे रोग और मृत्युका निर्णय जानो । लग्नसे छठेस्थानको रोग कहते हैं । अष्टम मृत्यु है १

तत्रारूढे व्याधिचिन्ता निधने मृत्युचिन्तना ।
तत्तद्ग्रहयुते दृष्टे व्याधिं मृत्युं वदेत्क्रमात् ।
पापनीचारयः खेटाः पश्यन्ति यदि संयुताः ॥ २ ॥

आरूढसे रोगका कारण देखना । और निधनस्थानसे मृत्युकी चिंतना करे । उन उन ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तो क्रमसे व्याधि और मृत्यु कहना । पापग्रह नीचग्रह शत्रु देखते होयँ अथवा युक्त होवें तो ॥ २ ॥

न व्याधिशमनं मृत्युं प्रविचार्य वदेत्सुधीः ।
एतयोश्चन्द्रभुजगौ तिष्ठतो यदि चोदये ॥ ३ ॥

रोगभी दूर न होवे और मृत्युभी दूर नहीं होवै और चन्द्र राहु यदि लग्नमें होवें तो ॥ ३ ॥

गरादिना भवेद्व्याधिर्न शाम्यति न संशयः ।
पृष्ठोदयर्क्षे तच्छत्रे व्याधिमोक्षो न जायते ॥ ४ ॥

विषआदिसे रोग होवे और व्याधि नहीं शांत होती है । छत्र पृष्ठोदय राशि होवे तो रोग दूर नहीं होता ॥ ४ ॥

मरणप्रदव्याधिस्थानानि ।

व्याधिस्थानमिदं प्राहुर्मूर्ध्नि वक्त्रे भुजे करे ।
वक्षसि स्तनयोः कुक्षौ कक्षे मूले च मेहने ॥ ५ ॥

रोगके स्थान ये हैं कि, मस्तक, मुख, भुज, हाथ, छातीं, स्तन, कूख, काँख, मूल, मेहन ॥ ५ ॥

---

१ गुदा । २ लिंग ।

राश्यधिपाधिष्ठितशरीरावयवाः

ऊरौ पादे च मेषाद्या राशयः परिकीर्तिताः ।
कुजो मूर्ध्नि मुखे शुक्रः कण्ठे राहुर्भुजे बुधः ॥ ६ ॥
चन्द्रो वक्षसि कुक्षौ च भानुर्नाभेरधो गुरुः ।
ऊरौ शनिरहिः पादे ग्रहाणां स्थानमीरितम् ॥ ७ ॥

जाँघ और पाद ये मेषसे लगाके ये राशिनके अंग हैं । मंगल मस्तक, मुख शुक्र, कंठ राहु, भुज बुध, चंद्र छाती, सूर्य कूख, गुरु ठोडीसे नीचे, शनि जाँघ, केतु पाँव ये ग्रहोंके स्थान हैं ॥ ७ ॥

एतेष्वेव स्थलेषु स्यान्नष्टमेतेषु राशिषु ।
पापयुक्तेषु दृष्टेषु नीचारिस्थेषु रुग्भवेत् ॥ ८ ॥

इनस्थानोंमें बारह राशियोंसे बीमारी जानो । पापग्रह नीच शत्रुक्षेत्री होवे तो रोग होव है ॥ ८ ॥

पश्यन्ति ये ग्रहाश्चन्द्रं व्याधिस्थानावलोकिनम् ।
पूर्वोक्तमासवर्षाणि दिनानि च वदेद्बुधः ॥ ९ ॥

जो ग्रह चंद्रको देखे उनके जितने मास वर्ष आदि हैं उतने दिन कहै । परंतु चंद्र व्याधिस्थानको देखनेवाला होवे ॥ ९ ॥

षष्ठाष्टमे पापयुते रोगशान्तिर्न जायते ।
षष्ठाष्टमे शुभयुते तदा व्याधिविमोचनम् ॥ १० ॥

छठे आठवें पापग्रह होवें तो रोग नहीं जावेगा । शुभग्रह होवें तो रोग दूर होवे ॥ १० ॥

किंचिदत्र विशेषोऽस्ति रोगमृत्युस्थिते शुभाः ।
यावद्भिर्दिवसैर्यांति तावद्भिर्व्याधिमोचनम् ॥ ११ ॥

और यह विशेष है कि शुभग्रह रोग मृत्युस्थानमें जितने दिनोंतक ठहरें उतनेही दिनोंमें रोग दूर होवे ॥ ११ ॥

रोगिमरणज्ञानम् ।

रोगस्थानाद्भवे सप्ते पापखेटयुते तथा ।
षष्ठाष्टमे चन्द्रयुक्ते मरणं रोगिणां भवेत् ॥ १२ ॥

रोगस्थानमें सप्तम पापग्रहयुक्त छठा आठवां चंद्र होवे तो रोगीका मरण होता है ॥ १२ ॥

शिरस्तोदादिज्ञानम् ।

रोगस्थानं कुजः पश्येच्छिरस्तोदो ज्वरो भवेत् ।
भृगुर्विषूचिः सौम्यश्चेत्कक्षे ग्रन्थिर्भविष्यति ॥ १३ ॥

षष्ठस्थानको मंगल देखे तो माथा दूखे और ताप आवे शुक्र देखे तो हैजा होता है । बुध देखे तो कांख दिलाइ होवे ॥ १३ ॥

रविश्चेदुदरव्याधिः शनिर्वातश्च पंगुता ।
राहुर्विषं शशी पश्येन्नेत्ररोगो भविष्यति ॥ १४ ॥

सूर्य देखे तो पेट दूखे शनि देखे तो बाय होवे और पंगु होवे । राहु देखे तो जहर दिया गया है चंद्र देखे तो आंखोंका रोग है ॥ १४ ॥

मूलव्याधिर्गुरुः पश्येच्चन्द्रवत्स्यादभृगुः परे ।
परिधाविन्द्रकोदण्डदृष्टे प्रश्नयुते सति ॥ १५ ॥
कुष्ठव्याधिमिति ब्रूयाद्धूमे भूताहतं वदेत् ।
सर्वेऽपस्मारमादित्ये पिशाचपरिपीडनम् ॥ १६ ॥

गुरु देखे तो बवासीर होय, कोई आचार्योंके मतसे शुक्रका फल चंद्रके समान है। परिधिको इंद्रधनुष देखे वा युक्त होवे तो कोढका रोग जानो, धूम होवे तो भूतोंका रोग है। सब ग्रह देखते होवें तो अपस्मार याने मिरगी है। सूर्यसेभी भूत जानो १५॥१६॥

कासं श्वासं च शूलं च शनौ शीतज्वरः कुजे ।
शुक्रे कोदण्डपरिधौ दृष्टे प्रश्ने तु रोगिणाम् ॥ १७ ॥
न व्याधिशमनं किंचिद्यदि नेक्षन्ति चेच्छुभाः ।
रोगशान्तिर्भवेच्छीघ्रं मित्रस्वात्युच्चसंस्थिताः ॥ १८ ॥

शनिसे श्वास खांसी शूल कहै; मंगलसे शीतज्वर कहना। धनुषपरिधिको शुक्र देखे तो रोग शमन नहीं होवेगा। यदि शुभ देखे उच्चके ग्रहस्थग्रही मित्रक्षेत्री देखे तो शीघ्र रोग दूर होवे ॥ १७ ॥ १८ ॥

शरीरावयवाधिष्ठितकृत्तिकादिवशाद्रोगादिनष्टवस्तुज्ञानम् ।

शिरोललाटभ्रूनेत्रनासिकाश्रुतयोऽधरः ।
चुबुकं चाङ्गुलीश्चैव कृत्तिकाद्या नवोडवः ॥ १९ ॥
कण्ठवक्षःस्थलकुचोदरमध्यनितंबकाः ।
शिश्नमण्डोघरः प्रोक्तश्चोत्तराद्या नवोडवः ॥ २० ॥
जानु जङ्घापादसन्धिपृष्ठान्तस्फिचगुल्फकौ ।
पादाग्रनालिकाङ्गुल्या विश्वर्क्षाद्या नवोडवः ॥ २१ ॥
उदयर्क्षवशादेवं ज्ञात्वा तत्र गदं वदेत् ।
अर्कनक्षत्रकं ज्ञात्वा नष्टद्रव्यं तथा वदेत् ॥ २२ ॥

कृ	शिरः	उ	कंठः	उ	जानु
रो	ललाटं	ह	पक्षौ	श्र	जंघा
मृ	भ्रुवौ	चि	स्तनौ	ध	पादौ
आ	नेत्रे	स्वा	उदरं	श	पृष्ठं
पु	नासिका	वि	मध्यं	पू	स्फिचूकुल
पु	कर्णौ	अ	नितंब	उ	गुल्फ
आश्ले	अधर पृ	ज्ये	शिश्न	रे	पादाग्रे
म	चिबुकं	मू	अंडौ	अ	तलिका
पू	अगलं	प	[illegible]	भ	अंगुल्यः

कृत्तिकाआदि नौ नक्षत्रोंके अंग—शिर, ललाट, भौं, नेत्र, नाक, कान, होंट, दाढी, उंगली। उत्तरा आदि नौ नक्षत्रोंके अंग—कंठ, छाती, स्तन, पेट, पेटके नीचेका भाग कूले, लिंग, अंड, अंडके नीचेका भाग। कोईके मतसे हौठ है। उत्तराषाढा आदि नौ नक्षत्रोंके नौ अंग—घुंटे, जांघें, पाँव, पीठ, चूतड, टकना, पावोंका अग्र, हथेली व पगथली, पावोंकी उंगली ऐसे सत्ताइस नक्षत्र जानो। उदयके नक्षत्रको देखके बिचारना। सूर्यका नक्षत्र जानके खोई हुई वस्तुकोभी विचारना चाहिये ॥ १९—२२ ॥

त्रिकोणलग्नदशमे शुभाश्चेद्व्याधयो नहि।
तेषु नीचारियुक्तेषु देहपीडा भविष्यति ॥ २३ ॥

इति ज्ञानप्रश्नप्रदीपे रोगप्रश्नकाण्डम् ॥ १२ ॥

नवम पंचम लग्न दशमें शुभग्रह होवे तो रोग नहीं होता। यदि उनस्थानोंमें नीचग्रह शत्रुक्षेत्री होय तो देहकी पीडा होवेगी ॥ २३ ॥ इति रोगकाण्डम् ॥ १२ ॥

मरणकाण्डम् १४.

छत्रादियोगबलेन मृत्युपरिज्ञानम् ।

मरणस्य विधानानि ज्ञातव्यानि मनीषिभिः ।
वृषस्य वृषभश्छत्रं सिंहश्छत्रं हरेर्भवेत् ॥ १ ॥

मरणके समय बुद्धिमान् जानते हैं इस कारण छत्रका विचार करते हैं—वृषभका छत्र वृषभ । सिंहका छत्र सिंह ॥ १ ॥

अलिनो वृश्चिकश्छत्रं कुम्भश्छत्रं घटस्य च ।
उच्चस्थानमिति ज्ञात्वा रूढे स्यादुदये यदि ॥
मरणं न भवेत्तस्य रोगिणो नात्र संशयः ॥ २ ॥

वृश्चिकका छत्र वृश्चिक । कुंभका छत्र कुंभ है । ये उच्च-स्थान हैं ये आरूढमें वा उदयमें होवें तो रोगी मरे नहीं ॥ २ ॥

तुला वा कार्मुकं छत्रं नीचं मृत्युविपर्यये ॥ ३ ॥

अब नीच और मृत्यु छत्र कहते हैं—तुलाका छत्र धन है । उसका नाम नीच है । और धनका तुला मृत्यु छत्र है ॥ ३ ॥

मेषस्य मिथुनं छत्रं नीचं मृत्युविपर्यये ।
कन्या छत्रं कुलीरस्य नीचं मृत्युविपर्यये ॥ ४ ॥

मेषका मिथुन नीच, मिथुनका मेष मृत्यु छत्र है । कर्कका कन्या नीच, कन्याका कर्क मृत्यु छत्र है ॥ ४ ॥

नक्रस्य मीनश्छत्रं च नीचं मृत्युविपर्यये ।
नीचे न शाम्यति व्याधिर्मृत्यौ मरणमादिशेत् ॥ ५ ॥

मकरका मीन नीच है, मीनका मकर मृत्यु है । नीच होवे तो रोग दूर नहीं होता । मृत्यु होवे तो मरण जानो ॥ ५ ॥

ग्रहेषु बलवान्सूर्यो यदि मृत्युस्तदाग्निना ।
मन्दः क्षुधा जलेनेन्दुः शीतेन कविरुच्यते ॥ ६ ॥

ग्रहोंमें सूर्य बलवान् होवे तो अग्निसे मरता है । शनि बली होवे तो भूखसे मरता है । चंद्र बलवान् होवे तो जलसे मरे, शुक्र होवे तो शीतसे मरे ॥ ६ ॥

बुधस्तुषारवाताभ्यां शस्त्रेणारो बली यदि ।
राहुर्विषेण जीवस्तु कुक्षिरोगेण नश्यति ॥ ७ ॥

बुध बली होवे तो कुहर हवासे, मंगल बलवान् होवे तो हथियारसे, राहु बली होवे तो जहरसे, गुरु बली होवे तो कूखके रोगसे मरे ॥ ७ ॥

विधोः षष्ठाष्टमे पापाः सप्तमे वा यदि स्थिताः ।
रोगमृत्युस्थलाभ्यां वा रोगिणां मरणं ध्रुवम् ॥ ८ ॥

चंद्रमासे छठे आठवें सातवें पापग्रह होवें और रोग-स्थल मृत्युस्थलसे छठे सातवें आठवें पापी होवें तो रोगीका मरण कहो ॥ ८ ॥

आरूढं मरणस्थानं तस्मादष्टमगः शशी ।
पापाः पश्यन्ति चेन्मृत्युं रोगिणां कथयेत्सुधीः ॥ ९ ॥

आरूढ मरणस्थान वहांसे अष्टम चंद्र होवे और पापग्रह देखे तो रोगीका मरण कहे ॥ ९ ॥

तृतीये भानुसंयुक्ते दशमे पापसंयुते ।
दशाहान्मरणं ब्रूयाच्छुक्रजीवौ तृतीयगौ ॥ १० ॥

सप्ताहान्मरणं ब्रूयाद्रोगिणामतिबुद्धिमान् ।
उदये चतुरस्रे वा पापास्त्वष्टदिनान्मृतिः ॥ ११ ॥

तृतीयमें सूर्य होवे और दशम पापग्रह होवे तो दशदिनमें रोगीका मरण कहै । शुक्र और जीव याने गुरु तीसरे स्थानमें होवें तो सातदिनमें मरण कहै लग्नमें चौथे आठवें पापग्रह होवें तो सातदिनमें रोगी मरे ॥ १०–११ ॥

लग्नाद्द्वितीयगाः पापाश्चतुर्दशदिनान्मृतिः ।
त्रिदिनान्मरणं किन्तु दशमे पापसंयुते ॥ १२ ॥

लग्नसे दूसरे पापग्रह होवें तो चौदहदिनमें मरण होता है दशममें पापग्रह होवें तो तीन दिनमें मरे ॥ १२ ॥

तस्मात्सप्तमगे पापे दशाहान्मरणं भवेत् ।
निधनारूढगे पापे दृष्टे वा मरणं भवेत् ॥
तत्तद्ग्रहवशेनैव दिनमासादिनिर्णयः ॥ १३ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे मरणकाण्डम् ॥ १४ ॥

उससे सप्तमस्थानमें पापग्रह होवें तो दशदिनमें मरे । अष्टमस्थानमें और आरूढलग्नमें पापग्रह होवे अथवा देखे तो मरण कहै । जिसग्रहके जितने दिन मास हैं उनसे भी कहो ॥ १३ ॥

इति मरणज्ञानम् ॥ १४ ॥

मृतस्य गतिज्ञानम् १९.

ग्रहोच्चे स्वर्गमायाति रिपौ मृगकुले भवः ॥ १ ॥

यदि कोई यह पूछे कि, मृतकपुरुषकी क्या गति होगी

इस भवनमें उच्चका ग्रह हो तो जीव स्वर्गमें जावेगा । शत्रुक्षेत्रमें होवे तो हिरण आदि जनावर होगा ॥ १ ॥

नीचे नरकमायाति मित्रे मित्रकुले भवः ।
स्वक्षेत्रे स्वजने जन्म मृतानां कथयेद् बुधः ॥ २ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे स्वर्गकाण्डम् ॥ १५ ॥

नीचका होवे तो नरकमें जावे स्वक्षेत्री होवे तो फिर स्वजनोंमें जन्म कहै । और मित्रके घरका हो तो मित्रके घरमें जन्म लेवे ॥ २ ॥ इतिमृतस्य गतिज्ञानम् ॥ १५ ॥

अथ भोजनकाण्डम् १६.

धात्वादिवर्गवशेन ताम्रादिपात्राणां भुक्तपदार्थानां च ज्ञानम् ।

कथयामि विशेषेण भुक्तद्रव्यस्य निर्णयम् ।
पाकभाण्डानि भुक्तानि व्यञ्जनानि रसास्ततः ॥ १ ॥

अब खाईहुई वस्तुका और रसोईके वर्तन तथा व्यंजन वा रस इनका वर्णन करेंगे ॥ १ ॥

सहभोक्तॄन्भोजनानि तद्दातॄस्नेहिनो रिपून् ।
मेषराशौ भवेच्छागं वृषभे गव्यमुच्यते ॥ २ ॥

अब जिन जिन व्यंजनोंका भोजन किया हो उन पदार्थोंका वर्णन करते हैं—मेषराशि होवे तो बकरेका भोजन कहै । वृषभराशि होवे तो गायका दूध दही आदि खावे ॥ २ ॥

धनुर्मिथुनसिंहेषु मत्स्यमांसादिभोजनम् ।
नक्रालिकर्कमीनेषु परिपक्वफलादिकम् ॥ ३ ॥

धन मिथुन सिंह ये राशि होवें तो मछलीके मांसका

भोजन कहै । कर्क वृश्चिक मकर मीन होवे तो पकेहुए फलोंका भोजन कहै ॥ ३ ॥

तुलाकन्याघटेष्वेव शुद्धान्नमिति कीर्तयेत् ।
भानौ तिक्तकटुक्षारमिश्रं भोजनमुच्यते ॥ ४ ॥

तुला कन्या कुंभ इनमें शुद्धअन्नका भोजन कहै । सूर्य होवे तो चरपरा कडा खारा मिले हुए अन्नका भोजन कहै ॥ ४ ॥

कृष्णान्नं क्षौद्रसंयुक्तं भूमिपुत्रस्य भोजनम् ।
भर्जितान्युपदंशानि सौम्यस्याहुर्मनीषिणः ॥ ५ ॥

मंगलकी खिचडी और शहतका भोजन । बुधके भूंजे हुए पदार्थ व्यंजन ॥ ५ ॥

पायसान्नं घृतयुतं गुरोर्भोजनमीरितम् ।
सतैलकोद्रवान्नं च भवेन्मन्दस्य भोजनम् ॥ ६ ॥

गुरुका भोजन खीर घी जानना । शनिका तेल और कोदों-अन्नका भोजन जानो ॥ ६ ॥

चणकं राहुकेत्वोश्च रसवर्ग उदाहृतः ।
जीवस्य माषवटकं सूपमिश्रं तु भोजनम् ॥ ७ ॥

राहु केतु दोनोंके चना इस प्रकार रसवर्ग कहा है । गुरुके उडदके बरा और दालकरके युक्त भोजन कहो ॥ ७ ॥

चन्द्रस्य कन्दप्रसवमत्स्याद्यैर्भोजनं भवेत् ।
क्षौद्रापूपपयोयुग्भिर्व्यञ्जनैर्भोजनं भृगोः ॥ ८ ॥

चंद्रका कंद याने कांदाकरके युक्त मछलीका भोजन कहो । शुक्रका शहत पूआ दूधसे मिले हुए व्यंजनोंका भोजन कहो ॥ ८ ॥

ओजराशौ शुभैर्दृष्टे सुरुच्या भोजनं भवेत् ।
समराशौ मन्दरुच्या भुङ्क्तेऽल्पं पापवीक्षिते ॥ ९ ॥

विषमराशिको शुभग्रह देखे तो अच्छे रुचिसे भोजन जानो, समराशिको शुभ देखे तो थोडे रुचिसे भोजन जानो, यदि समराशिको पापग्रह देखे तो थोडा भोजन जानो ॥ ९ ॥

केचित्पश्यन्ति पापाश्चेत्पुराणान्नं क्षुधार्दिताः ।
अर्कारौ मांसभोक्तारावुशनाश्चन्द्रभोगिनौ ।
नवनीतघृतक्षीरदधिभिर्भोजनं भवेत् ॥ १० ॥

कोई कहते हैं कि—पापग्रह देखे तो भूखसे बासीअन्न खावे। सूर्य मंगल मांसको खावे हैं। शुक्र मक्खन, चंद्र दूध, राहु दही इन्होंसे मिलाहुवा भोजन कहे ॥ १० ॥

जलराशिषु पापेषु ससौम्येष्वीक्षितेषु च ।
स्तैलभोजनं ब्रूयादिति ज्ञात्वा विचक्षणः ।
पूर्वोक्तधातुवर्गेण भोजनानि विनिर्दिशेत् ॥ ११ ॥

जलराशिनमें पापग्रह और शुभग्रह होवे अथवा इनसे दृष्ट होवे तो तैल मिला हुआ भोजन बतावे। पात्र याने भोजन करनेके बर्तन पहले कहे हुए धातुवर्गसे जानो ॥ ११ ॥

मूलवर्गेण शाकादीनुपदंशान्वदेद्बुधः ।
जीववर्गेण भोक्तृंश्च मत्स्यमाषादिकानपि ।
सर्वमालोक्य निश्चित्य प्रश्नान्नृणां बुधो वदेत्॥१२॥

इति ज्ञानप्रदीपे भोजनकाण्डम् ॥ १६ ॥

धनराशिके दूसरे आधेमें प्रत्यक्ष मांस नहीं भोजन करे

किंतु मांसके समान उडद वगैरहके भोजन कहे। सिंहसे कच्चा मांस खावे। मूलवर्गसे साक अथानोंआदि बुद्धिसे कहै। जीव-वर्गसे भोजन करनेवालेको जाने और मछली उडद वगैरहभी पंडित सब विचारे॥ १२॥ इति भोजनकाण्डम्॥ १६॥

स्वप्नकाण्डम् १७.

मेषाद्युदयवशेन स्वप्नदृष्टानेकवस्तुज्ञानम्।

स्वप्ने यान्परिपश्यन्ति सर्वान्वक्ष्यामि सर्वथा।
मेषोदये देवगृहं प्रासादः संभवन्ति च।
वृषोदये दिनाधीशे ज्ञातगेहस्य दर्शनम्॥ १॥

स्वप्नमें जो देखे उसको कहते हैं—मेषलग्न आरूढ वा छत्र होवे तो मंदिर या महल कहै। वृषभलग्नमें सूर्य होवे तो देखा हुआ घर देखे ऐसा कहै॥ १॥

वृश्चिकस्योदयेऽर्कारौ व्याकुलं मृतदर्शनम्।
मिथुनस्योदये विप्रं तपस्विवचनानि च॥ २॥

वृश्चिकलग्नमें सूर्य और मंगल होवें तो मरेहुए आदमीका दर्शन होवे। मिथुन लग्न होवे तो ब्राह्मणको देखा और साधुके वचन सुने ये कहो॥ २॥

कुलीरस्योदये क्षेत्रे सस्यं दृष्ट्वा पुनर्ग्रहम्।
तृणान्यादायहस्ताभ्यांगच्छतीतिविनिर्दिशेत्॥ ३॥

कर्क लग्न होवे तो खेतमें जाकर खेती देखकर घास हाथमें लेकर तुम घरको आये; ऐसा कहै॥ ३॥

सिंहोदये किरातांश्च महिषान् गिरिपद्धतिम्।
कन्योदयेऽपि चारूढे मुंडस्त्रीभ्यः पिबन्त्यपः॥ ४॥

सिंहलग्न होवे तो किरात याने भील, भैंसा और पहाडके मार्ग देखे हैं। कन्याका उदय होवे वा आरूढ होवे तो विधवा स्त्रियोंसे पानी पीवे ॥ ४ ॥

तुलोदये नृपं स्वर्णं वणिजं च स पश्यति ।
वृश्चिकस्योदये स्वप्ने पश्यत्यलिमृगादिकम् ॥ ५ ॥

तुलाका उदय होवे तो राजाको सुवर्णको बनियाँको देखे। वृश्चिकलग्न होवे तो विच्छू मृग आदि देखे ॥ ५ ॥

वृषांश्चैव तथा दृष्ट्वा स्वप्ने ब्रूयादशङ्कितः ।
उदये धनुषः पश्येत्पुष्पं पक्कफलं लभेत् ॥ ६ ॥

बैलभी देखे, धनलग्नमें फूल देखे, पके फल मिलें ॥ ६ ॥

मृगोदये नदीं नारीं पुमान्स्वप्नेषु पश्यति ।
कुंभोदये च मुकुरं मीने स्वर्णं जलाशयम् ॥ ७ ॥

मकरलग्न होवे तो नदीको स्त्रीको और पुरुषको देखे। कुंभलग्नमें कांच देखे। मीनलग्नमें सुवर्ण और पानीका स्थान देखा ऐसा कहै ॥ ७ ॥

तुर्यें तिष्ठति शुक्रे च राजतं वस्तु पश्यति ।
आदित्यश्चेन्मृतान्पुंसः पतनं शुष्कशाखिनाम् ॥ ८ ॥

चौथा शुक्र होवे तो चाँदीकी वस्तु देखे। चौथे सूर्य होवे तो मरे आदमी देखे और सूखे वृक्ष गिरे देखे ॥ ८ ॥

चन्द्रश्चेत्प्लवनं सिन्धौ राहुर्मद्यं विषं भवेत् ।
अत्र किंचिद्विशेषोऽस्ति छत्रारूढोदयेषु च ॥ ९ ॥

शुक्रः स्थितश्चेत्सुश्वेतसौधं सौम्योऽमरान्वदेत् ।
चतुर्थस्य वशात्स्वप्नं ब्रूयाद्गृहनिरीक्षणैः ।
अत्रानुक्तं तदखिलं ब्रूयात्पूर्वोक्तवर्त्मना ॥ १० ॥

इति ज्ञानप्रदीपे स्वप्नकाण्डम् ॥ १७ ॥

चंद्र चौथा होवे तो समुद्रमें तैरना । राहु होवे तो मद्य पानी पीनेकी दारू और विष कहना । छत्र आरूढलग्न इनमें शुक्र होवे तो सफेद हवेली महल कहै । बुध होवे तो देवताओंको स्वप्न जानो । चतुर्थसे स्वप्नविचार करे और दृष्टिकोभी विचारे । इसमें कोई बात रही होवे तो पहले कहे हुए मार्गसे विचारके कहो ॥ ९ ॥ १० ॥ इति स्वप्नकाण्डम् ॥ १७ ॥

शकुनकाण्डम् ॥ १८ ॥

प्रयाणे शुभाशुभनिमित्तज्ञानम् ।

अथोभयर्क्षे पथिको दुर्निमित्तो निवर्तते ॥ १ ॥

इसके अनंतर लग्न द्विस्वभाव राशि होवे तो परदेशजानेवाले आदमीको शकुन अच्छा नहीं होवे इस कारणसे पीछे लौटता है ॥ १ ॥

चरोदये निमित्तान्यादाय यायादितीरयेत् ।
स्थिरोदये निमित्तानां विरोधे न च गच्छति ॥ २ ॥

चरराशियोंके उदयमें शकुन अच्छे होनेके कारणसे गमन करें, स्थिरलग्नमेंभी कुछ अच्छे कुछ खराब इस प्रकार शकुन होनेसे मुसाफिर गमन नहीं करे ॥ २ ॥

चन्द्रोदये दिवाभीतचाषापारावतादयः ।
शकुना भयदा दृष्टा इति ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ३ ॥

उदय यानी लग्नमें चंद्र होवे तो घूघू नीलकंठ परेवा आदि पक्षी भयको देनेवाले इनको देखे ऐसा कहे ॥ ३ ॥

गुरूदये तथा काकभारद्वाजादिपक्षिणः ।
मन्दोदये कुलिङ्गः स्याज्ज्ञोदये पिङ्गलो भवेत् ॥ ४ ॥

लग्नमें गुरु होवे तो कौवा तथा भारद्वाज कहै, शनि लग्नमें होवे तो चिडिया पक्षी, बुध होवे तो पिंगल याने खूसर जो घुग्घूसे आकारमें छोटी होती है, घूग्घूकीही जाति हैं ॥ ४ ॥

सूर्योदये च गरुडः सव्यासव्यवशाद्भवेत् ।
स्थिरराशौ स्थिरान्पश्येच्चरैस्तिर्यग्गता इति ॥ ५ ॥

लग्नमें सूर्य होवे तो गरुड कहना, परंतु बुद्धिसे दाहिनो जीमनो कहै । स्थिरराशि होवे तो स्थिरशकुन देखे हैं । चर-राशि होवे तो जानवर देखे हैं ॥ ५ ॥

उभयेऽध्वनिवृत्तिः स्याद्ग्रहस्थितिवशादमी ।
राहोर्गोला विधोश्चापो ज्ञस्य छुच्छुंदरी भवेत् ॥ ६ ॥

द्विस्वभाव होवे तो रस्ता चलना बंद होवे, ये सब ग्रहोंकी स्थितिसे कहै । राहु होवे तो गोला, चंद्रका नीलकंठ, बुधकी छुछुंदरि ॥ ६ ॥

दधि शुक्रस्य जीवस्य क्षीरं सर्पिरुदाहृतम् ।
भानोश्च श्वेतगरुडः शिवा भौमस्य कीर्तिता ॥ ७ ॥

शुक्रका दही, गुरुका दूध तथा घृत, सूर्यका सफेद गरुड, मंगलकी स्यारी ॥ ७ ॥

शनेस्तस्करवह्नी च निमित्तं दृष्टमादिशेत् ।
भौमस्य श्वानभल्लूकभारद्वाजशशा इति ॥ ८ ॥

शनिका चोर तथा अग्नि, मंगलका कुत्ता, रीछ, भारद्वाज, खर्गोश ॥ ८ ॥

उलूकस्तित्तिरिश्चैव कपोतश्च गुरोरमी ।
शुक्रस्य पक्षिणो ब्रूयाद्गगने सरटस्तथा ॥
जीवकाण्डप्रकारेण पक्षिणोऽन्यान्विचारयेत् ॥ ९ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे शकुनकाण्डम् ॥ १८ ॥

घूघू तीतर कबूतर ये तीनों गुरुके, शुक्रके पक्षी तथा गिरगिट । जीवकांडप्रकार पहले वर्णन करा उस हिसाबसेभी कहै ॥ ९ ॥ इति शकुनकाण्डम् ॥ १८ ॥

विवाहकाण्डम् १९.

स्त्रीणां वैधव्यमृतप्रजात्वादिज्ञानम् ।

प्रश्ने वैवाहिके लग्ने कुजसूर्यबुधा यदि ।
वैधव्यं शीघ्रमायाति सा नारी नात्र संशयः ।
उदये मन्दगे नारी रिक्ता मृतसुता भवेत् ॥ १ ॥

अब जिस स्त्रीका विवाह हुआ है उसको सौभाग्य आदि प्राप्त होनेके प्रश्न कहते हैं–प्रश्नलग्नमें मंगल, सूर्य, बुध होवे तो उस नारीको विधवापन जल्दी प्राप्त होवे है। लग्नमें शनि होवे तो वह नारी बाँझ अथवा उसके बालक बचे नहीं ॥ १ ॥

चन्द्रोदये तु मरणं दम्पत्योः शीघ्रमेव च ।
सितजीवबुधा लग्ने यदि तौ दीर्घजीवनौ ॥ २ ॥

लग्नमें चंद्र होवे तो स्त्री पुरुष दोनों मरते हैं; लग्नमें बुध गुरु शुक्र होवे तो स्त्री और पुरुष बहुत दिन जीवें हैं ॥ २ ॥

द्वितीयस्थे निशानाथे बहुपुत्रवती भवेत् ।
स्थिता यद्यर्कमन्दारा मनःक्लेशो दरिद्रता ॥ ३ ॥

दूसरे स्थानमें चंद्र होवे तो उस स्त्रीके बहुत पुत्र होते हैं; द्वितीय सूर्य मंगल शनि होवें तो मनको दुःख दरिद्रपना रहे॥ ३॥

व्यभिचारिण्यादियोगः ।

द्वितीये राहुसंयुक्ते सा भार्या व्यभिचारिणी ।
शुभग्रहद्वितीयस्था माङ्गल्यबहुपुत्रदा ॥ ४ ॥

दूसरे राहु होवे तो व्यभिचारिणी होवेगी । शुभग्रह द्वितीय होवें तो बहुतपुत्र तथा मंगल आनंदयुक्त होवे ॥ ४ ॥

वंध्यात्वधनसौभाग्ययोगौ ।

तृतीये जीवराहू चेत्सा वंध्या भवति ध्रुवम् ।
अन्ये तृतीयराशिस्था धनसौभाग्यवृद्धिदाः ॥ ५ ॥

तीसरे राहु गुरु होवें तो वो स्त्री वंध्या होवे, अन्यग्रह तीसरे घर धन सौभाग्यको बढाते हैं ॥ ५ ॥

स्तन्यहीनत्वसापत्न्ययोगौ ।

चतुर्थेऽर्कनिशाधीशौ निष्ठतो यदि पापिनौ ।
शनिः स्तन्येन हीना स्यादहिः सापत्न्यवत्यसौ ॥ ६ ॥

चतुर्थ चंद्र सूर्य होवें तो अथवा शनि होवे तो स्तनोंमें दूध नहीं होगा । यदि राहु होवे तो उस स्त्रीके सौंत होगी ॥ ६ ॥

अल्पजीवित्वव्याधिपीडायोगौ ।

बुधजीवारशुक्राश्चेदल्पजीवनवत्यसौ ।
पञ्चमे यदि सौरिः स्याद्व्याधिसंपीडिता भवेत् ॥ ७ ॥

बुध मंगल गुरु शुक्र होवें तो थोडे दिन बचेगी । (पंचममें यदि) शनि होवें तो बीमार रहेगी ॥ ७ ॥

बहुपुत्रत्वादियोगः ।

शुक्रजीवबुधाः स्युश्चेद्बहुपुत्रवती वधूः ।
चद्रादित्यौ तु वंध्या स्यादहिश्चेन्मरणं भवेत् ॥ ८ ॥

शुक्र, बुध, पंचम होव तो बहुतपुत्र होवेंगे । सूर्य चंद्र होवें तो वाँझ होवे है राहु पंचम होवे तो स्त्रीका मरण कहै । मंगल पंचम होवे तो पुत्रोंका नाश होवे ॥ ८ ॥

पुत्रनाशवैधव्यादियोगः ।

आरश्चेत्पुत्रनाशः स्यात्तस्थे पाणिग्रहोचिते ।
षष्ठे शशी चेद्विधवा बुधः कलहकारिणी ॥ ९ ॥

छठे स्थानमें चंद्रके होनेसे स्त्री विधवा होती है । बुध होवे तो स्त्री लोगोंसे लडाई करेगी ॥ ९ ॥

माङ्गल्यदैर्घ्ययोगः ।

षष्ठे तिष्ठति शुक्रे चेद्दीर्घमङ्गलकारिणी ।
अन्ये तिष्ठन्ति चेन्नारी सुखिनी वृद्धिमत्यपि ॥ १० ॥

षष्ठे (छठे) स्थानमें शुक्र होवे तो अखण्ड सुहागिनी होवै और अन्य छठे ग्रह होवें तो सुखवती और भाग्यवती होवे ॥ १० ॥

वैधव्यादियोगः ।

सप्तमस्थे शनौ नारी तरसा विधवा भवेत् ।
व्याधिग्रस्ता भवेन्नारी सप्तमस्थे रवौ यदि ॥ ११ ॥

सातवाँ शनि होवे तो विधवा होवे । सातवाँ सूर्य होवे तो बीमार रहेगी ॥ ११ ॥

पुनर्भूयोगः ।

सप्तमस्थे निशानाथे ज्वरपीडावती भवेत् ।
परेणापहृता याति कुजस्तिष्ठति सप्तमे ॥ १२ ॥

सप्तम चंद्र होवे तो तापकी पीडा रहेगी, मंगल सप्तम होवे तो दूसरा हरण करके लेजावे ॥ १२ ॥

बुधजीवौ समृद्धिः स्याद्राहुश्चेद्विधवा भवेत् ।
शुक्रश्चेत्सप्तमे राशौ वधूर्मृत्युं प्रयास्यति ॥ १३ ॥

सप्तम बुध गुरु होवे तो बढती होती है । राहु होवे तो विधवा होवे । सप्तममें शुक्र होवे तो वधू मरणको प्राप्त होवे ॥ १३ ॥

अष्टमस्थाः शुक्रगुरुभुजङ्गा नाशयन्ति च ।
शनिज्ञौ वृद्धिदौ चन्द्रो मारयत्येव भामिनीम् ॥ १४ ॥

अष्टम शुक्र गुरु राहु नाश करते हैं, शनि बुध बढानेवाले हैं । चन्द्र स्त्रीको मारता है ॥ १४ ॥

आदित्यारौ पुनर्भूः स्यात्प्रश्ने वैवाहिके वधूः ।
नवमे यदि सौम्यः स्याद्व्याधिहीना भवेद्वधूः ॥ १५ ॥

अष्टम सूर्य मंगल होवे तो दूसरा धनी करेगी, नवम बुध होवे तो बीमारी कभी नहीं होवे ॥ १५ ॥

बहुपुत्रवन्ध्यात्वयोगौ ।

जीवचन्द्रौ यदि स्यातां बहुपुत्रवती भवेत् ।
अन्ये तिष्ठन्ति नवमे यदि वन्ध्या न संशयः ॥ १६ ॥

जीव याने गुरु चन्द्र नवम होवें तो पुत्रवती होती है। अन्य ग्रह नवम होवें तो वन्ध्या होती है ॥ १६ ॥

दशमे यदि चन्द्रः स्याद्वन्ध्या भवति भामिनी।
भार्गवो यदि वेश्या स्याद्विधवार्किकुजादयः ॥ १७॥

दशम चंद्र होवे तो वन्ध्या होवे। दशम शुक्र होवे तो वेश्या याने बाजारमें कसब करे। दशम मंगल शनि आदि पापग्रह होवें तो विधवा कहै ॥ १७ ॥

रिक्ता गुरुश्चेज्ज्ञादित्यौ यदि तस्याः शुभं वदेत्।
लाभस्थानगताः सर्वे पुत्रसौभाग्यवृद्धिदाः ॥ १८ ॥

गुरु दशम होवे तो रिक्ता याने विना बेटा बेटी व पतिके कहना। दशम सूर्य बुध शुभ हैं, एकादशमें सब ग्रहोंका फल शुभ है ॥ १८ ॥

सुरापायोगः।

लग्नाद्द्वादशगश्चन्द्रो यदि स्यान्नाशमादिशेत्।
शनिभौमौ यदि स्यातां सुरापानवती भवेत् ॥ १९॥

लग्नमें द्वादश चन्द्र होवे तो नाश कहै, द्वादश मंगल शनि होवें तो दारूपीनेवाली होती हैं ॥ १९ ॥

बुधे पुत्रवती जीवे धनधान्यवती वधूः।
सर्पादित्यौ स्थितौ वंध्या शुक्रः सुखवती भवेत्॥२०॥

इति ज्ञानप्रदीपे विवाहकाण्डम् ॥ १९ ॥

बुध होवे तो पुत्रवती, गुरु होवे तो धन और धान्यसे युक्त होती है। सूर्य और राहु होवें तो वध्न्या, शुक्र बारहवाँ होवे तो सुखी होती है ॥ २० ॥ इति विवाहकाण्डम् ॥ १९ ॥

कामकाण्डम् २०.

स्त्रीपुरुषयो रत्यादिज्ञानम् ।

स्त्रीपुंसोरतिभोगांश्च स्नेहास्नेहौ पतिव्रता ।
शुद्धाशुद्धौ क्रमात्प्रोक्तौ शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ १ ॥

अब स्त्रीपुरुषोंके भोग प्रेम लडाई, पतिव्रता याने अच्छा चलन खराब चलन ये सब वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

दुष्टस्त्रीज्ञानम् ।

पृच्छकादुदयारूढकेन्द्रेषु भुजगो यदि ।
तेषां दुष्टस्त्रियः साक्षाद्देवानामप्यसंशयः ॥ २ ॥

प्रश्नलग्न आरूढ इनके केंद्रमें राहु होवे तो देवताकी स्त्रीभी दुष्ट होगी ॥ २ ॥

पतिव्रतायोगः ।

लग्नादेकादशेऽस्ते च तृतीये दशमे शशी ।
जीवदृष्टियुतस्तिष्ठेद्यदि भार्या पतिव्रता ॥ ३ ॥

लग्नसे एकादश सप्तम तृतीय दशम चन्द्र होवे और उसमें गुरुकी दृष्टि होवे वा युक्त हो तो पतिव्रता जानो ॥ ३ ॥

दुष्टस्त्रीज्ञानम् ।

चन्द्रं पश्यन्ति पुंखेटास्तेन युक्ता भवन्ति चेत् ।
तद्भार्या दुर्जनी भूयादितिशास्त्रविदो विदुः ॥ ४ ॥

चंद्रको पुरुषग्रह देखे वा युक्त होवे तो उसकी स्त्री दुष्ट है॥ ४ ॥

बन्धुविद्वेषिणीयोगः ।

सप्तमस्थद्विषत्खेटैर्दृष्टो नीचारिगः शशी ।
बन्धुविद्वेषिणी लोके भ्रष्टा स्याच्च शुभे शुभा ॥ ५ ॥

सप्तमस्थ नीचे अथवा शत्रुसेभी चंद्रको शत्रुग्रह देखे तो वह स्त्री बंधुओंसे वैरकरनेवाली तथा भ्रष्ट याने धर्मसे नहीं चलेगी। परंतु वे ग्रह शुभ होवें तो अच्छाफल कहना ॥ ५ ॥

पतिव्रतायोगः ।

भानुजीवौ निशाधीशं पश्यन्तौ वा युतौ यदि ।
पतिव्रता भवेन्नारी रूपिणीति वदेद् बुधः ॥ ६ ॥

चंद्रमाको सूर्य और गुरु देखें वा युक्त होवें तो स्त्री पतिव्रता और अच्छेरूपकी कहै ॥ ६ ॥

कौमार्ये परपुरुषयोगः ।

शुक्रेण युक्तो दृष्टो वा भौमश्चेत्परभामिनी ।
बृहस्पतिर्बुधाराभ्यां युक्तश्चेत्कन्यकारतिः ॥ ७ ॥

मंगलको शुक्र देखे अथवा युक्त होवे तो वो दूसरेकी है अपने कामकी नहीं तथा गुरु, बुध और मंगल इन दोनोंसे युक्त होवे तो कन्या बाल्यावस्थामें पुरुषसे संग करेगी ॥ ७ ॥

प्रष्टुरनेकविधभार्यायोगः ।

शुक्र[1]वर्गयुते भौमे भौमवर्गयुते भृगौ ।
प्रष्टुः स्युर्विविधा भार्यास्तासु दोषो भवष्यति ॥ ८ ॥

शुक्रके वर्गसे युक्त मंगल होवे तथा मंगलके वर्गसे युक्त शुक्र होवे तो प्रश्नकरनेवालेकी नानाप्रकारकी स्त्रियें होती हैं परन्तु सब स्त्रियें खराब होती हैं ॥ ८ ॥

१--"बृहस्पतिः शुक्रवर्गे भौमवर्गयुते भृगौ ।
पृच्छको विधवाभर्त्ता सा सदोषा भविष्यति" ॥ इतिपाठान्तरम् ।

राजपत्नीसंयोगज्ञानम् ।

भानुवर्गयुते शुक्रे राजस्त्रीरतिभोगिनी ।
जीववर्गयुते चन्द्रे स्नेहेन रतिमानवा ॥ ९ ॥

सूर्यके वर्गमें शुक्र होवे तो राजाकी स्त्रीसे भोग होवे । चंद्रमा गुरुके वर्गमें होवे तो प्रेमसे रति होवेगी ॥ ९ ॥

स्वैरिण्यादियोगः ।

चन्द्रस्त्रीवर्गयुक्तश्चेत्स्त्रीस्वतन्त्रवती भवेत् ।
शनैश्चरेण युक्तश्चेदतीव व्यभिचारिणी ॥ १० ॥

चंद्रमा जो स्त्रीवर्गमें होवे तो ऐसे स्त्रीसे रति होगी कि, वो आप स्वाधीन होगी । चन्द्रमा शनि युक्त होवें तो वो स्त्री व्यभिचारिणी है ॥ १० ॥

शत्रुस्त्रीसंभोगज्ञानम् ।

पापवर्गयुते दृष्टे शुक्रश्चेद्व्यभिचारिणी ।
अरिवर्गयुतश्चन्द्रो यद्यमित्रवधूरतिः ॥ ११ ॥

शुक्र पापग्रहोंसे युक्त होवे अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट होवे तो व्यभिचारिणी जानो। चन्द्र शत्रुके वर्गमें होवे तो शत्रुकी स्त्रीसे भोग होवे ॥ ११ ॥

हीनजातीयस्त्री मित्रस्त्रीरतियोगौ ।

नीचवर्गयुतश्चन्द्रो नीचस्त्रीभोगकामुकः ।
मित्रवर्गयुतश्चन्द्रो मित्रवर्गवधूरतिः ॥ १२ ॥

चन्द्र नीचग्रहके वर्गमें होवे तो नीचजातिकी स्त्रीसे भोग कहै । चन्द्र मित्रवर्गमें होवे तो मित्र स्त्रीसे भोग कहै ॥ १२ ॥

स्वस्त्रिया रतियोगः ।

स्वक्षेत्रे यदि शीतांशुः स्वभार्यायां रतिर्भवेत् ।
स्ववर्गयुक्तश्चन्द्रश्चेत्स्वोच्चवंशस्त्रिया रतिः ॥ १३ ॥

स्वक्षेत्रमें चंद्र होवे तो स्वस्त्रीसे भोग हो, अपने वर्गमें चन्द्र होवे तो अपनेसे ऊंचे वंशकी स्त्रीसे भोग कहना ॥ १३ ॥

उदासीनस्त्रीयोगः ।

उदासीनग्रहयुतो दृष्टो वा यदि चन्द्रमाः ।
उदासीनवधूभोगमिति चाहुर्मनीषिणः ॥ १४ ॥

चंद्रमा समग्रहसे युक्त या दृष्ट होवे तो ऐसी स्त्रीभोग कहना जो न शत्रुकी है न मित्रकी है ॥ १४ ॥

चौर्यरतियोगः ।

लग्ने च दशमेऽस्ते च पञ्चमे शनियुक् शशी ।
चोररूपेण कथयेद्रात्रौ स्वप्नवधूरतिः ॥ १५ ॥

लग्नमें दशममें सप्तममें पंचममें चंद्र शनिसे युक्त होवे तो रातको सोई हुई स्त्रीसे चोर बनके रति होवे ॥ १५ ॥

एकवारं वा द्विवारं रतिज्ञानम् ।

ओजोदये तदधिपे त्वेकमैथुनमुच्यते ।
समोदये तदधिपे समस्थे द्वे रती तथा ॥ १६ ॥

कितनी दफे भोग होवे ऐसा प्रश्न होवे तो विषमलग्न होवे और विषम स्थानमें लग्नेश होवे तो एकवार मैथुन कहना, समलग्न और समराशि ये लग्नेश्वर होवें तो दो दफे मैथुन कहे ॥ १६ ॥

लग्नेश्वरादिवशेन योगकथनम् ।

लग्नेश्वरबलं ज्ञात्वा तेषां किरणसंख्यया ।
अथवा कथयेद्विद्वान्संदृष्टग्रहसंख्यया ॥ १७ ॥

लग्नेश्वरका बल जानकर उसके किरणकी संख्या जानकर कहना । अथवा देखनेवाले ग्रहोंकी संख्यासे कहो ॥ १७ ॥

दम्पत्योः पृथक्शयनादियोगः ।

चन्द्रे भौमयुते दृष्टे कलहेन पृथक्शयः ।
भृगौ सौरियुते दृष्टे स्वस्त्रीकलह उच्यते ॥ १८ ॥

चंद्र मंगलसे युक्त या दृष्ट होवे तो स्त्रीपुरुषोंमें लडाई होकर अलग अलग शयन करेंगे । शुक्र शनिसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो व्याहता स्त्रीसे कलह होवे है ॥ १८ ॥

स्वस्त्रीया कलहयोगः ।

चतुर्थे च तृतीये च पंचमे सप्तमेऽपि वा ।
चंद्रे शुक्रयुते दृष्टे स्वस्त्रिया कलहो भवेत् ॥ १९ ॥

चतुर्थ तृतीय पंचम सप्तम चंद्र होवे और चंद्रको शुक्र देखे अथवा युक्त होवे तो भी अपने स्त्रीसे लडाई कहना ॥ १९ ॥

रतिकाले स्त्रिया वस्त्रच्छेदज्ञानम् ।

तदीयवसनच्छेदं रचितं परिकीर्तयेत् ।
सप्तमे पापसंयुक्ते दशमे पापसंयुते ॥ २० ॥

सप्तम अथवा दशममें पापग्रह होवे तो रति समयमें स्त्रीका कपडा फाडा हुआ कहै ॥ २० ॥

स्त्रीकलहेन भूशय्यादिज्ञानम् ।

तृतीये बुधसंयुक्ते स्त्रीविवादात्स्थलेशयः ।
लग्ने चंद्रयुते भौमे द्वितीयस्थे तदा निशि ॥ २१ ॥

जागरं चोरभीत्यर्थं राशिनक्षत्रसंधिषु ।
दृष्टश्चेद्विधवाभोगमकरोदिति कीर्तयेत् ॥ २२ ॥
तत्संधौ शुक्रसौम्यौ चेत्तदा जात्याः पतिं वदेत् ॥२३॥

बुध तीसरा होवे तो स्त्रीकी लडाईसे जमीनपे निद्रा करेंगे। लग्नमें चंद्र होवे और मंगल दूसरा होवे तो रात्रिमें चोरके डरसे जागरण होवे राशि और नक्षत्रोंके संधिमें दृष्ट होवे तो विधवासे भोग कहै। राशिनक्षत्रके संधिमें शुक्र बुध होवे तो स्वजातिका पति कहै ॥ २१-२३ ॥

दम्पत्योः प्रीत्यप्रीतियोगः ।

यत्र कुत्रापि शशिनं पापाः पश्यन्ति चेत्तदा ।
पुंसि चासूयति वधूः शुभाश्चेत्पुरुषप्रिया ॥ २४ ॥
सात्त्विकाश्चन्द्रजीवार्का राजसौ शुक्रसोमजौ ।
तामसौ शनिभूपुत्रौ चैवं स्त्रीपुंगुणाः स्मृताः ॥ २५॥

इति ज्ञानप्रदीपे कामकाण्डम् ॥ २० ॥

चंद्रको पापग्रह देखे तो पुरुषसे प्रीति नहीं होवेगी। यदि शुभग्रह देखे तो पुरुषकी प्रीति कहै। अब ग्रहोंका सात्विकादि भेद कहते हैं—चंद्र गुरु सूर्य ये तीन सात्विक हैं। शुक्र बुध राजस हैं। मंगल शनि तामस हैं इसी प्रकार याने ग्रहोंके हिसाबसे स्त्री पुरुषोंके गुण जानो ॥२४॥२५॥ इति कामकांडम्॥२०॥

पुत्रप्रश्नकाण्डम् २१.

पुत्रोत्पत्तौ स्त्रीप्रश्नः ।

पुत्रोत्पत्तिनिमित्तं यत्प्रश्ने स्त्रीभिः कृते सति ।
उदयारूढछत्रेषु राहुश्चेद्गर्भमादिशेत् ॥ १ ॥

लग्नाद्वा चन्द्रलग्नाद्वा त्रिकोणे सप्तमेऽपि वा ।
बृहस्पतौ स्थिते वापि यदि पश्यति गर्भिणी ।
शुभवर्गेण युक्तश्चेत्सुखप्रसवमादिशेत् ॥ २ ॥

पुत्रके विषयमें स्त्री प्रश्न करे तो लग्न आरूढ छत्रमें राहु होवे तो गर्भ है ऐसा कहै । लग्नसे अथवा चन्द्रसे नवम, पंचम, सप्तम, गुरु होवे वा इन स्थानोंको गुरु देखे तो स्त्री गर्भिणी कहै। जो गुरु शुभवर्गका हो तो सुखसे प्रसव होगी ॥ १ ॥ २ ॥

गर्भारिष्टयोगः ।

अरिनीचगृहस्थश्चेत्सुतारिष्टं भविष्यति ।
प्रश्नकाले तु परिधौ वृषे गर्भवती भवेत् ॥ ३ ॥

शत्रुके घरका या नीच घरका होवे तो पुत्रको अरिष्ट होवे। प्रश्नकालमें परिधि वृषका होवे तो गर्भवती जानो ॥ ३ ॥

कन्यापुत्रगर्भिण्यगर्भिणीज्ञानम् ।

तदन्तस्थग्रहवशात्पुंस्त्रीभेदं वदेद्बुधः ।
यत्रयत्र स्थितश्चन्द्रः शुभैर्युक्तस्तु गर्भिणी ॥ ४ ॥
लग्नात्रिनवभूतेषु शुक्रादित्येन्दवः क्रमात् ।
तिष्ठन्ति चेन्न गर्भः स्यादेकत्रैते स्थिता न च ॥ ५ ॥

उसमें जैसे पुरुषग्रह अथवा स्त्रीग्रह होवे तो कन्या, पुत्र कहो चन्द्र शुभग्रहोंसे युक्त कहींभी होवे तो गर्भिणी है, लग्नसे तीसरा शुक्र नवम सूर्य पञ्चम चन्द्र होवे तो स्त्री गर्भिणी नहीं ऐसा कहना । यदि तीनों एकत्र होवे तो गर्भिणी कहै ॥ ४ ॥ ५ ॥

स्त्रीपुंविवेके गर्भिण्याः पृष्टे वा तत्र कालके ।
परिवेषादिकैर्दृष्टे तस्या गर्भो विनश्यति ॥ ६ ॥

किसीने प्रश्नकिया कि, इस गर्भिणीको पुत्र होवेगा या कन्या तो परिवेषादिकोंसे दृष्ट होवे तो उसका गर्भनाश होवेगा ॥ ६ ॥

लग्नादोजस्थिते चन्द्रे पुत्रं सूते समे सुताम् ।
वशान्नक्षत्रराशीनां यथायोगं सुतं सुताम् ॥ ७ ॥

लग्नसे विषमस्थानमें चन्द्र होवे तो पुत्र होवे समस्थानमें होवे तो कन्या होवे तथा नक्षत्र और राशिसेभी विचारके पुत्र कन्या जैसा नक्षत्र जैसी राशि होवे वैसा कहे ॥ ७ ॥

लग्नात्तृतीयनवमदशमैकादशेष्वपि ।
भानुस्थितश्चेत्पुत्रः स्यात्तथैव च शनैश्चरः ॥ ८ ॥

लग्नसे तृतीय नवम दशम एकादश इतने स्थानोंमें सूर्य होवे तो पुत्र होवे और शनैश्चरभी पूर्वोक्तराशिमें होवे तो भी पुत्र कहे ॥ ८ ॥

ओजस्थानगतः सर्वे ग्रहाश्चेत्पुत्रसंभवः ।
समस्थानगताः सर्वे यदि पुत्री न संशयः ॥ ९ ॥

सब ग्रह विषम होवें तो पुत्र, तथा समस्थानमें होवें तो कन्या होवे ॥ ९ ॥

आरूढात्सप्तमं राशिं यावच्छीतांशुरेष्यति ।
तावन्नक्षत्रसंख्याकैः सूते सा दिवसैः सुतम् ॥ १० ॥

इति ज्ञानप्रदीपे पुत्रप्रश्नकाण्डम् ॥ २१ ॥

अब दिनोंकी अवधि कहते हैं—आरूढसे सप्तमराशिपर जबतक चंद्र आवेगा उतने नक्षत्र संख्याके दिनोंमें सुत अथवा सुता होवेगी ॥ २१ ॥ इति पुत्रप्रश्नकाण्डम् ॥ २१ ॥

सुतारिष्टकाण्डम् २२.

जन्मकाले मातृपुत्रमरणयोगाः ।

सुतारिष्टमथो वक्ष्ये सद्यः प्रत्ययकारकम् ।
लग्नात्षष्ठस्थिते चन्द्रे तदस्ते पापसंयुते ॥ १ ॥
मातुः सुतस्य मरणं किन्तु पंचमषष्ठयोः ।
पापास्तिष्ठन्ति चेन्मातुर्मरणं भवति ध्रुवम् ॥ २ ॥

पुत्रके जन्म होनेपर उसको अरिष्टयोग कहते हैं। लग्नसे छठे चंद्र होवे और चंद्रसे सप्तम पापग्रह होवे तो माता पुत्र दोनोंका मरण होवे. यदि पंचम छठे पापग्रह होवें तो माताका निश्चय मरण होवे ॥ १ ॥ २ ॥

पुत्रस्याक्षिभङ्गयोगः ।

द्वादशे चन्द्रसंयुक्ते पुत्रवामाक्षिनाशनम् ।
व्ययस्थे भास्करे नश्येत्पुत्रदक्षिणलोचनम् ॥ ३ ॥

प्रश्नमें बारहवाँ चंद्र होवे तो पुत्रका बाँयाँ नेत्र नाश होवेगा । वैसेही बारहवें स्थानमें सूर्य होवे तो दाहिनी आँख नाश होवे है ॥ ३ ॥

मातापित्रोर्मरणयोगः ।

पापाः पश्यंति भानुं चेत्पितुर्मरणमादिशेत् ।
चन्द्रेण युक्ते दृष्टे वा मातुर्मरणमादिशेत् ॥ ४ ॥

पापग्रह सूर्यको देखे तो पिताका मरण जानो, चंद्रसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो माताका मरण कहै ॥ ४ ॥

मातापित्रोरोगोत्पत्तियोगः ।

चंद्रादित्यौ गुरुः पश्येन्मातापित्रोर्गदो भवेत् ।
यदि लग्नगतो राहुर्जीवदृष्टिविवर्जितः ॥
जातस्य मरणं शीघ्रं वदेदत्र न संशयः ॥ ५ ॥

गुरु चंद्रको और सूर्यको देखे तो मा बापको रोग होवे । यदि लग्नमें राहु होवे और उसपर गुरुकी दृष्टि न होवे तो पैदा हुआ जो बालक वह शीघ्र मरेगा ॥ ५ ॥

जातमात्रस्य म णं वा नेत्रद्वयभंगः ।

द्वादशस्थावर्कचन्द्रौ नेत्रयुग्मं विनश्यति ॥ ६ ॥

बारहवें सूर्य चंद्र होवे तो दोनों नेत्र नष्ट होते हैं ॥ ६ ॥

पञ्चषष्ठस्थशनौ मातृपितृमरणयोगः ।

षष्ठे वा पंचमे पापाः पश्यन्तीन्दुदिवाकरौ ।
मातापित्रोस्तु मरणं तयोर्मंदस्थितो यदि ॥ ७ ॥

छठे या पाँचवें पापग्रह होवें और वे पापग्रह चंद्र सूर्यको देखें तो माता पिताका मरण होता है परंतु पंचम षष्ठ शनि अवश्य हो ७

भ्रातुर्मातुलस्य च नाशकारकयोगः ।

भ्रातृनाशं तथा भौमो मातुलस्य मृतिं वदेत् ॥८॥

भाईका और मामाका नाश मंगल करता है ॥ ८ ॥

अरिष्टनाशयोगो व्यभिचारोत्पन्नापत्यज्ञानं च ।

उदयादित्रिकस्थेषु कंटकेषु शुभा यदि ॥ ९ ॥
मित्रस्वात्युच्चवर्गेषु सर्वारिष्टं विनश्यति ।

लग्नं च चंद्रलग्नं च जीवो यदि न पश्यति ॥ १० ॥
पापाः पश्यन्ति चेत्पुत्रो व्यभिचारेण जायते ।

इति ज्ञानप्रदीपे सुतारिष्टकाण्डम् ॥ २२ ॥

लग्न आरूढ छत्र इनके केन्द्रोंमें शुभग्रहहों मित्रक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री तथा उच्चस्थानमें अथवा उच्चवर्गमें होवें तो सब अरिष्ट दूर होते हैं । अब व्यभिचारसे संतानयोग कहते हैं—लग्नको और चंद्रको गुरु देखे नहीं, पापग्रह देखें तो व्यभिचारसे पुत्रजन्म कहै ॥ ९ ॥ १० ॥ इति ज्ञानप्रदीपे सुतारिष्टकाण्डम् ॥ २२ ॥

क्षुरकाण्डम् २३.

छुरिकालक्षणं सम्यक् प्रवक्ष्यामि यथातथम् ॥ १ ॥

अब खड्गका विचार सम्यक् प्रकारसे कहते हैं ॥ १ ॥

शस्त्रभङ्गादियोगाः ।

राहुणा संयुते चंद्रे शस्त्रे भङ्गो भविष्यति ।
नीचारिस्थाः प्रपश्यन्ति यदि खड्गस्य भञ्जनम् ॥२॥

राहुसे युक्त चंद्र होवे तो शस्त्रका भंग होवे । नीचग्रह शत्रुक्षेत्री ग्रह देखे तो खड्गका भंजन याने कटेगा ॥ २ ॥

शुभग्रहयुते चन्द्रे दृष्टे वास्ते शुभं भवेत् ।
पापग्रहसमेतेषु छत्रारूढोदयेषु च ॥ ३ ॥
प्रष्टा प्रश्नाश्रितः किन्तु तदस्त्रेण हतो भवेत् ।
अथवा कलहात्खड्गं परेणापहृतं भवेत् ॥ ४ ॥

शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट सप्तम चंद्र होवे तो शुभ फल है । छत्र आरूढ लग्न पापग्रहोंसे युक्त होवे तो पृच्छक उसी

हथियारसे मारा जावे । अथवा तकरारसे दूसरा पुरुष शस्त्र छीन लेगा ॥ ३ ॥ ४ ॥

तेषु स्थानेषु सौम्येषु खड्गस्तु शुभदो भवेत् ।
प्रदर्शितस्य खड्गस्य लग्नेऽस्ते पापसंयुते ॥ ५ ॥
खड्गस्यादौ व्रणं भूयात्त्रिकोणे पापसंयुते ।
शस्त्रभङ्गस्ततो व्योम्नि चतुर्थे पापसंयुते ॥ ६ ॥
खड्गस्य भङ्गो मध्ये स्यादिति ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ।
एकादशे तृतीये च पापे शस्त्राग्रभञ्जनम् ॥ ७ ॥

पूर्वोक्त स्थानोंमें शुभग्रह होवें तो खड्ग शुभको देनेवाला है । प्रदर्शित याने बताया हुआ जो खड्ग उसके प्रश्नलग्नमें सप्तममें पापग्रह होवें तो खड्गके आदिमें खंडित कहना, नवम पंचम पापग्रह होवें तो शस्त्रका भंग कहै । चौथे दशवें पापी होवें तो बीचमें खड्गका भंग कहे । एकादशमें तृतीयमें पापग्रह होवें तो शस्त्रके अग्रका भंजन होवे ॥ ५-७ ॥

मित्रस्वात्युच्चनीचारिवर्गानधिगता ग्रहाः ।
तत्तद्वर्गस्थलायान्तं शस्त्रमित्यभिधीयते ॥ ८ ॥

मित्रके घरका अपने घरका उच्च शत्रुक्षेत्री और नीचक्षेत्री इन स्थानोंमेंसे जिस स्थानका ग्रह हो उसी स्थानसे खड्ग लाया कहै इसी प्रकारसे सब जानो ॥ ८ ॥

सम्मुखो यदि खड्गी स्य त्तदीयं खड्गमुच्यते ।
तिर्यङ्मुखश्चेत्तच्छस्त्रमन्यदीयमितीरयेत् ॥ ९ ॥

तलवार लेकर सामने आवे तो जानो कि, तलवार उसीकी, तिरछा मुख उसका होवे तो वो हथियार दूसरेका है ॥ ९ ॥

अधोमुखश्चेत्संग्रामे च्युतयाहतमुच्यते ।
तत्तच्चेष्टानुरूपेण स्वान्याहरणविस्मृतिः ॥ १० ॥

युद्धमें नीचे मुख करे तो गिरा हुआ टूटा हथियार जानो; इसी प्रकार सब जानो ॥ इति ज्ञानप्रदीपे क्षुरकाण्डम् ॥ २३ ॥

शल्यकाण्डम् २४.

पादच्छायावशेन भूशल्यज्ञानम् ।

शल्यप्रश्ने तु तत्काले पादभा वसुनेत्रयुक् ।
अभ्यस्तानृपसंख्याप्तं शेषाणां फलमुच्यते ॥ १ ॥

शल्य उसका नाम है कि, खोदनेसे जमीनमें जो पदार्थ मिले; ऐसे शल्य विषयमें प्रश्न करे तो उसी समय अपने पादकी छाया गिनकर उसमें अट्ठाईस जोडे जो संख्या होवे उसमें सोलहका भाग देवे जो बचेंगे उन्होंका फल जानो ॥ १ ॥

कपालास्थीष्टकालोष्टकाष्ठदेवविभूतयः ।
शवाङ्गारकधान्यानि धनपाषाणदर्दुराः ॥ २ ॥
गोस्थिश्वास्थिपिशाचादिक्रमाच्छल्यानिषोडश ।
एषु शल्येषु मण्डूकस्वर्णगोस्थिषु धान्यकम् ॥ ३ ॥
दृष्टं चेदुत्तमं चान्ये सर्वेस्युरशुभास्तथा ।
अष्टाविंशतिकोष्ठेषु वह्निधिष्ण्यादिकं न्यसेत् ॥ ४ ॥
यत्र भे तिष्ठति शशी तत्र शल्यमुदाहृतम् ।
उदग्यक्षादिकं न्यस्येदष्टाविंशतिकोष्ठके ॥

गणयेच्चंद्रनक्षत्रं तत्र शल्यं प्रकीर्तितम् ॥ ५ ॥

जैसे—एक बचे तो कपाल यानी आदमीकी खोपडी, दोसे हड्डी, तीनसे ईंट, चारसे मृत्तिका, पाँचसे लकडी, छः से देवताकी मूर्ति, सातसे भस्म, आठसे मुर्दा, नौसे कोयला, दशसे नाज, ग्यारहसे धन, बारहसे पत्थर, तेरहसे मडूक, चौदहसे गायकी हड्डी, पंद्रह बचें तो कुत्ताकी हड्डी, सोलहसे भूत आदि इनमें मंडूक सुवर्ण गायकी अस्थि और नाज यह शुभफलोंके दाता हैं अन्य शल्य अशुभ हैं। ज्ञानप्रदीपमें शल्यप्रकरण अतिसंक्षेपसे लिखाहै इसलिये इस विषयको सविस्तर वर्णन करनेके लिये नरपतिजयचर्याके २७ श्लोक भाषानुवादसहित लिखे जाते हैं अहिबलचक्र आगे लिखा है इसमें कृत्तिकानक्षत्रपर जो सर्पकी सुरत बनरही है उसका नाम शेषका मस्तक है जिस जगहमें धनकी शंका हो उस स्थानकी लंबाई चौडाईके अनुकूल पृथ्वीपर रेखा खींचकर इतना बडा चक्र बनाना जो उस जगहमें मासके इस चक्रसे शल्य और धन अथवा शून्य मालूम होगा। जिस जगह धन होवे उस जगह चक्र स्थापन करे। स्थानेक दरवाजेपर यंत्रका मुख करे ॥ २–५ ॥

अथ अहिचक्रज्ञानं निर्माणं च।

[अहिचक्रं प्रवक्ष्यामि यथा सर्वज्ञभाषितम्।
द्रव्यं शल्यं तथा शून्यं येन जानाति साधकः ॥ १ ॥
ऊर्ध्वं रेखाष्टकं लेख्यं तिर्यक् पंच तथैव च ॥
अहिचक्रं भवत्येवमष्टाविंशतिकोष्ठकम् ॥ २ ॥

इस प्रकार यंत्र बनावे दरवाजेके नजीक दोनों तरफ मघा और भरणी तथा बीचमें कृत्तिका आवे । तिरछी पाँचरेखा और सूधी आठ ऐसे अट्ठाईस कोठोंका यंत्र बनावे ॥ १ ॥ २ ॥

निधिर्निवर्तनैकस्थः संभ्रांतो यत्र भूतले ।
तत्र चक्रमिदं स्थाप्यं स्थानद्वारमुखस्थितम् ॥ ३ ॥

जहाँ धन है ऐसा वहम हो वहाँ यह यंत्र स्थापन करे जहाँ निधिका दरवाजा हो वहाँ उस यंत्रको इस ढबसे रक्खे कि दरवाजेपर कृत्तिका आवे ॥ ३ ॥

तत्र नक्षत्रलेखनम् ।

तत्र पौष्णाश्वियाम्यर्क्षं कृत्तिका पितृभाग्यकम् ।
उत्तराफाल्गुनी लेख्यं पूर्वपंक्त्यां भसप्तकम् ॥ ४ ॥

अब यंत्रमें सूधे नक्षत्र भरे—रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी इस प्रकार ऊपरकी पंक्तिमें लिखना ॥ ४ ॥

अहिर्बुध्न्यादिपादर्क्षं शतभं ब्रह्ममार्पभम् ।
पुष्यहस्तं समालेख्य द्वितीयां पंक्तिमास्थितम् ॥५॥
विधिविष्णुधनिष्ठाख्यं सौम्यं रौद्रपुनर्वसू ।
चित्रभं च तृतीयायां पंक्तौ धिष्ण्यस्य सप्तकम् ॥६॥
विश्वर्क्षं तोयभं मूलं ज्येष्ठामैत्रविशाखिके ।
स्वाती पंक्तौ चतुर्थ्यां च कृत्वा चक्रं विलोकयेत् ॥७॥
एवं प्रजायते चक्रे प्रस्तारः पन्नगाकृतिः ।
द्वारशाखे मघायाम्ये द्वारस्था कृत्तिका मता ॥ ८ ॥

उत्तराभाद्रपदा, शततारका, रोहिणी, आश्लेषा, पुष्य, हस्त इस प्रकार दूसरी पंक्तिमें । अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, मृग, आर्द्रा, पुनर्वसु, चित्रा इस प्रकार तीसरी पंक्तिमें । उत्तराषाढा, पूर्वाषाढा, मूल, ज्येष्ठा, अनुराधा, विशाखा, स्वाति चौथी पंक्तिमें इस प्रकार यंत्र करके देखे यह प्रस्तार शेषके समान होता है। दरवाजेपर कृत्तिका दोनों तरफ मघा भरणी ये नक्षत्र लिखना ॥ ७—८ ॥

अहिबलचक्रम् ।

रे. चं.	अ. चं.	भ. चं.	कृ. चं.	म. चं.	पु. चं.	उ.
उ.	पु. चं.	श.	रो.	आ. चं.	पु. च.	ह.
अ.	श्र. चं.	ध. चं.	मृ.	आ. च.	पु. चं	चि
उ. चं.	चं.	मू.	ज्ये.	अ.	वि.	स्वा.

अश्वीशपूर्वाषाढादित्रिकं पंच चतुष्टयम् ।
रेवती पूर्वाभाद्रेन्दोर्भानि धिष्ण्यानि भास्वतः ॥ ९ ॥

अश्विनीसे तीन, आर्द्रासे पांच, पूर्वाषाढासे चार, रेवती पूर्वाभाद्रपदा इतने नक्षत्र चंद्रमाके हैं बाकीके सूर्यके हैं ॥ ९ ॥

तात्कालिकचन्द्रसाधनं सोदाहरणम् ।

उदयादिगता नाड्यो भग्नाः षष्ठ्याप्तशेषके ।
दिनेन्दुभुक्तयुक्तोसौ भवेत्तत्कालचन्द्रमाः ॥ १० ॥
षष्टिघ्नन्तं निशानाथं शरवेदाप्तकं पुनः ।
युगैः शेषं भवेद्यत्तत्प्रागादि चक्रनक्रगम् ॥ ११ ॥

चंद्रवत्साधयेत्सूर्यमृक्षस्थं चेष्टकालिकम् ।
पश्चाद्विलोकयेत्तौ च स्वर्क्षे वा चान्यभे स्थितौ १२

वर्त्तमान चंद्रनक्षत्रकी भुक्त घटीको २७ से गुणना और गुणनफलमें ६० का भाग देना, जितनी लब्धि आवे उतनेही नक्षत्र वर्त्तमान नक्षत्रसे आगे गिनलेना. जो आवे वही तत्काल चंद्र है। शेषमें १५ का भाग देना लब्धिसे वर्त्तमान नक्षत्रका गतचरण समझना ।

उदाहरण—इष्टोपरि मृगशिर नक्षत्रकी भुक्तघटी ५२ है इनको २७ से गुणा तो १४०४ हुवे ६० का भाग देनेसे २३ लब्धि आई आर्द्रासे २३ वाँ नक्षत्र अश्विनी है तो मालूम हुआ कि तत्काल मेषका चंद्र अश्विनीपर है इस तरह तत्काल चंद्रमा होता है । अब दिशाका साधन—उस चंद्रको साठसे गुणा करना और पैंतालीससे भागे लब्धिको चारसे भाग दे जो बचे वह दिशा. एक बचे तो पूर्व, दो बचे तो दक्षिण इस प्रकार दिशा जानो । चंद्रके समान सूर्यका भी साधन करे । बुद्धिसे जैसा चंद्रका साधन करा है ऐसा ही सूर्यका करके फिर देखना कि, चंद्र सूर्य अपने नक्षत्रमें हैं या नहीं ॥ १०–१२ ॥

चन्द्रसूर्यादीनां स्वस्वनक्षत्रयोगादिना
निध्यादिपरिज्ञानम् ।

चन्द्रऋक्षे यदार्केन्दू निधिस्तत्र न संशयः ।
भानुऋक्षे स्थितौ तौ चेत्तदा शल्यं च नान्यथा॥१३॥

स्वस्वभं द्वितयं ज्ञेयं नास्ति किंचिद्विपर्यये ।
स्थितं न लभते द्रव्यं चन्द्रे क्रूरग्रहान्विते ॥ १४ ॥
पुष्टे चन्द्रे भवेन्मुद्रा क्षीणे चन्द्रेऽल्पको निधिः ।
ग्रहदृष्टिवशात्सोपि विज्ञेयो नवधा बुधैः ॥ १५ ॥
हेम तारं च ताम्रारं रत्नं कांस्यायसं त्रपु ।
नागं चन्द्रे विजानीयाद्भास्करादिग्रहेक्षिते ॥ १६ ॥
मिश्रैर्मिश्रं भवेद्द्रव्यं शून्यं दृष्टिविपर्यये ।
सर्वग्रहेक्षिते चंद्रे निर्दिष्टोसौ महानिधिः ॥ १७ ॥
शुभक्षेत्रगते चन्द्रे लाभः स्यान्नात्र संशयः ।
पापक्षेत्रे न लाभो हि विज्ञेयः स्वरपारगैः ॥ १८ ॥

चंद्रके नक्षत्रमें चंद्र सूर्य दोनों होवें तो निश्चयसे निधि कहना। सूर्यके नक्षत्रमें दोनों होनेसे शल्य कहै। चंद्र और सूर्य अपने अपने नक्षत्रमें होवें तो शल्य और निधि दोनों हैं। क्षीण चंद्रसे थोडा धन, पुष्टचंद्रसे बहुत धन, ग्रहोंकी दृष्टिसे धातु जाने। सूर्यसे हेम, चंद्रसे मोती, मंगलसे ताम्र, बुधसे पीतल, गुरुसे रत्न, शुक्रसे कांसा, शनिसे लोहा, राहुसे रांग, केतुसे सीसा इस प्रकार जाने। सब ग्रहोंकी दृष्टिसे बडी निधि। शुभग्रहके घरमें चंद्र होवे तो लाभ, क्रूरक्षेत्रमें होवे तो लाभ नहीं होवेगा ॥ १३–१८ ॥

निधिपात्रधातुज्ञानम् ।

हेम तारं च ताम्रं च पाषाणं मृन्मयायसम् ।
सूर्यादिग्रहगे चंद्रे द्रव्यभाण्डं प्रजायते ॥ १९ ॥

भुक्तराश्यंशमानेन भूमानं कोविकैः करैः ।
नीचे विघ्नं परं नीचे चलस्थोऽसौ भवेन्निधिः ॥ २० ॥

अब जिस ग्रहकी राशिमें चंद्रमा स्थित है उसी ग्रहकी धातुसे बने हुए पात्रमें निधि रक्खी है ऐसा कहे । ग्रहोंकी धातु पूर्व कह आये हैं जैसे–सूर्यका सोना, चंद्रका मोती, मंगलका ताँबा इत्यादि । नीचराशिमें ग्रह हो तो जलमें धन है १९॥२०॥

कुडयादिगतद्रव्यज्ञानम् ।

स्वोच्चस्थ ऊर्ध्वगं द्रव्यं नवांशकक्रमेण च ।
परमोच्चे परे तुङ्गे भित्तिस्थमृक्षसंक्रमे ॥ २१ ॥

उच्च होवे तो ऊपर धन है; परमोच्च होवे तो भीतमें जानना २१

१ निधिप्राप्तौ विधानम् ।

चन्द्रांशभुक्तमानेन द्रव्यसंख्या विधीयते ।
तस्या दशगुणा वृद्धिः षड्वर्गेन्दुबलक्रमात् ॥ २२ ॥
ग्रहो मुखं ग्रहश्चैव क्षेत्रपालं च मातृकाः ।
दीपेशं भीषणं रुद्रं यक्षं नागं विदुः क्रमात् ॥ २३ ॥

१–निधि प्राप्तिके लिये निधिद्वार जानना आवश्यक है सो लिखते है–नाग भादों, आश्विन, कार्तिक तीन महीना पूरबके तरफ माथा करके बायें करवट सोवै है जहाँ शेषका शिर तहां निधिका दरवाजा है इसी प्रकार मागशीर्ष, पौष, माघ तीन महीने दक्षिण । फाल्गुन, चैत्र, वैशाख पश्चिम । ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण उत्तरकी तरफ माथा करके सोवै है । जिधर शेषका मस्तक वही निधिका द्वार है । अथवा प्रश्न करनेवाला निधिनाथ है । निधिस्थानमें जिस दिशासे प्रवेश करे वो दिशा निधिस्थानका द्वार है । घरमें निधि होवे तो घरका दरवाजा निधिद्वार है । दरवाजेके तरफ शेषका माथा करे । अथवा तत्काल चंद्रनक्षत्र जिस दिशाके द्वारमें आवे वो निधिद्वार है ॥

ग्रहे होमः प्रकर्तव्यो मुखे नारायणो बलिः ।
क्षेत्रपाले सुरां मांसं मातृकायां महाबलिः ॥ २४ ॥
दीपेशे दीपजा पूजा भीषणे भीषणार्चनम् ।
रुद्रे च रुद्रजो जाप्यो यक्षे यक्षादिशान्तयः ॥ २५ ॥
नागे नागग्रहाः पूज्या गणनाथेन संयुताः ।
लक्ष्मीधरादितत्त्वानि सर्वकार्येषु पूजयेत् ॥ २६ ॥
एवंकृते विधाने हि निरसाध्योपि सिध्यति ।
निधिप्राप्त्या नरा लोके वंदनीया न संशयः ॥२७] ❀

निधिक्षेत्रपरिमापनादिप्रकारः ।

शङ्कास्थलस्य विस्तारायामावन्योन्यताडितौ ।
विंशत्यापहृतं शेषमरत्निरिति कीर्तितम् ॥ ६ ॥
रत्निं गुणित्वा नवभिर्निरिसंतानमुच्यते ॥
तत्प्रदेशं प्रगुण्याङ्कैर्हृत्वा विंशतिभिर्यदि ॥ ७ ॥
शिष्टमङ्गुलमेवोक्तं रत्निप्रादेशमङ्गुलम् ।
एवं क्रमेण रत्न्याद्यमगाधं कथयेद्बुधः ॥ ८ ॥

जिस जगह निधि है ऐसा भ्रम हो उस जगहकी लंबाई और चौडाई दोनोंका गुणाकार करके बीसका भाग देवे । फल आवे उतनी अरत्नि शेषको नौसे गुणकर बीसका भाग देवे फल प्रादेश जानो । शेषको फिर नवसे गुणकर बीससे भागे जो फल आवे

❀ यहां तक यह २७ श्लोक नरपतिजयचर्य्याके लिखेगये हैं इसमें जो निधिप्राप्तिका विधान है सो मूलसेही अर्थ विस्पष्ट है । अब आगे ६ श्लोकसे ज्ञानप्रदीप लिखा जाता है ।

उतने अंगुल, या प्रकारसे अरत्नि प्रादेश अंगुलप्रमाण गहरी जगहको खोदनेसे निधि अथवा शल्य मिलेगा ।

उदाहरण—१० लंबाई ९ चौडाई गुणाकार ९० बीससे भागदेनेसे अरत्नि ४ शेष १०, फिर नौसे गुणाकार बीससे भागदेनेसे ४ प्रादेश ४ अंगुल भये ॥ ६–८ ॥

शल्यपरिज्ञानम् ।

केन्द्रेषु पापयुक्तेषु पृष्टं शल्यं न दृश्यते ॥ ९ ॥
शुभग्रहयुतेष्वेषु शल्यं तत्र प्रजायते ।
पापसौम्ययुते केन्द्रे शल्यमस्तीति निर्दिशेत् ॥ १० ॥

केंद्रमें पापग्रह होवे तो शल्य नहीं, शुभग्रह केंद्रमें होवें तो शल्य है । शुभ पापग्रह होवें तो शल्य है ऐसा कहना ॥ ९ ॥ १० ॥

ब्रह्मराक्षसादिज्ञानम् ।

रविः पश्यति चेद्देवं कुजश्चेद्ब्रह्मराक्षसम् ।
केन्द्रे चन्द्रारसहिते कुजनक्षत्रकोष्ठके ॥
पिपीलिकाधः केन्द्रे तु जीवचन्द्रसमायुते ॥ ११ ॥

सूर्य देखे तो देवता, मंगल देखे तो ब्रह्मराक्षस है । मंगलके नक्षत्रके कोष्ठकसे केंद्रमें चंद्र और मंगल होवें तो मंगलके कोष्ठकमें नीचे चीटियें हैं ॥ ११ ॥

गवाद्यस्थिज्ञानम् ।

जीवस्थोडुगते कोष्ठे स्वर्णं गोपुरुषास्थिनी ॥ १२ ॥

अरत्नि ८१ अंगुलकी होती है और प्रादेश ९ अंगुलका होता है ।

वैसे ही गुरुके नक्षत्रके कोष्ठकमें गुरु चंद्र केंद्रमें होवें तो सुवर्ण तथा गायकी वा आदमीकी हड्डी कहो ॥ १२ ॥

वल्मीकपरिज्ञानम् ।

उदयारूढकेन्द्रेषु स्वभानुर्यदि तिष्ठति ।
राहुस्थर्क्षगते कोष्ठे वल्मीकमुपदीपयुक् ॥ १३ ॥

लग्न तथा आरूढसे केंद्रस्थानमें राहु होतो राहु जिस नक्षत्रपर है उस कोठेमें बामी और उसके पास दीप मिलेगा ॥ १३ ॥

बलवत्पापदृष्टकेन्द्रस्थशुभग्रहवशा-
च्छल्यरजतादिज्ञानम् ।

शुभान्केन्द्रे युतान्पापाः पश्यन्ति बलिनो यदि ।
तत्क्षेत्रे विद्यते शल्यमेषु पापा यदि स्थिताः ॥ १४ ॥
देवयक्षपिशाचाद्यास्तत्र तिष्ठन्त्यसंशयः ।
ग्रहांशुसंख्यया तेषां खातमानं वदेत्सुधीः ॥ १५ ॥
चन्द्रे बुधेन संयुक्ते बुधनक्षत्रकोष्ठके ।
स्वशल्यं विद्यते तत्र केन्द्रे शुक्रेन्दुसंयुते ।
शुक्रस्थितर्क्षगे कोष्ठे रौप्यं श्वेतशिलापि वा ॥ १६ ॥

केन्द्रमें शुभग्रहोंको बलवान् पापग्रह देखें तो उस क्षेत्रमें शल्य मिलेगा परंतु उस क्षेत्रमें पापग्रह होवें तो यह फल कहै कि देव यक्ष पिशाच आदि वहां हैं जानो । ग्रहोंकी किरण आगे कहते हैं उस संख्यासे खोदनेका प्रमाण जानो । चंद्र बुधसे संयुक्त होवे तो बुधनक्षत्रके कोष्ठकमें बुधका शल्य कहै । केन्द्रमें शुक्र चंद्र होवें तो शुक्रके कोष्ठकमें चांदी अथवा सफेद पत्थर कहै ॥ १४–१६ ॥

ग्रहकिरणाः ।

पंचषड्वसुभूतानि सपादैकं तथैव च ।
सार्धरूपाक्षिरवयः सूर्यादीनां कराः स्मृताः ॥
शल्यागाधमनेनैव करेण कथयेत्सुधीः ॥ १७ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे शल्यकांडम् ॥ २४ ॥

पांच, छः, आठ, पाँच, डेढ, आधा तथा दो, बारह, सूर्यादिग्रहोंके किरण हैं । शल्य कितना नीचे है यह किरणसे समझना ॥ १७ ॥ इति शल्यप्रकरणम् ॥ २४ ॥

कूपकाण्डम् २५.

कूपनिर्माणपद्धतिः ।

अथ वक्ष्ये विशेषेण कूपखाते विनिर्णयः ।
आयामे त्वष्टरेखाः स्युर्तिर्यग्रेखास्तु पंच च ॥ १ ॥
एवं कृते भवेत्कोष्ठमष्टाविंशतिसंख्यकम् ।
प्रभाते प्राङ्मुखो भूत्वा कोष्ठेष्वेतेषु बुद्धिमान् ॥ २ ॥
ऐश्ये कोष्ठद्वयं त्यक्त्वा तृतीयादित्रिषु क्रमात् ।
कृत्तिकादित्रयं न्यस्य रौद्रं च तदधोन्यसेत् ॥ ३ ॥
तदुत्तरत्रयेष्वेव पुनर्वस्वादिकं त्रयम् ।
तत्पश्चिमादियाम्येषु यथा चित्रावसानकम् ॥ ४ ॥
तत्कोष्ठपूर्वयोः स्वातिविशाखे न्यस्य तत्परम् ।
प्रदक्षिणक्रमादग्निनक्षत्रान्ताश्च तारकाः ॥ ५ ॥
मध्याह्नाद्दक्षिणाशास्यःपश्चिमास्यो निशामुखात् ।
चक्रमालोकयेद्विद्वान् रात्र्यर्धादुत्तराननः ॥ ६ ॥

प्रथम अट्ठाईस कोठेका कोष्ठक बनावे, तिरछी पांच रेखा और सीधी आठ रेखा करनेसे कोष्ठक होता है। प्रातःकालके समय पूर्वमुख होकरके नीचे लिखे प्रकारसे कोष्ठकको भरना अर्थात् ईशानकोणके दोनोंकोठा छोडकर तीसरे कोठेमें कृत्तिकासे प्रारंभ करके तीन नक्षत्र दक्षिणमें लिखना, मृगशिरके नीचे आर्द्रा लिखकर आर्द्राके आगे उत्तरमें तीन नक्षत्र और लिखना, उसके नीचे मघा लिखना फिर मघासे आगे चार नक्षत्र दक्षिणमें लिखना फिर चित्रासे दो नक्षत्र ऊपर पूर्वमें लिखना फिर उससे आगे अनुराधा लिखकर शेष नक्षत्र जितने कोठे खाली रहेहैं उनमें प्रदक्षिण क्रमसे लिखदेना यह प्रातःकालसे मध्याह्नतकका क्रम है ॥ १—६ ॥

मध्याह्नात्पैत्र्यमारभ्य मैत्रमाद्यं निशामुखात् ।
अर्धरात्राद्धनिष्ठाद्यं पूर्ववद्गणयेत्क्रमात् ॥ ७ ॥
आग्नेय्यां दिशि नैर्ऋत्यां वायव्यां कोष्ठकद्वयम् ।
त्यक्त्वा प्रत्येकमेवं हि तृतीयाद्यं विलोकयेत् ॥ ८ ॥

मध्याह्नसे सायंकाल तक दक्षिणाभिमुख होकर कृत्तिकाके स्थानमें मघासे शुरू करके पूर्वोक्त क्रमानुसार सम्पूर्ण नक्षत्र लिखना इसीतरह सायंकालसे अर्द्धरात्रितक पश्चिमाभिमुख होकर मघाके स्थानमें अनुराधासे प्रारंभ करके सब क्रिया करना और अर्द्धरात्रिसे प्रातःकालपर्यंत अनुराधाके स्थानमें धनिष्ठासे प्रारंभ करके सब नक्षत्र लिखना। समझनेके वास्ते चारों समयके चारों नक्षत्रकोष्ठक पृथक् पृथक् लिख दिये गये हैं उसीके मुवाफिक कोष्ठक लिखना ॥ ७—८ ॥

अथ कूपखातचक्रम् ।

इसे प्रातःकालसे मध्याह्नपर्यंत देखना ।

पूर्व.

उत्तर. | दक्षिण.

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	वि.	अ.
रे.	आ.	पु.	पु.	आ.	स्वा.	ज्ये.
उ.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	मू.
पू.	श.	ध.	श्र.	अ.	उ.	पु.

पश्चिम.

इसे मध्याह्नसे सायंकालपर्यंत देखना ।

दक्षिण.

पूर्व. | पश्चिम.

पु.	आश्ले	म.	पू.	उ.	श्र.	ध.
पु.	वि.	स्वा.	चि.	ह.	अभि.	श.
आ.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	पू.भा.
मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.	उ.भा.

उत्तर.

इसे सायंकालसे अर्द्धरात्रिपर्यंत देखना ।

पश्चिम.

दक्षिण. | उत्तर.

स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	भ.	कृ.
चि.	श्र.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	अ.	रो.
ह.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	मृ.
उ.	पू.	म.	आश्ले.	पु.	पु.	आ.

पूर्व.

इसे अर्द्धरात्रिसे प्रातःकालपर्यंत देखना ।

उत्तर.

पश्चिम. / पूर्व.

अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	आश्ले.	म.
उ.षा.	भ.	अ.	रे.	उ.भा.	पु.	पू.
पू.षा.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	उ.
मू.	ज्ये.	अ.	वि.	स्वा.	चि.	ह.

दक्षिण.

द्वितीयः प्रकारः ।

दिनार्धं सप्तभिर्हृत्वा यल्लब्धं नाडिकादिकम् ।
ज्ञात्वा तत्तत्प्रमाणेन कृत्तिकादीनि विन्यसेत् ॥ ९ ॥
यन्नक्षत्रं तदा सिद्धं प्रश्नकाले विशेषतः ।
कृत्तिकास्थानमारभ्य पूर्ववद्गणयेत्सुधीः ॥ १० ॥
यत्कोष्ठे चन्द्रनक्षत्रं तत्रोदयक्रमाल्लिखेत् ।
तदादीनि क्रमेणैव पूर्ववद्गणयेत्सुधीः ॥ ११ ॥

जिस दिन कोई प्रश्न करे उस रोजके दिनमानको आधा करके सात का भाग देना जो लब्धि आवे उतनेही नक्षत्र कृत्तिकासे आरंभ करके गिन लेना जो आवे वह तत्काल नक्षत्र है । कृत्तिकाके स्थानसे गिनकर पूर्वक्रमानुसार जिस कोष्ठकमें उस दिनका चंद्रनक्षत्र हो उस कोठेमें इस तत्काल नक्षत्रको लिखकर क्रमानुसार सब नक्षत्र स्थापित करना ॥ ९–११ ॥

जलज्ञानम् ।

यत्रेन्दुर्दृश्यते तत्र समृद्धमुदकं भवेत् ।
शुक्रनक्षत्रकोष्ठे वा जलमस्तीत्युदाहरेत ॥ १२ ॥

जहां चंद्र होवे वहां उदक ज्यादा होवे है । शुक्र नक्षत्रके कोठेमें भी जल है ऐसा कहना ॥ १२ ॥

स्वर्णज्ञानं जलाधिक्यज्ञानं च ।

जीवनक्षत्रकोष्ठे तु तत्र स्वर्णमुदीरयेत् ।
तुलोक्षकर्ककुम्भालिमीननक्राश्च राशयः ॥ १३ ॥
जलरूपास्तदुदये जलमस्तीति निर्दिशेत् ।
तत्रस्थौ चंद्रशुक्रौ चेदस्ति तत्र बहूदकम् ॥ १४ ॥

गुरुके नक्षत्रके कोठेमें स्वर्ण कहना । तुला, वृषभ, कर्क, कुंभ, वृश्चिक, मीन, मकर य राशि जलरूप हैं इनके उदयमें जल है ऐसा कहना उस स्थानमें चंद्र शुक्र होवें तो वहां उदक बहुत है ॥ १३ ॥ १४ ॥

जलाल्पबहुताकारको योगः ।

बुधजीवोदये तत्र किंचिज्जलमुदीरयेत ।
एतान्राशीन्प्रपश्यन्ति यदि शन्यर्कभूमिजाः ।
जलं न विद्यते तत्र फणिदृष्टे बहूदकम् ॥ १५ ॥

बुध गुरु लग्नमें होवें तो थोडा जल कहना । इनको यदि शनि सूर्य मंगल देखें तो जल नहीं यह कहना, यदि उनको राहु देखे तो जल बहुत कहना ॥ १५ ॥

उर्ध्वाधोगतजलज्ञानम् ।

अधस्तादुदयारूढात्तच्छत्रोपरिसंस्थिते ॥ १६ ॥

जलग्रहयुते दृष्टे अधश्चेत्स्यादधो जलम् ।
ऊर्ध्वदृष्टो ग्रहो राशावूर्ध्वमेवोदकं भवेत् ॥ १७ ॥

नीचे उदय आरूढ और उनके छत्रपर स्थित होवे वा जलग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट वा नीचे होवे तो नीचे जल कहे। राशिपर जो ग्रह है वह ऊर्ध्वदृष्ट होवे तो ऊपर जल है ॥ १६ ॥ १७ ॥

ऊर्ध्वाधः स्थलयोः पापास्तिष्ठन्ति यदि नोदकम् ।
अधो जलं चतुःस्थानादस्तान्नद्यागमो भवेत् ॥ १८ ॥

ऊपर नीचे पापग्रह होवें तो जल नहीं । चार स्थानोंसे नीचे जल, अस्तसे नद्यागम याने नदीकी झिरन आवेगी ॥ १८ ॥

नवमे दशमे वर्षे केचिदाहुर्मनीषिणः ।
जलाजलग्रहवशाज्जलनिर्णयमीरयेत् ॥ १९ ॥

कोई ऋषियोंके मतसे नवम वा दशम वर्षमें नदीका आगमन हो । जलग्रह तथा अजलग्रहोंसे जलका निर्णय कहे ॥ १९ ॥

शुभोदकज्ञानम् ।

केन्द्रेषु तिष्ठतश्चंद्रजीवौ यदि शुभोदकम् ।
चंद्रशुक्रयुते केन्द्रे पर्वतेऽपि जलं वदेत् ॥ २० ॥

केंद्रमें चंद्र गुरु होवें तो अच्छा जल और केंद्रमें चंद्रशुक्र होवें तो पर्वतमें भी जल है ऐसा कहना ॥ २० ॥

क्षारजलादियोगः ।

चंद्रसौम्ययुते केन्द्रे जीर्णं च लवणोदकम् ।
आरूढात्केन्द्रगे चन्द्रे परिध्याद्यभिवीक्षिते ॥
अधो जलं ततो गाधं पूर्वोक्तग्रहरश्मिभिः ॥ २१ ॥

शुक्रेण सौम्यो युक्तश्चेत्कषायं जलमादिशेत् ॥२२॥
कन्यामिथुनभे सौम्ये जलं स्यादन्तरालकम् ।
बृहस्पतौ राहुयुते पाषाणो जायतेऽन्तरा ॥ २३ ॥
शुक्रचन्द्रयुते राहावगाधं जलमेधते ।
भास्करः क्षारसलिलं परिवेषे धनुर्यदि ॥
राहुणा संयुते मंदे जलं स्यादंतरालकम् ॥ २४ ॥

केंद्रमें चंद्र बुध होवे तो थोडा और खारा जल कहना । आरूढसे केंद्रमें चंद्र होवे और परिधिसे दृष्ट होवे तो नीचे जल कहै। कितने नीचे यह पहले कहेहुए ग्रहोंके रश्मिसे जानो शुक्रसे बुध युक्त होवे तो वह जल कसैला जल निकलेगा । कन्या तथा मिथुनका बुध होवे तो बीचमें जल निकलेगा । गुरु राहुसे युक्त होवे तो बीचमें पत्थर निकलेगा। शुक्र चंद्रसे युक्त राहु होवे तो अगाध जल प्राप्त होवे है । सूर्य होवे और परिवेष धनु होवे तो खारा जल जानना, राहुसे युक्त शनि होवे तो बीचमें ही जल होता है ॥ २१–२४ ॥

अर्कादि ग्रहयोगेन ऊषरकण्टकादियुतभूमिज्ञानम् ।

अर्कस्योषरभूमिस्यात्पापाद्वा कंटकस्थली ।
नारिकेलादिपुंनागपूगयुक्तक्ष्मा गुरोः ।
शुक्रस्य कदली वल्ली बुधस्य पनसो भवेत् ॥ २५ ॥

अर्कसे ऊषर भूमिसे और पापग्रहोंके कंटक स्थलसे जानो

नारियल आदि चम्पा वे सुपारीनके वृक्षोंसे युक्त भूमि गुरुकी है। शुक्रके केलाके वृक्ष बेलरीयें भी, बुधके कटहर है ॥ २५ ॥

वल्मीकं राहुकेत्वोश्च इति ज्ञात्वा वदेद्बुधः ।
शनिराहूदये काष्ठोरगवल्मीकदर्शनम् ॥ २६ ॥

राहु केतुके होनेसे वल्मीक याने बांबी । शनि और राहुका उदय होवे तो लकडी सांप बंबीका दर्शन होवे ॥ २६ ॥

स्वक्षेत्रादिज्ञानम् ।

स्वामिदृष्टियुतो वापि स्वक्षेत्रमिति कीर्तयेत् ।
अन्यैर्युक्तेऽथवा दृष्टे परकीयस्थलं वदेत् ॥ २७ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे कूपकाण्डम् ॥ २५ ॥

स्वामीसे दृष्ट अथवा युक्त होवे तो स्वक्षेत्र कहना और ग्रहोंसे युक्त होवे तो परकीय स्थल कहना ॥२७॥ कूपकाण्डम् ॥२५॥

सेनाकाण्डम् २६.

सेनाया आगमनज्ञानम् ।

सैन्यस्यागमनं वक्ष्ये शत्रोरागमनं तथा ।
चरोदये चरारूढे पापाः पंचमगा यदि ।
सेनागमनमस्तीति कथयेच्छास्त्रवित्तमः ॥ १ ॥

फौजका आगमन तथा शत्रुका आगमन कहते हैं—लग्न चर और आरूढ चर होवे और पापग्रह पंचम होवें तो सेनाका आगमन है ऐसे शास्त्रजाननेवाले कहते हैं ॥ १ ॥

---

१ यह रायचंपा कोंकण देशमें होता है इसको पुन्नाग कहते हैं इसीकी नाग-केशर बनती है फूल इसका लाल होता है यहांके चम्पेका फूल पीला होता है यह ही भेद है ।

अथ धातुचिंताज्ञानार्थं स्थानादिनिर्णयमाह ।

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नष्टसूचका	धन	जल	वन	नगर	नगर	जल	वन	०	०
स्थानां-तराणि	नभः	जल	भूमि	निष्कंटरंध्र	नभः	युद्धभूमि	निष्कंट रंध्र	०	०
बलयोगात्का लावधि	मास ६	एक मुहूर्त	दिन १	मास २	मास १	पक्ष १	वर्ष १	०	०
स्वगृहे अव धिदिनानि	दिन ६	दिन १	दिन १	दिन २	दिन १	दिन १	दिन १	०	०
मित्रगृहे मासादि	मास ६	मास १	मास १	मास २	मास १	मास १	मास १	०	०
शत्रुनीच-स्थवर्षादि	वर्ष ६	वर्ष १	वर्ष १	वर्ष २	वर्ष १	वर्ष १	वर्ष १	०	०

❀ यह चक्र २५ पृष्ठ ८५ श्लोकका है सो देख लेना ।

चतुष्पादुदये जाते युग्मराश्युदये तथा ।
लग्नस्याधिपतौ वक्रे सेना पथि निवर्तते ।
शत्रोरागमनं नास्ति चतुर्थे पापसंयुते ॥ २ ॥
उदयारूढच्छत्रेषु केन्द्रेषु भुजगो यदि ।
दूरस्थिता च नायाति सेना पथि निवर्तते ॥ ३ ॥

चतुष्पादकी लग्न होवे अथवा द्विपादकी लग्न होवे लग्नका अधिपति वक्र होवे तो सेना रास्तेमेंसे पीछे लौट जायगी। चतुर्थमें पापग्रह होवें तो शत्रु नहीं आवेगा । उदय आरूढ छत्रमें केंद्रमें राहु होवे तो सेना दूर है और आवे नहीं रास्तेसे लौटेगी ॥ २ ॥ ३ ॥

आरूढह्युदिताः कुंभकुलीरालिझषा यदि ।
चतुर्थकेन्द्रे बलिनो यदि सेना निवर्तते ॥ ४ ॥

आरूढ, लग्न, कुंभ, वृश्चिक, कर्क, मीन हैं और चौथे केंद्रमें बलवान् ग्रह हैं तो सेना पीछे लौटेगी ॥ ४ ॥

चरोदये चरारूढे भौमार्कगुरवस्तदा ।
तिष्ठंति यदि पश्यन्ति सेना याति महत्तरा ॥ ५ ॥

लग्न चर, आरूढ चर होवे और उन स्थानोंमें मंगल सूर्य गुरु होवें अथवा देखें तो कहना कि बडी फौज आवै है ॥५॥

स्थायियायिनोर्जयपराजयादियोगाः ।

आरूढे स्वामिमित्रोच्चग्रहयुक्तेऽथ वीक्षिते ।
स्थायिनो विजयं ब्रूयाद्यायिनो भंगमादिशेत् ॥ ६ ॥

आरूढमें स्वामि मित्र उच्चग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट हो तो

स्थायी (मकानके राजा) का जय और चढके आनेवालेकी हार जानो ॥ ६ ॥

एवं छत्रे विशेषोस्ति विपरीते जयो भवेत् ।
आरूढे बलसंयुक्ते स्थायी विजयमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

आरूढ बलवान् होवे तो स्थायीका जय होवे । जो छत्र बलवान् होवे तो यायीका जय होता है ॥ ७ ॥

यायी बलं समायाति च्छत्रे बलसमन्विते ।
आरूढे नीचरिपुभिर्ग्रहैर्युक्तेऽथ वीक्षिते ॥ ८ ॥
स्थायी परगृहीतः स्याच्छत्रेष्वेवं विपर्ययः ।
शुभोदये तु पूर्वाह्णे यायिनो विजयो भवेत् ॥ ९ ॥

विपरीत याने कहेसे उलटा होवे तो उलटा फल है । आरूढ नीचग्रह शत्रुग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तो स्थायीको शत्रु पकडके लेजावे । छत्र नीचरिपुग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो यायीको शत्रु पकडेंगे । पूर्वाह्णमें शुभग्रह लग्नमें होवे तो यायीका जय होवे ॥

शुभोदये तु सायाह्ने स्थायी विजयमाप्नुयात् ।
छत्रारूढोदये वापि क्रूरांशे पापसंयुते ॥ १० ॥
तत्काले पृच्छतां सद्यः कलहो जायते महान् ।
पृष्ठोदये तदारूढे पापैर्युक्तेथ वीक्षिते ॥ ११ ॥
दशमे पापसंयुक्ते चतुष्पादुदयेऽपि वा ।
कलहो जायते शीघ्रं संधिः स्याच्छुभवीक्षिते ॥ १२ ॥

सायाह्नमें शुभग्रहका उदय होवे तो स्थायी जीते । छत्र आरूढ लग्न या क्रूरग्रहके अंशमें होवे अथवा पापग्रहोंसे युक्त

होवें तो उस समय प्रश्नकरनेवालोंकी बडी लडाई होती है। आरूढ पृष्ठोदय होवे वा पापग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट होवे। दशममें पापग्रह होवैं अथवा चतुष्पाद लग्न होवे तो उसी समय बडी लडाई होवे। यदि शुभग्रह देखें तो संधि याने लडाई बंद होके सुलह होवेगी ॥ १०-१२ ॥

उदयादिषु षट्केषु शुभा राशिषु चेत्स्थताः।
स्थायिनो विजयं ब्रूयादूर्ध्वे चेद्यायिनो जयः ॥ १३ ॥

लग्नसे छः राशियोंमें शुभग्रह होवेंतो स्थायीका जय होवे सप्तमसे बारहतक शुभग्रह होवे तो यायीका जय होवे है ॥ १३ ॥

पापग्रहयुते तद्वन्मिश्रे संधिः प्रजायते।
उभयत्र स्थिताः पापा बलवन्तः समो जयः ॥ १४ ॥
तुर्यादिराशिभिः षड्भिरागतस्य फलं वदेत्।
तदन्यराशिभिः षड्भिःस्थायिनः फलमादिशेत् १५॥

पापग्रह होवें तो विपरीत फल है। शुभ पाप दोनों होवें तो सुलह होवेगी। प्रथम छः स्थानोंमें पापी बलवान् होवें सप्तमसे बारहतक भी होवें तो दोनोंकी बराबर जय होवे। चतुर्थसे छः राशीतक यायीका बल कहै। बाकी राशीनसे स्थायीका फल कहना ॥ १४ ॥ १५ ॥

एवं ग्रहस्थितिवशात्पूर्ववत्कथयेद्बुधः।
ग्रहोदये विशेषोस्ति शन्यर्काङ्गारकोदये ॥ १६ ॥
आगतस्य जयं ब्रूयात्स्थायिनो भंगमादिशेत्।
बुधशुक्रोदये यायी जयश्चंद्रगुरूदये ॥ १७ ॥

इसी प्रकार ग्रहोंके स्थितिसे पूर्ववत् फल कहना । शनि मंगल सूर्य ये लग्नमें होवें तो यायीकी जय होवे स्थायीकी हार होवे। शुभग्रहोंका उदय होवे तो यायीकी जय होवे ॥ १६ ॥ १७ ॥

पंचषड्लाभरिः फेषु तृतीयकः स्थितो यदि ।
आगतः स्त्रीधनादीनि हृत्वा वस्तूनि गच्छति॥१८॥

पंचम छठा ग्यारवाँ बारवाँ तीसरा सूर्य होवे तो यायी शत्रु स्त्री धन आदिको लेकर जायगा ॥ १८ ॥

द्वितीये दशमे सौरिर्यदि सेनासमागमः ।
यदि शुक्रः स्थितः षष्ठे योज्यं संधिर्भविष्यति॥१९॥

दूसरा दशम शनि होवे और छठा शुक्र होवे ऐसे समयपर सेना आवे तो सुलह होती है ॥ १९॥

चतुर्थे पंचमे शुक्रो यदि तिष्ठति तत्क्षणात् ।
स्त्रीधनादीनि वस्तूनि यायी दत्त्वा प्रयास्यति॥२०॥

चतुर्थ पंचम शुक्र होवे तो यायी अपनी स्त्री धनादि वस्तु देके जाता है ॥ २० ॥

सप्तमे शुक्रसंयुक्ते स्थायी भवति दुर्बलः ।
नवाष्टसप्तसहजादन्यत्र हि कुजो यदि ॥ २१ ॥
स्थायी विजयमाप्नोति परसेनासमागमे ।
चतुर्थे पंचमे चंद्रे स्थायी च विजयी भवेत् ॥ २२ ॥

सप्तम शुक्र होवे तो स्थायी दुर्बल होता है । नवम अष्टम सप्तम तृतीय इनस्थानोंसे अन्यस्थानोंमें मंगल होवे तो स्थायीको जय मिलै है । चतुर्थ पंचम चंद्र होवे तो स्थायीको जय मिले २१॥२२

तृतीये पंचमे भानौ यदि सेनासमागमः।
मित्रस्थानेस्थितेसंधिर्नोचेत्स्थायी जयी भवेत् ॥२३॥

तीसरे पांचवें सूर्य होवे और वो सूर्य मित्रके घरमें होवे तो सुलह होती है। ऐसा न होवे तो स्थायीकी जय होती है॥ २३॥

चतुर्थे वित्तदः स्थायी षष्ठे चेत्स्थायिनो मृतिः।
उदयात्सहजे सौम्ये द्वितीये यदि भास्करः॥ २४ ॥

चतुर्थ सूर्य होवे तो स्थायी शत्रुको धन देवेगा। छठे सूर्य होवे तो स्थायी मरेगा ॥ २४ ॥

स्थायिनो विजयं ब्रूयाद्व्यत्यस्ते यायिनो जयः।
ससौम्ये भास्करे याते समयुद्धं वदेद्बुधः॥ २५ ॥
लग्नात्पंचमगे सौम्ये यायी भवति चार्थदः।
द्वित्रिस्थे सोमजे यायी विजयी भवति ध्रुवम्॥ २६॥

लग्नसे तृतीय स्थानमें शुभ होवे दूसरा सूर्य होवे तो स्थायीका जय कहै। विपरीत होवे तो यायीका जय कहै बुध और सूर्य दोनों होवें तो बराबरीका युद्ध कहे। लग्नसे पंचम बुध होवे तो यायीसे स्थायीको कुछ फायदा होवे। दूसरा तीसरा बुध होवे तो यायीको जय प्राप्त होवे ॥ २५ ॥ २६ ॥

एकादशे व्यये सौम्ये स्थायी विजयमेष्यति।
एकादशस्थेऽर्के यायी हतस्त्रीबांधवो भवेत् ॥ २७ ॥

दशमें ग्यारहवें बारहवें सौम्य होवें तो स्थायीका जय होवे। एकादश सूर्य होवे तो यायीके स्त्री भाई वगैरह सब मरेंगे ॥२७॥

शत्रुनीचस्थिते सूर्ये स्थायिनो भङ्गमादिशेत्।
उदयात्पंचमभ्रातृव्ययेषु धिषणो यदि॥ २८ ॥

यायी भङ्गं समायाति द्वितीये संधिरुच्यते ।
दशमैकादशे जीवो यदि याय्यर्थदो भवेत् ॥ २९ ॥

शत्रुके घरका अथवा नीचका सूर्य होवे तो स्थायी हारेगा, लग्नसे पंचम तृतीय बारहवाँ गुरु होवे तो यायी हारेगा। दूसरा गुरु होवे तो दोनोंकी आपसमें सुलह होवेगी। दशम एकादश गुरु होवे तो यायी स्थायीको कुछ फायदा करेगा॥२८॥२९॥

चन्द्रादित्यौ समस्थाने संधिः स्यात्तिष्ठतो यदि ।
विपरीते तु युद्धं स्याद्भानोर्द्वादशगे विधौ ॥ ३० ॥
तत्र युद्धं न भवति शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ।
चरराशिस्थिते चन्द्रे चरराश्युदयेपि च ॥ ३१ ॥
शत्रुरागम्य सन्धाता विपरीते विपर्ययः ।
युग्मराशिस्थिते चन्द्रे स्थिरराश्युदये तथा ॥ ३२ ॥
अर्धराज्यं समागत्य सेनानीर्विनिवर्तते ।
सिंहादिराशिषट्कं तु स्थायिनो भंगदायकः ॥३३॥

चंद्र और सूर्य सम स्थानमें होवें तो दोनोंकी सुलह होवे। विपरीत होवें तो युद्ध होवे। जो सूर्यसे बारहवाँ चंद्र होवे तो युद्ध नहीं होगा यह ज्ञानप्रदीपका मत है। चरलग्न और चरराशिमें चंद्र होवे तो शत्रु स्वयं आकर सुलह करेगा। विपरीतका फल विपरीत है द्विस्वभावका चंद्र होय लग्न स्थिरराशि होवे तो आधे राज्यमें आकर फौज वखसी लौटके पीछे जायगी सिंहसे छः राशि स्थायीको भंग करनेवाली हैं॥ ३०–३३॥

कर्कादिव्युत्क्रमात्षट्के यायिनश्चन्द्रसंस्थितः ।
स्थायी यायी क्रमेणैव ब्रूयाद्ग्रहवशात्फलम् ॥ ३४ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे सेनाकाण्डम् ॥ २६ ॥

कुंभसे छः राशीनमें चंद्र होवे तो यायीका भंग करनेवाला है। ऐसे ग्रहोंसे विचारके फल कहना ॥ इति स्थायि प्रकरणम् ॥ २६ ॥

यात्राकाण्डम् २७.

मित्रग्रहदृष्टमित्रक्षेत्रवशान्मित्रागमनादिज्ञानम् ।

यात्राकाण्डं प्रवक्ष्यामि सर्वेषां हितलिप्सया ।
गमनागमनं चैव लाभालाभं शुभाशुभम् ॥ १ ॥
सर्वं विचार्य कथयेत्पृच्छतां शास्त्रवित्तमः ।
मित्रक्षेत्राणि पश्यंति यदि मित्रग्रहास्तदा ॥ २ ॥
मित्रस्यागमनं ब्रूयान्नीचं नीचग्रहा यदि ।
नीचस्यागमनं ब्रूयादुच्चा उच्चग्रहा यदि ।
स्वाधिकाराय गमनं पुंराशिः पुंग्रहा यदि ॥ ३ ॥

सबके कल्याणके अर्थ यात्राकांड कहते हैं—गमन आगमन लाभ अलाभ शुभ अशुभ प्रश्न करनेवालोंका ज्योतिषी सब विचारके कहे। मित्रग्रह मित्रक्षेत्रको देखें तो मित्रका आगमन कहे। नीचेग्रह नीचको देखे तो नीच आवेगा। उच्चग्रह उच्चक्षेत्रको देखे तो अपने अधिकार याने अपने कामपर गमन कहना १—३

स्त्रीपुंग्रहादिवशेन गमनागमनज्ञानम् ।

पुरुषायेतिगमनं स्त्रीराशिः स्त्रीग्रहा यदि ।
स्त्रियै गमनमित्युक्तमन्येष्वेवं विचारयेत् ॥ ४ ॥

पुरुषराशि पुरुषग्रह होवें तो पुरुषके पास गमन कहे स्त्रीराशि स्त्रीग्रह होवें तो स्त्रीके पास गमन कहे और अन्य विषयमेंभी ऐसेही विचार लेना ॥ ४ ॥

चरराश्युदयारूढे तत्तद्ग्रहविलोकिते ।
तत्तदाशासु गच्छंति प्रष्टारः शास्त्रनिर्णयः ।
स्थिरराश्युदयारूढे शन्यर्कांगारकाः स्थिताः ॥ ५ ॥
अथवा दशमस्थाश्चेद्गमनागमने न च ।
शुक्रसौम्येन्दुजीवाश्च तिष्ठंति चरराशिषु ॥ ६ ॥
विद्यते स्वेष्टसिद्ध्यर्थं गमनागमनं तदा ।
स्थितिप्रश्ने स्थितिं ब्रूयान्मस्तकोदयराशिषु ।
पृष्ठोदयेषु गमनं क्रमेण शुभदं वदेत् ॥ ७ ॥

चरराशि लग्न आरूढ होवे और जो जो ग्रह देखे तो प्रश्न करनेवाले उन्हीं ग्रहोंकी दिशाको जाते हैं ऐसा शास्त्रका निर्णय है। स्थिरराशि लग्न आरूढ होवे उसमें शनि सूर्य मंगल स्थित होवें अथवा दशममें शनि सूर्य मंगल होवें तो गमन याने जाना आगमन याने आना नहीं होवे। शुक्र बुध चंद्र गुरु ये ग्रह चरराशिमें होवें तो जाना और आना होवे अपना काम भी सिद्ध होवे स्थितिके प्रश्नमें मस्तकोदय याने शीर्षोदय राशीनमें शुक्र बुध चंद्र गुरु होवे तो ठहरना कहै अथवा स्थिति प्रश्नमें लग्न आरूढ शीर्षोदय होवें तो स्थिति कहै वैसेही पृष्ठोदयमें गमनशुभदायक है५-७॥

दूतपत्रिकाद्यागमनविचारः ।

द्वितीये च तृतीये च तिष्ठंति यदि पुंग्रहाः ।
त्रिदिनात्पत्रिकाऽऽयाति दूतो वा प्रेषितस्य च ॥ ८ ॥

लग्नार्थसहजव्योमलाभेष्विन्दुज्ञभार्गवाः ।
तिष्ठंति यदि तत्काले त्वावृत्तिः प्रेषितस्य च ॥ ९ ॥
चतुर्थे द्वादशे वापि तिष्ठतश्चेच्छुभग्रहाः ।
पत्रिका प्रेषितस्याशु समायाति न संशयः ॥ १० ॥

दूसरे तीसरे पुरुषग्रह होवें तो तीन दिनमें चिट्ठी आवे अथवा भेजा हुवा आदमी आवेगा । लग्न दूसरे तीसरे दशम एकादश इन स्थानोंमें चंद्र बुध शुक्र होवे तो कहना कि, भेजा हुवा आदमी अभी आवेगा चौथे बारहमें जो शुभग्रह होवे तो भेजे हुए दूतकी चिट्ठी वा खबर आवेगी ॥ ८–१० ॥

देशान्तरगतस्य व्याधिज्ञानम् ।

षष्ठे वा पंचमे वापि यदि पापग्रहाः स्थिताः ।
प्रेषितो व्याधिपीडार्तःसमायाति न संशयः ॥ ११ ॥

पंचम छठे जो पापग्रह होवे तो भेजा हुआ आदमी बीमार होके आवेगा ॥ ११ ॥

प्रस्थितस्य परावर्तनज्ञानम् ।

चापोक्षच्छागसिंहेषु यदि तिष्ठति चन्द्रमाः ।
चिंतितः पुनरायाति चतुर्थे चेत्तदागमः । १२ ॥

धन वृषभ मेष सिंहमें चंद्रमा होवे तो चिंतन करा हुआ फिर आवेगा चौथा चंद्रमा होवे तो आवेगा ॥ १२ ॥

गमनागमनादिज्ञानम् ।

स्वस्वर्क्षेषु च तिष्ठन्ति शुक्रजीवेन्दुसोमजाः ।
प्रयाणागमने ब्रूयात्तत्तदाशासु सर्वदा ॥
ग्रहाःस्वक्षेत्रमायान्ति यावत्तत्र फलं वदेत् ॥ १३ ॥

शुक्र गुरु चंद्र बुध ये अपने अपने राशीपर होवें तो उन उन ग्रहोंके दिशाको जाना और उस दिशासे आना होता है। वे ग्रह जितने दिनोंमें अपने क्षेत्रमें जावें उतने दिनोंसे फल कहना १३

शुभाशुभग्रहवशात्सौख्यपीडाज्ञानम्।

शुभग्रहवशात्सौख्यं पीडां पापग्रहैर्वदेत् ॥ १४ ॥

शुभग्रहोंसे सुख और पापग्रहोंसे पीडा कहे ॥ १४ ॥

मार्गे मरणबन्धनज्ञानम्।

सप्तमाष्टमयोः पापास्तिष्ठंति च यदि ग्रहाः।
प्रेषितो हृतसर्वस्वस्तत्रैवमरणं व्रजेत् ॥
षष्ठे पापयुते मार्गे स्वामिबंधो[1] भविष्यति ॥ १५ ॥

सप्तममें और अष्टममें पापग्रह होवें तो पहुँचायाहुआ दूत लुटजायगा और उसीजगह मरणको प्राप्त होगा। छठेमें पाप होवे तो रस्तामें मालिक कैद होवे ॥ १५ ॥

चिरागमनज्ञानम्।

जलराशौ स्थिते पापे चिरेणायाति चिंतितः।
बलाबलानुरूपेण शुभाशुभनिरूपणम् ॥ १६ ॥
इति ज्ञानप्रदीपे यात्राकाण्डम् ॥ २७ ॥

जलराशिमें पापग्रह होवे तो अपना विचारा हुवा आदमी देरीसे आवे बलवान् निर्बलके विचारसे शुभ अशुभ कहे ॥ १६ ॥

इति यात्राकाण्डम् ॥ २७ ॥

अथार्घकाण्डम् २८.

सामान्यतो वृष्टिविचारः।

जलराशौ तु लग्नेवा जलग्रहनिरीक्षिते।
कथयेद्वृष्टिरस्तीति विपरीते न वर्षति ॥ १ ॥

---

१ इसका पाठांतर-"गामीबन्धो भविष्यति" अर्थात् जानेवाला कैद होवे।

जलराशि लग्नमें होवे और जलग्रह देखे तो पानी अच्छा बरसे। विपरीत होवे तो नहीं बरसेगा ॥ १ ॥

उत्तमवृष्टिज्ञानम् ।

जलराशिषु शुक्रेन्दू तिष्ठतो वृष्टिरुत्तमा ।
एतौ स्वक्षेत्रमुच्चं वा पश्यतो यदि केन्द्रकम् ॥ २ ॥
त्रिचतुर्दिवसानंतर्महावृष्टिर्भविष्यति ।
लग्नाच्चतुर्थे शुक्रः स्यात्तद्दिने वृष्टिरुत्तमा ॥ ३ ॥

जलराशिनमें शुक्र और चन्द्र होवे तो उत्तम बरसा जानो। ये दोनों स्वक्षेत्रको उच्चस्थानको देखें अथवा केंद्रको देखें तो तीन चार दिनोंमें बहुत पानी बरसेगा। लग्नसे चतुर्थमें शुक्र होवे उस रोज पानी अच्छा बरसे ॥ २—३ ॥

अतिवृष्टियोगः ।

जलराशिषु तिष्ठन्ति शुक्रजीवसुधाकराः ।
आरूढोदयराशींश्चेत्पश्यंत्यधिकवृष्टयः ॥ ४ ॥

जलराशिनमें चंद्र गुरु शुक्र होवें और लग्नके आरूढको देखते हों तो वृष्टि ज्यादा कहना ॥ ४ ॥

उत्तम–अतिवृष्ट्यादियोगः ।

लग्नाच्चतुर्थे शुक्रः स्यात्तद्दिने वृष्टिरुत्तमा ।
छत्रे पृष्ठोदये जाते पृष्ठोदयग्रहेक्षिते ॥ ५ ॥
तत्काले परिवेषादौ दृष्टे वृष्टिर्महत्तरा ।
केन्द्रेषु मंदभौमज्ञराहवो यदि संस्थिताः ॥ ६ ॥
वृष्टिर्नास्तीति कथयेदथवा चंडमारुतः ।
पापःसौम्यविमिश्राश्चेदल्पवृष्टिर्भविष्यति ॥ ७ ॥

लग्नसे चतुर्थ शुक्र होवे उस दिन उत्तम वृष्टि होती है । छत्र पृष्ठोदय होवे तथा पृष्ठोदय ग्रहसे दृष्ट होवे उस समय उसको परिवेषादि देखे तो बडी वृष्टि होवे है। केंद्रमें शनि राहु मंगल बुध होवें तो पानी नहीं बरसेगा और बहुत हवा चलेगी । पाप-ग्रह शुभग्रह मिले हुए होवें तो थोडी बरसा होवे ॥ ५–७ ॥

अवर्षणादिघोरवृष्टिज्ञानम् ।

चापस्थौ मंदराहू चेद्वृष्टिर्नास्तीति कीर्तयेत् ।
शुभः कार्मुकसंस्थश्चेद्घोरा वृष्टिर्भविष्यति ॥ ८ ॥

धनराशिमें शनि राहु होवें तो वृष्टि नहीं होवेगी । धनमें शुभग्रह होवे तो बहुत पानी बरसेगा ॥ ८ ॥

उच्चनीचग्रहवशादर्घवृद्धिक्षयादिज्ञानम् ।

उच्चेन युक्ते दृष्टे वा त्वर्घवृद्धिर्भविष्यति ।
नीचेन युक्ते दृष्टे वा स्यादर्घक्षय ईरितः ॥ ९ ॥

उच्चग्रहोंसे युक्त या दृष्ट होवे तो नाज सस्ता बिकेगा, नीच ग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो नाज महँगा बिकेगा । लग्न आरूढ छत्रयुक्त अथवा दृष्ट होवे यह तात्पर्य है ॥ ९ ॥

मित्रस्वामिवशात्साम्यमेवं ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ।
शुभग्रहयुते वृद्धिरशुभेऽर्घस्य नाशनम् ॥ १० ॥

इति ज्ञानप्रदीपे अर्घकाण्डम् ॥ २८ ॥

मित्रग्रहसे स्वामिग्रहसे युक्त दृष्ट होवे तो मध्यम जानो । शत्रु आदिसे अधम जानो। शुभग्रहोंसे युक्तदृष्ट होवे तो सस्ता बिकेगा, अशुभसे युक्त दृष्ट होवे तो महँगा बिकेगा ॥ इति अर्घकाण्डम् २८

अथ नौकाकाण्डम् २९.

नौकागमनादिविचारः ।

जलराशिषु लग्नेषु जीवशुक्रेन्दवो यदि ।
पोतस्यागमनं ब्रूयादशुभाश्चेन्नर्हीति च ॥ १ ॥

जलराशिवालीलग्नमें शुक्र गुरु चंद्र ये ग्रह होवें तो जहाज अवश्य आवेगा, अशुभग्रह होवें तो न आवेगा ॥ १ ॥

नौकाभङ्गादियोगः ।

आरूढच्छत्रलग्नेषु वीक्षितेष्वशुभग्रहैः ।
पोतभंगो भवेन्नीचशत्रुभिर्वा तथा वदेत् ॥ २ ॥

आरूढ छत्र लग्न इनको अशुभ तथा नीच शत्रु देखे तो जहाज टूटेगा ॥ २ ॥

नौकानिर्गमदर्शनादियोगः ।

अपृष्ठभोदये लग्ने दृष्टे देशात्तु नौर्व्रजेत् ।
तद्ग्रहे तु यदा दृष्टे तदा नौदर्शनं भवेत् ॥ ३ ॥
चरराशौ चरच्छत्रे द्रुतमायाति नौस्तदा ।
चतुर्थे पंचमे चंद्रो यदि नौः शीघ्रमेष्यति ॥ ४ ॥
द्वितीये वा तृतीये वा शुक्रश्चेन्नौसमागमः ।
अनेनैव क्रमेणैवं सर्वं वीक्ष्य वदेत्स्फुटम् ॥ ५ ॥

इति ज्ञानप्रदीपे नौकाकाण्डम् ॥ २९ ॥

शीर्षोदयराशि लग्नमें हो तो नाव देशसें रवाने हुई है । जिस वक्त लग्न स्वस्वामिसे दृष्ट हो उस वक्त नावका आगमन होवे वा जो ग्रह देखे उसकी जो समयावधि कह आये हैं उसी अवधिमें नाव आवे । चरराशि और चरछत्र होवे तो नाव ज़ल्दी आवे चौथा पांचवाँ चंद्र होवे तो जहाज ज़ल्दी आवे ।

दूसरा तीसरा शुक्र होवे तो जल्दी जहाज आवे । इसी क्रमसे सब देखके स्पष्टवर्णन करे ॥ ३–५॥ इति नौकाकांडम् ॥ २९ ॥

अथ सिद्धिकाण्डम् ३०.

कार्यसिद्धियोगः ।

लग्नस्थौ कार्यलग्नेशौ कार्यस्थौ लग्नकार्यपौ ।
कार्यस्य सिद्धिं कुरुतस्तदानीं निश्चयाद्वदेत् ॥ १ ॥
लग्नं लग्नेश्वरः पश्येत्कार्यं पश्येत्तु कार्यपः ।
कार्येश्वरो लग्नगतः प्रपश्येल्लग्नपं तथा ॥ २ ॥
वा विलग्नपतिः कार्यगृहस्थः कार्यपं तथा ।
पश्येल्लग्नाधिपः कार्यं लग्नं कार्यपतिस्तथा ॥ ३ ॥
कार्येशो लग्नपं पश्येल्लग्नेशः कार्यपं तथा ।
चंद्रदृष्टिर्यदा चेत्स्यात्कार्यसिद्धिस्तदा स्मृता ॥ ४ ॥
असत्स्वपि च योगेषु कार्येशोदयराश्यति ।
भविष्यति तदा काले कार्यं ज्ञानप्रदीपके ॥ ५ ॥
सम्यग्विचार्य प्रवदेन्न मिथ्या वाग्भविष्यति ।
प्रश्नादर्शमिदं शास्त्रं पृथिव्यां लोकभूषणम् ॥ ६ ॥

इति श्रीकेरलीये ज्ञानप्रदीपे सिद्धिकाण्डम् ॥ ३० ॥

लग्नमें कार्यका स्वामी तथा लग्नेश बैठे एको योगः । कार्य स्थानमें लग्नेश कार्येश बैठे द्वितीय योगः । लग्नको लग्नेश्वर देखे कार्यको कार्येश्वर देखे तृतीयो योगः । कार्येश्वर लग्नमें बैठकर लग्नेश्वरको देखे चतुर्थयोगः । लग्नेश्वर कार्यमें बैठकर कार्येशको देखे पंचमयोगः । लग्नाधिप कार्यको देखे और

कार्याधिप लग्नको देखे षष्ठो योगः । लग्नाधिप कार्येशको देखे और कार्येश लग्नेशको देखे सप्तमयोगः । इन सब योगोंमें चंद्रमाकी दृष्टि होवे तो निश्चय कार्यसिद्धि होवे । यदि कोई योग अशुभ भी आजावे परंतु कार्येश ग्रहका उदय हुआ हो अर्थात् अस्त न हो तो उसी कालमें कार्यकी सिद्धि होगी यह ज्ञानप्रदीपका मत है । विचार पूर्वक जो कोई भविष्य कहेगा उसकी वाणी कभी मिथ्या न होगी इस लोकमें यह शास्त्रप्रश्नादिक विषयमें दर्पणके तुल्य लोकभूषण है ॥ ५ ॥ ६ ॥

इति श्रीपवाँरवंशावतंस—महाराजशंभुसिंह—पुटालियाधीशकृते सुबोधिनीभाषाटीकासहिते ज्ञानप्रदीपे सिद्धिकाण्डम् ॥ ३० ॥

भाषाटीकाकर्त्तुर्नामान्वयकथनम् ।

श्रीमन्माधवसिंहभूपतिसुतः श्रीशंभुवर्मा नृपो
ज्योतिःशास्त्रकृतश्रमः सुनिपुणो विद्वत्सभाशोभितः ।
सद्धर्मेषु च तत्परः सुप्रथितः सर्वैर्गुणैर्नित्यशः
सत्कर्तान्तिकपूजको बहुधनैर्गोविप्रभक्तः सदा ॥ १ ॥
स एवं कृतवान् टीकां भाषां रम्यां सुबोधिनीम् ।
ज्ञानप्रदीपग्रंथस्य विदुषां प्रीतये मुदा ॥ २ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण—बंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
खेतवाडी—बंबई.